अवसीपीयमूरातिनै न माकसको च
विवेको॥ आके अरायादुरे फिरिआके
दुरेवहुरेंहहरातिनष्को॥ तासुरतो गु
रलोगनिकोउतलालचुलालनके लवि
वेको॥ लाजओकासके वामदुवीचपरी
योचलाचलिहालुहीयेको॥१९॥ दोहा॥
नरीलगनिकुलकीसकुचविकलनई
अकुलाइ॥ दुहू ओर ऐंची फिरै फिरकी
लौं दिनुजाइ॥ टीका॥ यह नाइका मध्या
लाजकामसमानहैपराकियाहहोइनई
लगनिकुलकीसकुचयापदतैसषीकहै
तिहै॥ कवित्त॥ नईलागीलगनिरसिक
मनमोहनसौउरअलि... नकीउमग
नरतिहै॥ कुलकीसम्ह... सा
ऐसीरीहातिअतिही॥ विकल... लन

धरतिहै॥ देखिवेकौं ररातिडरातिम
नहीं मनमै नरतिउसासपै प्रकासन
करतिहै॥ चाहकुलकानिवीचफि
रकौंतौंवालवधूइतउतश्रेचींगेचं
फिरिवौकरतिहै॥२०॥दोहा॥छल
छवीलेलालकौनवलनेहलहिना
रि॥चाहतिचूंमतिलाजउरपहरतिय
रतिउतारि॥टीका॥यहनाइकाकौत
नेहनाइकमैनौहोतुहैसुवाकेछलाकौं
पाइकैमिलेकौसुखमानतिहैलाजतै
मिलिवेकौप्रियसौनाहीकरतिनाइका
मध्यापरकियाहहोइतौहोइसखीसखी
सौंकहति [illegible] कवित॥नागरसौंनवने
हलगै [illegible] रिआलिनिहूसौंदुरा

कोचसनेह॥टीका॥यहमध्यानाइक
लाजकेमसमानहेसुसषीसषीसोकह
तिहै॥कवित॥माइकेमेमनचावनको
लषिप्यारीनिसंककैदेषिसकैना॥दे
षिवेकोतरसैहीपरादेषसाधलगी
चितचैनलहैना॥छूटे लाजह्नहुरैन
लालचलोकलीकउलघिकरैना॥
तासोस नेहसकोचनरेसकुलातम
रेजलजातसेनैना॥१८॥दोहा॥समर
समरसकोचवसविवसनइथकु
लाइ॥फिरिफिरिउअकतिफिरिदुरै
दुरिदुरिउअकतिजाइ ॥यहना
इकामध्याहेलाजकाम नकी
केवचनसषीसो॥कवित

हे म्रो सखी सखी सो कहति है ॥ कवित्त ॥ मा
हस कोयो तिय मानै न कोऊ है सुख्याली रही
स मयो म्हा मनाइ कै सो उरही रिस ही जो
नव वेस कै रस्यो दिग मो हनु आइ कै ॥ रो
कै सुन तोर यो रस कै कहतै न वनै जु रही
वि लव धूस पर सुनाइ रही
पीय के हाथ सो तल पराइ कै ॥ दोहा ॥ अ
पनी गरज निवाली य कहा निहोरो तो हि ॥
तू प्यारे मो जीय को मो जीय प्यारो मो हि ॥
रीको ॥ यह नाइका प्रौढा है ॥ पने जीय को
विव वा ने देह हति है के तेर विनु देवै
क्या निहोरो या है ॥ आप ने जीव के राषि वे
ते है कवित्त ॥ पने आप
जु पर
प्रन न कहत नां

वैसवाहि चहीयतु है॥ ऐसौ कछु वानि
आनि परी मेरप्रानन कौं तो हि देखे तौ लै
जौ लौं चैन लहीयतु है॥ के रीति उपउ
है तौ तिनि हीं के राषिवे कौं कै स प्रान
प्यारे कैं तन्यार रहीअतु है॥ ताते लाल वे
ली यतु आपनी पे गरज मु ताकौ कछू तुम
सौं निहारो कहीयतु है॥ ३९॥ दोहा॥ जात
सपान अप [illegible] इ वैठ गकाहि ठौर [illegible] कोल [illegible] चठ
नलाल कलीथ लैल चो हनन॥ टीका॥ परना
रका प्रोढ हस्वी सिख्या दुति तकवनेत्र दीयक
ल [illegible] वातन॥ सुन हकाम्य धि [illegible]
वनस्थी सो॥ [illegible] ति॥ का [illegible]
इके [illegible] तु का न निजर कवै
विसरावे सवे॥ ४॥ मोहन [illegible]
सपान अप॥ [illegible] वन [illegible] चो [illegible] दाल

नीकेमनेजप्रवीनकरोलयेग्रेतननेनकु
रंगसिंघाये ।५०। कुवित्त ।दोहा। चंगल
तंदेतग्रालीकसु निजहींपरोसीनाहा ल
सीतमासेकीदुगानेहासी ... निमा
हा ।दोहा। यहनाइकापरकियामुदिता
हेचाहीयतवातनइजानिप्रसनताकीहा
सीनइसषीकोवचनसठ ... ।कवित्त।
... परोसीकीचीकनोचा ... दारही
येपरीप्रेमकीफासी। सोपीयजतविदेस
लम्पोवितषीचेरहातुरसासउसासी।व
हीपरोसी विलोकेकहीयेहीयेपतितास
हमारी ... री। सोलसा... जनैनीकी
... आसतमासवहिंहासी ।५१।
... नाइका ।दोहा। सनषक्योवीतोवने

जुषोतई जुआरि॥ हरीहरी अरहरी अ
जोधरिधरहरजीयनारि॥ टीका॥ अनु
सयनानाइकासंकेतकीठौरजानिजातेस
च करतिहै सषीसमाधानुकरतिहै प्रतु
तर॥ कवित्त॥ बीननफूलसहेलीकेसग
चलीमृगलोचनिमोरद्न्नरीहै॥ कैतिथ
लीउजलीअवलो किउसासन्नरीआलिरै
उ चरीहै॥ बीतिगयौवनस्कचोसनो अर
जुषोजबारिनईसगरीहै॥ कैहहरोम
तिधीरधरौअवहोतोअराहरिप्यारीहरी
है॥ पर॥ सोह॥ फिरिफिरि बि बीदैतषै
रिफिरिलेतिउसास॥ सादी सेतजे
बीत्योचुनतिकपास॥ टीका काअ
नुसयनासहेटकीठौरवीतीजानि विलषति

हेसुखसोलखीसी ॥ होतिहे ॥ ॥ वाल
मकेसिरकोसिरोरुहज्यों सेतऐसे लेती
निचुनि सिरधुनि ॥ रमातिहे ॥ वीनतिहे
तूलऐपेसूलकेसलतहीऐमानिदुखमूल
फूल जिमिकुम्हिलातिहे ॥ वारवारकहति
व लीसोकेसीनलीरीतिकेलिकेविलास
कोथल ॥ ॥ तिहे ॥ विलाखिविल
खैकेउ ॥ सैलेइनवलवधूलखिवनुवी
यौमनकुतिऐकुलातिहे ॥ ५३ ॥
॥ नाहेहरिलोहीयराधु
नाहेहरिलोऐसेधंग ॥ उक्तहीकोराखिये
यौहे ॥ ॥ यहनाइकाअनकूल
सुनी मकोविचारजानीये ॥
षीयेजोहारिलोहीयराधरिसौरसवेऐगहातु

धारी॥ तौहरलौधारियैपुरधंगतौ प्रकहीस
गवटैसुषचारी॥ तातैयहैजियआचतिहैकरी
यैनहीताहीछैनोवहन्धारी॥अंगमैअंगमिलाइ
कैंउकतहीकरिराषीयैप्रानपिआरी॥५४॥ह
हिरी॥नाइकदोहा॥गैपिनुसगनिसिसरदकी
रमतरासिकरसरास॥लहाछैहजातगतिनुकौस
वनिलषेसवपास॥टीका॥यहनाकुदहिराहै
सुरासमैआपनीचतुराईकरिकैसबकोप्रसन्न
राष्यौउकके आधीनकाहूनैनजान्यौसषीकौव
चनसषीसौ॥कवित॥जमुनाकीपुलनिसुहाई
छविछाईजैसीसरदरयनिजौन्हविसदावेला
सहै॥अवलाअनेकनिमैकीनीनेरलालकछू
द्भुतचातुरीकीकलायौप्रकास[illegible]पिका॥नि
सागरसरंगकीउमंगरमैरसिक[illegible]रमतु
रसरासहै॥सबहीकीचाहगहिसबहीकेसगनी

सुसखीसखीसौं। हातिहै॥कवित॥वाल
सिरकौसिरोरुह ज्यौं सेत ऐसलेती
नि...मुरझातिहै॥
केसलतहीश्रीमानिंदुअनूल
फूलजिमिकुम्हिलातिहै॥
...लीरीतिकोलिकोवित
कीयत...तिहै॥ ...वल
ऊसासैलैइनवलवधूलछिवनवी
...मनप्रतिम्हुलातिहै॥५३॥
...नाहेहरिलौहीयराध
नाहेहरि ...अधिक ...हीकैराखिये
...यहनाइकाअनकूल
...केकोविचारजानीये
सु...
राखीयेजौहारिलौहीयराधिरिषौर

षारी॥ तोहरलैधारियेग्रग्रधगतेपुकहीग्र
गवदैसुषचारी॥ तातैयहेजियग्राचतिहेकरी
येनहीताहीद्वैनौचहन्मारी॥ग्रगमेंग्रगमिलाइ
केइकतहीकरिराषीयेप्रानपिग्रारी॥५४॥दू
हिरो॥नानकदोहा॥गोपिनुसगनिसिसरदकी
रमतरासिकरसरास॥लहाद्वैहग्रतिगतिनुकोस
वनिलषेसवपास॥टीका॥यहनाकुदद्दिरोहै
सुरासमेग्रापनीचतुराईकरिकैसवकोप्रसन
राष्योउककेग्राधीनकाहूनैननजान्योसषीकोव
चनसषीसो॥कवित॥जमुनाकीपुलिनिसुहाई
द्वविछाईजैसीसरदरयनिजोन्हविसदविल
सेहै॥ग्रवलनिकानिमेकीनीनदलालकछू
द्भुतचातुरीकीकलायेप्रकास ... पिका॥न
सगरसरगकीउमंगरमैरसिक ...
रसरासेहै॥

च्यौ सवही विलोक्यौ कौन्त सवही कि पा सेहे ।
॥५५॥ अथ लठनाइक दोहा ॥ वैरी गाउ गाउ परोउ
प रौहारहीयैन ॥ आन्यौ मोरि मतंग मनु मारि
पूरे रनु मैन ॥ टीका ॥ यह नाइकु सठु है वेनु गु
नहार को चिन्ह मीठी वात को है दुरावतु है नाइक
कौ व चनु नाइका सौं तौ नाइकु नाइका सौं कहे त
खंडिता ह्वै है ॥ कवित ॥ आजु मन मोहन मया
के मेरे आये लाल सो हतु सिंगार अति मेरे मन म
॥ आलस वलित हग घूमत ललित गति सिथ
॥ कसमप्राण प्या
पाटवह वेनु गुन हार अरगटजा
तु जान्यो है ॥
टठ जो मतंग मनु
ह पारि मोरि आन्यौ है ॥५६॥ दोहा
के री कोउ नु ... माह ॥ लाल तु
निमे द्वाह ॥ टीका ॥ यह प

तुतरनाइकुसठनाइकाखंडिता ॥कवित्त॥चारोंनि
काईलखैंजिनिकोरदलागतिओपरतोपलकीहै
वेदनकीछविमदकरीनिदरीद्युतिविद्रुमकेदल
कीहै॥ प्रानपियारीकहाइनिनैननुआंजुलनाई
इतीललकीहै॥ लोचनलालतुम्हारेलखैंतिनिको
इतआंनिप्रन्नाअलकीहै॥५७॥दोहा॥सकतनद
वतातिवचनमोरसकौरसखोइ॥खिनुखिनुऔरदेखौर
सौखरोसवारिनुहोइ॥टीका॥यहनाइकसठसाप
राधआयोहैसुनाइकाकोधसैकछूवनकहतिहैता
सोंमीठवचनकाहिनिवारनुकरतुहैनाइकाअधीरा
जानीयेनाइककोवचननाइकासों॥कवित्त॥काहे
तेंनौहतनैनीनइ॥तियकौनपैकीजतुकोपइतीं
तेरेतौतातेजुवोलसुहायतेमोरम... पैंगावत
कोरिकरो॥कीनिना॥मनिकोसेज
रसहीको॥जौंरीज्योंखीरअरोषर...
होतुसवादिलुनीकौ॥५८॥...

रितु नरी गास्यों घरी मिढा३ ॥ वाकों अतिअ
नचाहत है मुसिया हट्यो विनुना३ ॥ टीका ॥ यह नाइ
धृष्ट है नाइक कौ वचन सखी सों है याते पुनि
[illegible] सखवतु है [illegible] होय एक एक तें बहु कीप्र
तीतिमे ॥ कवित्त ॥ भारती फूलनि की [illegible] टिकासैं
तऊ मनु हारि अनेक जनावे ॥ गौरज्यौं देव कहे
अमी कत पावे ॥ चारति
वढावे ॥ सी
लसुनाऊ सुहागिल कौ रस हू हसि हौ रिस हू हसि
॥ पर ॥ दोहा ॥ लरिका लैवे के मिस नु लगर मो
ढिग आइ ॥ गयौ अचान क आंगुरी छाती छैलु छि
॥ टीका ॥ यह नाइक धृष्ट है नाइक की कृतव्य
है सो कहत है ॥ कवित्त ॥ गोरस के
[illegible] नगेलन [illegible] चवारी
[illegible] कहा कहे तैसी करी जसदा के लला

लगराई॥ मोढिंगआइहरेंकछूकीनीसनेहस
नीअतिकीचतुराई॥ छोहरेलेवेकेउठमआइ
अचानकआंगुरीछातीछुवाई॥६०॥पतिउपप
तिदोहा॥ कुंजनवनतेंजनवनकोचलीयेनं
दकिसोर॥ फूलतिकलीगुलाबकीचटकाहटच
हुओर॥टीका॥ यहनाइकासुकीयाहूहोइनाइका
कोवचननाइकसौं॥कबित्त॥मुकुलतकलीज
लजातकीकछूकनई नौरनुकीगुंजमंजुगुंजव
नसुनिधारीये॥ फूलतगुलावुकलिकानुकोसुगंध
पौनुचटकासह्मदुमोदुउरधारीये॥कलधुनिक
रतअनिंदखगवृंदनिभनंतछविलसतिविहारीये॥
विहारीये॥आगमुविनातकोविलोकियेविहारील
लसुंदरनिकुंजतजिसदनासिधारीये॥६१॥अथ
पनिदेस्नुनाइकादो॥समकके[illegible]रहीलइकेल
लहैलखिवहवालअनूप॥किते[illegible]रयोर
तेसलोंनेरूप॥टीका॥यहनाइकाकों[illegible]धीनाइ

कैसौंनिवेदनुकरतिहै

तैहै ॥कवित्त॥ जैसीजहांचाहीयेअति तैसी सहाव
नीविधिविधिहू पैअधिकके न्याइ वानिआई है ॥
सुघरसुहाइ कीपै वरनीवत छौजातिरतिहू नैतौ
कीतिलसमतानपाइहै ॥ बालकविद्धाइतामेंये
रअधिक [redacted] नाइ मामकितनीमि
ठाइहै ॥ सुंदरकन्हाइहौ तौनिरषिवकाउवह
रूपकौनिकाई मानौ देहहरिआइहै ॥ ६२ ॥ नाइ
काकौ रूपनिवेदनु नाइकासौं ॥ दोहा ॥ मोहिनरो
सोरीझिहै उआकिओ किइकवार ॥ रूपुरिझाव
नहार वह येनैना रिझवार ॥ टीका ॥ यह नाइकके
निवेदनु सषी नाइकासौं कहतिहै सषीकौ
॥कवित्त॥ सुदरजौ कहे
नंदनंद दुलारो है ॥ यामे कहा कह
कोयं यनियारो है ॥ नैकअरोष
कैसो किवलाइ सौमो हिन्नरोसौ तिहारो है ॥ रि

अनारहै तौदृगनीम हिंगवह रूप रिभावनवा
ईहै ॥९३ ॥मातनन्ति॥दोहा॥होंरीझील
घित्तषिरी मिहैछ्विहि छवीलैलाल॥सोनजु
हीसीहेतिदुति मिलतमालतीमाल॥टीका॥
यहनाइकाकेगातवननसषीनाइकसोंकहै
तिहै॥कवित्त॥नीकोलसैव्रषभानललीनव
जोबनजोतिजगीअगअंगहि॥ताहिविलोकि
लालामनमेंतोनोइरह्योमतिरीझितरगहि॥
छैलछवीलैलषैंछविरीझिकेकौनहियैंरसना
वउमगहि॥मालतीमालतनदुतिसौंमिलिसौ
वरगहि॥९४॥दोहा॥याअम
नारीकेप्रकाससौतरगहि
नसजगमगतिदीपसिखासीदेह॥ ॥वढायेंहूर
हिवडेउजारौग्रह॥टीका॥यह देहकी
छविसषीनाइकसोंकहतिहै॥

लोईग्रैसीदूसरीनकोइरहीदृगनिसमोभ्रमानो मौहनीलसतिहै । जटितजवाहरकेनूषनललि तअंगअंगनिमिलितजगजोतिसीजगतिहै । दी पकवैठौहनयेंदेहकौउजासुहेतुवैठौदीपप्रका सचकचौंधीसीलगतिहै । दीपतिकीदुतिजगि मगनमहिलजालरधुनिद्वाहिरकीओरउफ नतिहै ॥६५॥ ........ वाहिलखैलोइनलगेकों नजूवातिकीजोति । जाकेतनकोछाहटिग जौन्हछाहसीहोति ॥ ....... यहनाइकाकी हकोदीपतिसखीनाइकसौंनिवेदनुकरति है अरुजोनाइ ... सखीसोंकहैतौगुनकथनुव ........ गुजंदृ वैगागरीविलै कीवृज ... आगअंगरूपकीतरंगउमगं तिहै ... अपारवरनतनवनतकोंहूजो

जोवनजोतिरे ।।सुरंगकसूंभीकंचुकीदुरंगदे
दुतिहोत्ति ।।टी०।। यहनाइकाकीसोभाक्रै
सोभासषीनाइकसोंवरननुकरतिहैं ।।कवित्त
सुवरनाचेलीसीनवेलीकीललितछविजोव
नकीजोतिमिलिक्रैतिसरसातिहैं ।। चुहचु
हीचूनरीमैंगहगहीगातनकीगुराईनिदुरतिरंग
रसवरसात्तिहैं ।। रूपकीतरंगअंगअंगतेंउमं
गिसोभाहलतिचहुरंगलषिसौंतअरसातिहैं
कंचुकीकसूंभीप्यारीपहरैसुरंगतऊमिलिक्रै
गरंगसोंदुरंगदरसातिहैं ।।९।।दो०।।कहिल
हिकौनसकैदुरीसोनजाइमैंजाइ ।। तनकीस
जसुवासवनदतीजोंनवताइ ।।टी०।।यहनाइ
काकेतनकीदीपतिअरुसहजसुवासुतासस
षीसषीसोंकहतिहै ।।कवित्त ।।षेलतचारमि
हूचनीमें [illegible]रीतीयसोंनचमेलीमैंजाइकैंरं
ग [illegible] मिलिकेसुकहूंचिधिरचनहोति

लषाइकों। भौंरनकी अवलीचहुं ओरसु
गंधकेलाभरहीमडराइकों।कोलहलैं
उहिकुंजमेंवाहितेंदतीनअंगसुवासव
ताइकैं। ६८। दोहा।। देषीसोंनजुहीफिर
तसोंनजुहीसअंग।।दुतिलपटनुपटस
तहूंकरतवनोंटीरंग।। टीका।यहनाइका
कअंगकीगुराईसषीनाइकसोंनिवेद
नुकरतिहै।। कवित्त।। सहजसिंगारदुति
लसतिअपारछवि मनहूकेमनभाउअप
जेंअनंगकों।। अतिसुकुमारयातेंलचक
तुलांकुभारुसहिनसकतुविचिउरजउत्त
गकों।। रूपकीरसालतुमदेषीसोनवाल
लालकहाकहेंवानकचनकवाकेअंगकों
।।चारुतनसुषपटपहिर[illegible]नवाहितऊ
दुतिमिलिहोंतुकेसरी[illegible]।। ७९।।
दीठनपरतिसमानदुति[illegible]कनकु

सो गात॥ भूषन करकरकस लगत परस
पिछानें जात॥ टीका॥ यह नाइका के अंग
की दीपति नाइक सों कहत तिहें नाइक हू स
षी सों कहत तों संभवे॥ कवित्त॥ आनुलोल
कुंजवाल यक में विलोकी जाकी ललित ति
सुनाई लिषि लोचन सिहात हैं॥ सांजति
सिंगार रचि पचि कें प्रवीन आली तिनहू के
चित्त सब हरत हिरात हैं॥ करत विचार पें न
होत निरधार कछू तें सोंई कन कुके गात हैं
कों वरकर रकें वितान पहिचानी यन कर
परसे तें आभूषन जाने जात हैं॥ ७१॥ दोहा॥
करतु मलिन आछी छवि हिहरतु जु सहज
विकासु॥ अंगराग अंगन लग्यों त्यों आर
सी उसासु॥ टीका॥ यह नाइका के अंग के
सरिल गी ... कको इतनो है अंतरायन
सुहातु ... नयह जानि सषी नाइक सें
कहति है नाइकु नाइका सों कहें तों संभवे॥

कवित्त ॥ मैंनकीमोहनीसीलषिन्या
इहीमोहनरीझिरहरसपागें॥जोवन
रूपसुहागसनीलषिसोंतिनुकेउरदा
हनेंदागें॥केस[redacted]रिलागेतेंअंगलषा
तज्यों आरसीदीपेंउसासकेलागें॥
ऊजरींलागेंनऔरकछूनवनागरते
रीगुराईकेआगें॥७२॥दोहा॥पहिरत
भूषनकनकके कहिआवतुइहहेतु॥द
रपनकेंसमारचादहदिषांईदेत॥ टीका
यहसंषीनाइकाकेअंगकीगुराईकहै
तिहैंजोंभूषननुकेअंतरायनजानिना
इकहूनाइकासोंकहैंतोंवनतुहै॥कवि
हित॥कीतोंवातनहिनहीसोंकहिआव
तातेतोसेंकहतिछावी
तेरीसमितांकोंतनिरभै
अनुरागप्यागेंमह्योंअनु

तरौनतनुनामैंसौनेकैंहैंनैंनूकतनपहराति
उन्हैंअवहींतैंलागिकैं ॥ नीकेनीकेतनपनप
रफीके फीकेलागतहें मोरचारेहैंमानों
मुकरमैंलागिकें ॥ ७३ ॥ दो ॥ कंचनतनन
घनवरनवररह्योरंगमिलिरंग ॥ जानी
जातिसुवासुहीकेसरिलाईअंग ॥ टी ॥
यहनाइकाकेअंगकीगुराईदेषिसषीना
इकसौंकहतिहैं अथयालैंचलिवेकीउता
इनअंगकौंनिवारनकरातिहैं अंतराइतनुजा
निनाइकुनाइकासौंकहतुहैं ॥ क ॥ त ॥ जोक
छुतोतनुमैं तरुनीसुरतीनलहैरतिरूपनि
कोई ॥ तापरजोवनजोतिजगेंकविकोवरनैं
कविकोसरसाई ॥ रंगमैंरंगसमाइगयोंतव
... कंचनसेतनमेंघसिलाई ॥
... सुगंधनिकीनलहैंसरि

केसरवासुहीतेंलषिपाई॥ ७४॥ दोहा॥
केंकपूरमनिमैंरहीमिलितनुदुतिमुकता
लि॥ छिनछिनषरीचिजछनेरहतिछुइ॥
तिनुआलि॥ टीका॥ अंगदीपत्तिकीनिका
ईसषीनाइकसांकहत्तिहेंसषीतूसेंकेहेलो
होइ॥ कवित्त॥ कुंदनसेगातजलजातसे
नयनजाकीदीपतिजुन्हाईसीभवनमांरु
वेरही॥ कंचनकीचौकीपरवैठिवरवाल
मानेमेंकलसिंगारजोतिजगमगकेंरही॥
मोतिनकीमालसजिनीनेपहिराईसुनोत
नदुतिमिलितिकपूरकैंसीकेंरही॥ एकअ
लीचतुरजकेंसोचकिरहीएककरिवेकोनें
हंचेतिनूकोहाथलेरही॥ ७५॥ दोहा॥ सोर
तिधोतीसेतमेंकनकव[illegible]नवाल॥ सा
रदवारदवीजुरीभारद[illegible]ल॥ ७

॥ टीका ॥ यह नाइका को गुराई सषी नाइक सों कहति है ॥ कबित्त ॥ कंचन वरन तन चन कअनूप मानौ रूप को अवधि मन मथ कौ रसाल है ॥ एक धाती सेत मैं अनेक छवि देत वालमानौं हंस मंडली मैं चंपक कौ माल है ॥ सरद घटानु मध्य दामिनि विलसत्ति किधौं छीर सिंधु मांझ वडवानल की ज्वाल है ॥ सुरसरि सेत मैं सुधा निधि की कला किधौं संकर के अंक लसैं पारवती बाल है ॥ ७६ ॥ कबित्त दोहा ॥ कहा कुसुम कहा कौमुदी कितक आरसी जाति जाकी उजराई लषैं आषि ऊजरी होति ॥ टी॰ यह नाइका की उजराई सषी नाइक सौं कहति है नाइक हू कहै तौं संभवै ॥ कबित्त ॥ वालव नीवरवा ... सदई विधि नै सी यै सुंदर नाई ॥ फू ... न तूल न होति अतूल प्रभा

त्रगअंगनिछाई॥चैंनकीचाँदनीचा
हकितौअरुआरसीहूईतीजोतिनपा
ई॥न्याईहिंऊजरीहोतिहैंऔषिनिहा
ई॥न्याईहिंऊजरीहोतिहैंऔषिनिहा
रतवातनकीउजराई॥७७॥दोहा॥वर
नवासुसुकुमारतासबविधिरहीसमा
इ॥पषुरीलगीगुलावकीगाततनजानी
जाइ॥टीका॥यहनाइकाकीसहजसुगं
धअरुजोवनकीअरुनाईसुकुमारता
सषीनाइकसोंनिवेदनुकरतिहैंजोंना
इककोसेजकीपाषुरीजानिसषीनाइक
सोंकहैंतौलछितहोइ॥कवित्त॥वीन
तफूलभरउरफूलप्रभातसमैंसुबसे
जलैंलागी॥आयेंतहांमनमोहनप्यारें
प्रभालषिशिरहयोंअनु [illegible] ॥वेसोईरं
सुगंधहूवेसीहैं वसीयेंव [illegible] सप

नाइकसौंकहतिहै॥ कवित्त॥ कंचनकंज कुरंगकलानिधिकंचुकीभाईसुभाइह रीसी॥ तानवनागरकौनिसिद्योसरहैंहु तिनैंननमोंरु धरीसी॥ अंगनिअंगउमं गैंअछेह प्रभाकीतरंगसरंगषरीसी॥ पा तरीवाकीअगेठिऊछविपुंजनुलागति देहभरीसी॥ ५॥ दो॰॥ अंगअंगप्रति विंवपरिदरपनसेसवगात॥ दुहरेतिहर चौहरेभूषनजानेंजात॥ टीका॥ यहनाइका केअंगनकीउजराईसषीनाइकसौंकहैंस षीसौंनाइकुनाइकासौंकहैंसषीसौंकहैंसै सवभांतिसंभवतुहैं॥ जोनाइकासषीसौं कहैंतौरूपगरवनाईहोइ॥ कवित्त॥ वद नुविलोकिससिसमितालहैंनक्यौंहूंलोच ननिर[illegible] जातहलजातहैं॥ नागरिनवे

लीनषसिषलोनिकाईभरीवानिकुवि
चित्रलषिलोचनमिरातहैं॥कसप्रान
प्यारेंअतिउज्जलऽलसतवाकेमुकरसे
गातमहासोभासरसानहैं॥अंगप्रतिविं
वपरिके ऊहांनयकयकएकएकभूष
नअनेकज्ञानेजानहैं॥ ८२॥दोहा॥बाल
छवीलीतीयनुमेवैठीआपुछिपाइ॥अ
रगटहीपानूससीपरगटहोतिलषाइ॥
टीकायहनाइकाकेअंगकीदीपतिसर्षी
नाइकसोनिवदनुकरतिहैनाइकहूकहैं
तोसंभवें॥ कवित्त॥ लोनेंतननारीव
नवारीमेंनिहारीप्यारीषुभिरहीवाकीउ
जियारीमेरेमनमें॥कहैकविकमअैसी
ललितलुनाईलषैमेरजोनदामिनीदुरी
हेजाइघनमें॥छविसो [illegible] रनारि

नुकीसुकचतेंबैठी आ पु अगनिदुराइति
यगनमे ॥ अरुअरगटहोतिपरगांटदी
पकलोजातिजगमगिरही अलिनीभव
नमे ॥ ८३ ॥ दोहा ॥ मानहुबिधितनअ
छछबिस्वछराषिकेकाजडगपगपांछ
नकोकियभूषनपाईजाद ॥ यहनाइका
केतनकीछबिसषीनाइकसांकहतिहे
अरुसषीकोवचनसषीसोनाइकको
वचननाइकासाेकहतुहे ॥ कबित ॥ तु
हीतीन्यो लोककीलुनाईलुटिलाईदी
षेरूपकीनिकाईनस्तोललचायेहे
तेरदुतिआगेआलीकंचनकेगहनेये
फीकेलागेजैसेभगातनछबिछायेहे
डीठकेप... ...तेमें लेहोतअंगअैसी
उ... ...तविरंचनेंबनायेहें ॥ त

नकीनिकाईस्वरूराषिवेकेहेतुयेलोंग्र
गनिकोंमानोंपगपोंछनावनाएहोंच्ध
दोहा॥पत्राहींनिषिपाईयनिवाघरकेच
कुंपास॥नितप्रतिपून्योंईरहतिश्रानन
श्रापउजास॥ योंा॥यहनाइकाकेमुष
कोप्रकाससषीनाइकसोंनिवेदनुकर
तिहोनाइकहूंसषीसोकहैतोंसुमिरनजा
नीयें॥कवित्त॥येनमानश्राननकीश्रा
पकोउजासुरहे यहश्रासुपासुश्रतिचांद
नीविहारिकै॥तिथिनिरधारकरवेकोंकेते
सुघरगनकविवालवूरूपेऊरहतविचारि
कै॥पात्रापोतिदूषिनोंमुनिथिकोंवनावें
फिरिपून्योंहीकहतवहकोंमुदनि[illegible]
कवहूंकपहत्राद्वेकवहूंवदनप्रभाकहित
सकुचतसेकवातनिरध[illegible]॥[illegible]

लीनैंऊंसाहससहसलीनैंजलनहजार॥
लोंइनलोइनसिंधुतनपैरिनपावतपार
टीका॥यहनाइकाकेअंगकीसुंदरितादे
षिकैंनाइककेनैनअथकिनकैंरहतहैंसुना
इकुसषीसौंकहैंसषीनाइकसौंकहैंसषी
सषीसौंकहै॥कबित्त॥जातनकीछवि
कौंकविदेषतकेतकितौउपमानुबनाव
त॥तातनकीछविदेषवेकौंतवनैनलगें
नइतैंउतधावत॥साहसकोरिसयानघ
नैंबहुभांतिअनेकउपावबनावत॥सोभा
केसागरमांझपरेअपेहेरतकैंसहूपारनपा
वत॥२६॥दोहा॥सहजसेतुपचतोरिया
पहिरतअतिछविहोति॥जलचादरकेदी
पलौंजगमगतितनजोति॥टीका॥याना
इकाके [illegible] दीयतिसषीनाइकसौंकहै

नाइकुसषीसों कहै तौ पूर्वानुरागजानौ।
ऐसेंजौंनाइकासषीसों कहैतौरूपगरवता
हो १॥ कवित्त॥ कनकवरनतनकानके
विचित्रवालवालमकेउरवीजआनंदके
वतिहैं॥वाकेआगेंऔरनकींतनकीनि
काईलागैमनिकेनिकटधरैलागतिज्यौं
पोतिहैं॥जवपहरनिपचतोरीयाकीसा
रीतवतनकीथौंसहजजगमगतिजोति
हैं॥ऊधमप्रानप्यारछविछाजतविसाल
जलंचादरिकेदीपतिज्योंपरगटहोतिहैं॥
२७॥ स्वपनदरसना॥दोहा॥ देषौंजगनौं
वैसीयेंसोंकरलगीकपाट॥ किनवैंआ
वतिजातिभजिकोजानेंकिहिंवाट॥टीका
यहस्वपनदरसनुनाइकासषीसोंकहति
हैं॥कवित्त॥रंचकनीदपे... नवहौंदि



गन्ध्रोंनिरिकैंपगिकैं॥ हरिहसैंरसिकैंव
रसैंवनराइमहारिससौंपगकैं॥ जागें
तोऊँठपरेनकछुत्योंहीकपाटलैंगेरहि
कैं॥ यहजाननतिकोआवतुधौंकितहैं
पुनिजातुकवैंकितहैंभगिकैं॥ २२॥ दो
हा॥ सोवतसपनेंस्यामघनहिलिमिलिर
हतवियोग॥ तबहीटरिकितहूंगईनींदौं
नीदनजोग॥ टीका॥ यहस्वपनदरसनु
नाइकासषीसौंकहतिहैंनींदकीनिंदाक
रतिहैं॥ कवित्त॥ आलीविछोरभयौंतब
तैंछतियावहुभांतिवियोगनईरी॥ आ
जुललामनमोहनसौंसपनेमेंअचांनक
भेंटभईरी॥ मेंसुविथावहराइवेकोंहिलि
कैंहियसौंरसकेलिठईरी॥ नींदहूंनींदवि
लाइकै … तींकहुंभाजिगईसुगोईरी॥ २८

साछातनद रसन नाइकानाइ क कौ दोहा
लटकि लटकि लटकनु चलतु डटतु मुक
टकी छाँह ॥ चरक भरयौ नटमि लि गयौ
अटक भटक वट मौह ॥ टीका ॥ यह साछा
तनद रसनु जैसी छवि सौं दर्यौ है नाइकु तैसें
हीं नाइका सषी सों कहति है पूर्वानुराग ॥
कबित्त ॥ लटकि लटकि चलि निरषतु वा
रवार फेरि फेरि ग्रीवा छाँह मैं जु लमुकर की
ललित्त मोहै वनमाल टट की ॥ कैंगाई वि
पनमंग अटक भटत बहीते नैंन निमें सुभ
सा भामो हन बानट की ॥ भूली सुधि घर की
री लोक लाज सटकी री अटकी हिय में प
रानि पीर पटकी ॥ ८० ॥ साछातनद रसन
नाइक कौ नाइका कौ दोहा ॥ चुनरी स्याम
तारनभ मुष ससकी उ ... जे दुदचाव

लौं

तुनीद निरषिनिसासीनारि ।। टी

यहसात्तातदरसनुजैसेंनाइकादेषीहैं

तैसैंहीनाइकुसषीसोकहतुहै ।। कवित्त

उनंतपीनउरोजनुकोंकनुकीछविमारि

सुपावतुहैं ।। मुषुसोहनुसोमुजुन्हैंयाहि

सीदुतिदीपकौमोदुबढावतुहै ।।

कंचिकेस्याविवाजतिचूनरी

स्योमससनारककौंसुलषावतुहै ।। बरुजा

मिनीसीनवनागरिदेषतनींदज्यौंनैहदे

वावतुहै ।। ६१ ।। दोहा ज्यों गुनाइका कों

सनिकज्ञलचषरुषलगनुउपज्यौसुदि

नसनेह ।। क्यौंननृपतिह्वैभोगवैलहिसुद

समसवुदेहु ।। टीका यहद्रष्टांतनुरागहैनाइ

काकेनैनजनसहितदेषिनाइकके

अनुरा ।। ज्योंसुसषीनाइककेअनुराग

उपज्योदेषिनाइकासोंकहतिहैनाइकाप

रकीयानाइकहू सषीसोंकहैतौसंभवैं॥
कवित्त॥देषीयेकवनिताविचित्रवरवा
निकसोंजाकीजोतिहीसोंजगिमगिरह्यौ
गहुहो।विहसिविहसिमुषवोलतिसरसवा
नीवरसतुमानोअमीवूंदनुकोमेहुहो।क
हेकविकछ्मक्योनभूपतिकेभोगकररज
धानीसकलसुदेसुपाइदेहुहो॥नेनमीन
लगनपेअंजनतुलसनुसनिछ्रसंसुभजो॥
समेउपज्योसुनेहुहै॥९ शाउरानुरागना
इककोदोहा॥मोहूसोंतजिमोहद्रगचले
लागिउहिगेल॥छिनकुछाइछविगुरडरी
छलेछवीलेछैल॥टीका॥यहइछानुरागुहै
नाइककोदेषिनाइकाकोअनुरागउपज्यो
हेसोनाइकासषीसोंकहतिहैनाइकापरकी
याऊढा॥कवित्त॥जाघरीके नीकोमंत्र
उारदीनीउानरूपकीमि ओपरीनेक

नमलेहैं॥ज्यौंज्यौंहठुकरिरोकराषीश्रा
टश्रंचलकीत्यौंत्यौंचलुकरिकेंउलहीकौ
लहेहैं॥माइसोंजुहतौंनातौंपलकिमेंकरि
हांतौंछोडिसवतोतौंवाकीगैललागिच
लहैं॥नंदकोकुमारश्रालीवीसविसेंठगुहै
गोदषलहीदषिमेरेसोऊनेंनछलेहैं॥६३
दो॥चितवनिभोरेभाइकीगोरेमुहमु
सक्यानि॥लगनिलगीश्रालीगरेंचितव
टकतिनितश्रानि॥टी॥यहनाइकाकी
चेष्टानाइकसषीसोंकहतुहैं पूर्वानुराग
हुहैंश्रकरूदसश्रवस्थाकेभेदमेंसुमिरनजा
नीयें॥कवित्त॥भूलतिनक्योंहूंवृषभानन
नयाकीवानिवहश्रगरानिश्रुगुरीनचटका
इकें॥वहगोरेवटरारेवदनकीमुसकानिव
हचहच[illegible]नवनदेषीभोरेभाइकें घूंघट
करनि[illegible]हलुउसारिवहलटकनिमिल

निसज्जनीसैं लपटाइकैं॥ ऐसीभांतिज्ञ
वनेंमैं निरषीहीतवहीतैंपलपलमांज
षटकनिचितआइकें॥८ षा॥दोहा॥इती
भीरहूभेदिकैं किनहूंहेरनआइ॥करैडी
ठिजुरिडीठिसोंसवकीडीठिवचाइ॥टीका
यहनाइकाकें चिन्नेवकीचतुराईसषीस
षीसोंकहेंनोंहोइनाइकापरकिया॥क
वित्त॥ सौतेंसगानसुहाईसीवैंसमनेहस
नीरसकोंवरसावै॥ ग्राहकेचाइनुकीचतु
राईकहांलोंकहीकहतेंनहिआवै॥भीरभ
ईअतिभारीतऊमनभायोकरेंकोऊभेदुन
पावै॥घातगहेंजुरिडीठिसोंडीठिफिरैसवकी
वहडीठिवचावै॥८ षा॥दोहा॥गडीकुटुमकी
भीरमैंरहीवैठिदंपीठि॥तऊनेंकपरजातिइ
नसजलहसौंईडीठि॥ यहनाइकाकेंनेहकी
निकाईअरुचिनेवकीचत[illegible]इकुकेहुं

हे नाइको पर कीया ॥ कवित्त ॥ प्यारी प्रवी
न सनेह सनी न षते सिषलौं सुषकीनि
धि मोहीं ॥ कैसें जू मो उर तें न टरें जु चु
भी चित नचाह निनेह निचोहीं ॥ वैठि वधू गुर
नारिनु में ज कुनारि न चाइ षरी सकुचोहीं
लाल षगी पलये कतऊ परि जाति उतें वह
डीठि हसोंहीं ॥ २६ ॥ दोहा ॥ नहि न चाइ चि
तवति दृगनि नहि बोलत मुसिकाइ ॥ ज्यों ज्यों
रुषरुषौं करें त्यों त्यों [illegible] चिकनाइ ॥ टीका
यह नाइका कौं चेष्टा नाइक सौं सषी सौं कहतु
है वह रूषाई मेरे चित कौं चिकनावति है ॥
कवित्त ॥ जोरति न लोचन न चाइ नेह चाहु भ
रे मृदु मुसिकानि कें न भाव दरसावतु है ॥ बोल
ति न कहूं मन मोहन मधुर वैन मोर तिन
भृकुटी मे [illegible] तिनु गावतु है ॥ कहै कवि कृस
वा कौ ग[illegible]वानि कछू सहज वसीकर

कोंमंत्रजान्योंजातुहो।ज्योंहीत्योंरहतियप्या
रीराधारूपरूषाकरित्योंहीत्योंपरोईप
रोंचितुचिकनातुहो॥६॥दोहा॥चितई
ललचोंईललचोहेंचषनुइरिघूंघटपर
मांह॥छलसोंछलीछुवाइकेंछिनकुछबी
लीछांह॥टीका॥यहनाइकापराकियाहेंचे
ष्टाजुकरगईसुनाइकुसषीसोंकहतुहें॥
कवित्त॥पूरनसुधानिधिसोंवदनुदिषा
इकरिघूंघटकीओटकीनीकछूकलजाइ
कों॥घूंघटकेपटमेंहेंनिरषीनिसंकचित
वनललचोंहीचाहचीकनीजताइकों॥कहें
कविकमलमृदुमुलकिअलीकीओरच
लीकाहूछलसोंछबीलीछांहछुइकों॥हाह
कहिकोहीजाहियेछविसोंहीवहमाहीनेंन
टरतिरहीजुरीझछाइकों॥७॥दोहा॥अ
वलीनाभिदिषाइकेंसिरसिर.. किसचि
समाहि॥गलीअलीकी ... चलीभ

लौविधिचाहि॥ टीका॥ यहनाइकापर
रकीयाकोजुचेष्टादेषीहैसुनाइकुंसषी
सोकहातुहै॥ कवित्त॥ आजमैंअचानक
विलोकीबृजबालयेकवाकीदुतिरही
मेरउरमैंबिहारिकैं॥ दामिनीलहैंनचा
रुचातुरीकलाइतीककामहूंकीकामिनी
करारिगरीवारिकैं॥ त्रिवलीउघारिकेंदि
षाइकेंगभीरनाभिघूंघटनिहूंटकीनोंस
कुचिसह्यारिकैं॥ भातिभलीसांकरीग
लीमैंगजगामिनीअलीकीओटगहैंग
ईचलीयौंनिहारिकैं॥ २९॥ दोहा॥ डगकु
डिगतिसीचलिठठुकिचितईचलीनिहारि
लियेंजातचितचोरटीयहगोरटीनारि॥ १
टीका॥ यहनाइकाकीचेष्टासषीसोंकहतु
हैनाइकु॥ कवित्त॥ मनमथवामसीचप
लअतिअरचषअधरअरुनदुतिअति
सरस[illegible]सोनेसेसदेसतनलोंनेपेउरो

जवनैंकौनकीनमतिलखिवेकोंललचातिहें॥डग यकडिगतिसीचलीफेरठाडीभई वहु रिविलोकिचलीमुरिमुसिकातिहैं जोवनभरारभरीगोरटीभयंदगोंनकोंन यहचोरटीचुरायेचितुजातिहैं॥१००॥ दोहा॥ भोंह उचें आचरुउलटिमोरमोरिमुहमोरि॥नीठिनीठिभीतरगईडीठडीठिसीजोरि॥टीका॥यहनाइकाकोजुक्रिया दषीहैं सोनाइकके चितमेंवसीहैं सुवारवारसषीसोंकहतुहैंनाइकापराकीया॥कवित्त रूपकीअपाररराधाठाढीनिजुग्रहद्वारजा कीछविपरतैंवारीयकरारिकें॥मोहिदषिनैंसकुलजाइकैंचढाइभोंहवाईचितवनि मौंरुलीनोंचितचोरिकैं॥मोरिमोरिमुहं जमुहांनीअंगिरांनीपुनि [illegible] सललित नैनवडुरारेटारिकैं॥नीठिनी[illegible]भईभोंन

भीतरसरोजमुषीडीठिसौंमिलाइडीठि
नीकौनेहुजोरिकै ॥१॥ दो० ॥ ऐंचतिसी
चितवनचितैभईऔटअलसाइ॥ फिरि
उझकनकौमृगनयनिदृगनिलगनियां
लाइ॥ टी० ॥ यहनाइकाकीचितवनिदेषि
नाइककेचित्तमेंबसीहैसुनाइकुसषीसौं
कहतुहैकेवसईफिरचितवैयहअभिला
षहै॥ कवित्त ॥ षिरकीउघारिजबनागरिनि
हेरीइततबडौंचनवारीमनमथछविछाइकैं
ऐंचतिसीचितवनिभौंहनिमरोरिकारिल
गनिलगाइचितुलैगईचुराइकै॥ कहैकविछ
ष्मइंदवधूकौचदनुलषिनंदलालरह्यौठ
गकौसौमुरिषाइकै॥ उतचितवनुसबका
जबिसुराइकैंसुफिरिअवलोकिवेकीआ
सउरलाइकै॥२॥ दो० ॥ वेढहैउमदाहउ
लजल[illegible]वडवागि॥ जाहीसौंलाग्यौहौ
यौताहीसौउरलागि॥ टी० ॥ यहनाइक

कौं आलिंगनु करतिहैं सो सषी प्रगट कहति हैं नाइका सौं ॥ कवित्त ॥ आँगम रोरि भुजा भरि भैंटति मो सौं कहु ठलाति हैं ठाली ॥ पानी की आगि सिराइ पानी सौं रीति अलीक चवैं यह चाली ॥ चाहउतै उमदाह भली विधि राढौ है देषि चहैं वनमाली जाहि सौं तेरौ लग्यौ हिय कौं हितु ताके हियैं किनि लागत आली ॥ ३ ॥ दोहा ॥ देष्यौं अनदेष्यौ कीयौं अंग अंग सवै दिषाइ ॥ वैठति सीतन मैं सकुचि वैठी चितै लजाइ टीका ॥ यह नाइका परकीया याकों चितै कों लाज करवौ देष्यौं सुनाइ कुमकी सों कहतु हैं ॥ कवित्त ॥ मोहति सरूप सनी वैठी ही छवीली राधा हौं हूँ तहाँ निकस्यौं अचानक आइकै ॥ मेरी और देषि अनदेष्यौं अनदेष्यौं करि मुस कानी अंग अं[illegible]ल दिषा

इकें ॥ पेटतिसीतनमैसकुचिमनअैंचति
सीचितवनचाहिवैंठीसिमटिलजाइकें ॥
वहमुसकानिचित्तवनिसकुचनिकोंहू
टरतिनरहीमेरहियेमडराइकें ॥ धमद
हा ॥ चिलकचिकनईचटकसोंलफति
सटकलोंआइ ॥ नारिसलोंनीसांवरीना
गिनिलोंडसिजाइ ॥ टीका ॥ यहनाइकाकी
सांवरीछबिदेषिनाइकआसक्तभयोसु
सषीसोंकहतुहैं ॥ कवित्त ॥ चिलकतुचा
रुचिकनाईकीचटकभरीचलतिलफ
तिजेसैंलगलचकतिहैं ॥ साचलीसलों
नीछवितिलोंनीअजोंहोंनीवेसाभासनी
सीसमनिसहितलसतिहैं ॥ कुटिलसुभ
इचितवनिप्रेमविषभरीनागिनिज्योंइ
हिव्रजनौंरिवसतिहैं ॥ मनकोंडसतिअरु
तनकें ... रआवेलागतनुजंत्रमंत्रअ

दभुतगतिहै॥५॥अथनेत्र लगनिदोहा
मैंहीजान्योंलोइननुजुरतवाढिहैंजोति
कोज्ञानतुडीठिकिरकिरीहोति॥टीका॥य
हनाइकाअपनेनेत्रनुकीआसक्तिसषी
सोंकहतिहैंअनुयहकहतिहैकेजवतेंअ
बिदषीतवतेंऔरकछूसूझतुनांहीं॥क
बित्त॥जादिनतेंआलीतेंकहीकिमनमो
हनकेलोचनसलोनेदषेअतहितुवाढि
हो॥तादिनातेंमैंहूंजानीचारियहनैनभय
जातिकोप्रकासकछूअधिकाइचाढिहैं॥
जारतिहींनैंनविथातननमेंवगरिगईमद
नहुतासनुवरतुजाढिजाढिहै॥कोनयह
जानतुहेंडीठिहीकोडीठिपीरहोतिकिरकि
रीकोउसकतुनकाढिहैं॥६॥दोहा॥सौं
त्यांप्यासैरहतुज्योंज्योंपियतअघाइ॥सगु
नसलोनेरूपकोजुनचषतृषाबुझाइ॥टीका
२ ॥

यहनाइकाकेनेत्रलगेहैंसोसषीसोंकह
तिहैं ॥ कवित्त ॥ हरिमुषचंदत्योंचकोर
कैंरहतिजांनिलोचनकमलगतिभौंर
कीगहतहैं ॥ देषनहींदेषतरहतिदिषसा
धलागीहौ ॥ तऊनमेषयोंविसेषउमहत
हैं ॥ टीनोंकछूकृष्मप्रांनप्यारकोंसलोंनो
रूपतातेंनचुरुत्तिवषाकलनलहतहै ॥
त्रपतनहोतक्योंहू मांईरीनयनमेरपि
यतअघाइत्योंत्योंप्यासेईरहतहैं ॥ ७ ॥ दे
हो ॥ अलिइनलोइनसरनुकोंषरोविषम
संचारु ॥ लगेंलगायेंयेकसेदोउनकर
तसुमार ॥ टीका ॥ यहअपननेत्रनुकीअ
वस्थासषीसोंकहतहैंनाइकाकहैंवानाइ
कुकहैं ॥ कवित्त ॥ सरुजाकेंलागेंताहिसु
धिनरहति कछु जोहनतुनाकेउरचक
विथाने ॥ तिनतेंअधिककुसमायुध

के पांचैं बांन जिनके लगै तें रहैं सुनि नुके
ध्यांन हैं। कुसुम बांण प्यारे को चुराई लिये
जानि अली सब हितैं विषम बिमे पनंन
यांन हैं। दुहुंन बिकल करै जतन लगैन
आन दुहूं भोति गे हुन लगा अकुमयांन।
चा दोहा। द्रगन लगत बेधत हि पहि बिक
ल करत। अंग आनि॥ येतें सबनें विष
मई हि पानी हन बांन॥ टीका॥ [illegible]
के नैन बेधि नाइक को बिकल [illegible]
यीनाइका सों कहति है [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

हा॥सोरठा॥कोउ अंसूबूंद कसिसोकरव
रुनीसजल॥कीनैंवदननिमूंदउगमलग
उरैंरहत॥टीका॥यहनाइककौदेषिनाइ
काकैनैनत्रदिवसभयेहैं असुपरतहैं॥
सषीसषीसौंकहेतिहैं मषीनाइकासौंक
हैं॥कवित्त॥तैंतवतेंवृषभानसुताहरि
कउगनैकैंनिहारहरेहौं॥वेतवतेंनहलें
नचलैंरहैवाहिचितौंनकीचाहभरेहैं
कोंठाकियैंअसूवानकीबूंदजंजीरवउवि
रुनीजकरेहैं॥नैंकअचेइनकौसुधिल
कुमतिंगमनौंमुहमुंदपरेहैं॥१०॥दोहा॥
कहतसवैंकविकमलसेमोमतनैंनप
षांन॥नतरकुकनइनवीयलगउतेप
जतविरहकसांन॥टीका॥यहनेत्रलग
निहैं॥यहवचननाइकुकहेतोवनेंना
इकावा[illegible]तौसंभवैं॥कवित्त॥वरनिवरनि

द्रगकहतसकलकविकुरगमीनषं
जनसमानहैं॥कहैंकविकूसरचिप
चिचतुराननने लोचनयेपाहनवनाये
मेरेजानहैं।।कमलसोंकमललगाइदे
षोंकेयोंवरएकआंककोंहूं बुहउपज
तुकमानहैं॥ लागनहीं वियनेंननव
होंउपजिउठलगनि आगनियानेंप्रगट
समानहै॥११॥दोहा॥सबहींसोंस
मुहातिछिनुचलतिसबनुदैपीठि।वोही
सोंठहरातियहकविलनवालीपीठि॥टी
यहनाइकालछिलासषीनाइकासोंक
हतिहैसषीकोंवचनसषीसोंहूंहोइ॥क
छिनविलालमनमोहनकीछविपरत्नेतों
वलिरीझि[illegible]हीमोहिवहरावतिहैं भोरी
ज्यों॥प्रीतिउनअंतरकीप्र[illegible]लोकि
यतिसोंहकीयकैसेनिवहनिचोराचोरी

ज्यों॥ सचसैंलषति मिलैंकाहूसौंनतेरीडी

पीठदैंचलति पुनि सचहीं की ओरीज्यों

इनउनहरिचित्त चोरहीको ओरआरइ

हतिहैंठहराइहैंमंत्रकीकटारीज्यों॥११२

॥ टरैंटारतेंहीटरतदूजीटारटरैंन

क्योंहूंआंनन आंनसोंनैंनालागननैंन

॥ यहनाइकुआपुनेंनेत्रनुकीआस

क्तिकहतुहैं॥ अरुनाइकाकोंभ्रमुहैकिना

इकुऔरआसक्तिहैंसुनाइकाकोंभ्रमुइ

रकरतुहैंजोंनाइकानाइकसोंकहैतोउ

राहनोंसंभवैं॥ कवित्त॥ औरतेंवानपरी

सोपरीनटरैंवहकोटिउपाइकीयेंहूं॥क

सकहैंजिनरीझिरचेतिननैंनचलेंनक

हूंललचैंहूं॥ सोंतोटरैं जिहिंटारटरैंनहिं

दूसरैं [illegible] टरैंसपनेंहूं॥ आनकीयेंकहैं

आंननआंनसोंयेदृगनैंकनलागनक्यों

हैं॥१३॥दोहा॥हरिछबिजलजबतैंपरैंत
बतैंछिनुबिसरैंनु॥भरलढरलबूडतर
तरहतघरीलौंनैंनु॥टीका॥यहनाइका
अपनैंनेत्रनकीआसक्तिसषीसौंकह
तिहैं॥कबित्त॥ अजुनिरष्यौमैंब्रजराज
कौंकुवरकौंनहजाकेअंगअंगआलीम
नहिरहेतहैं॥कमपौंनप्यारेकौदुराईवाँ
निकाईदषौंकोरिरतिपतिआतिलाजनि
मरतहैं॥ताकीसोभासलि[illegible]नवनैंन
घनपरैंतवलौंघरीलौंछिन[illegible]बिथुरत
हैं॥ऐसेभयेरहतनतिं[illegible]अनेकभाः
भरलढरतभुलिबूडत[illegible]
दोहा॥नैंनलगेंति[illegible]
हैंप्रांन॥कामन[illegible]
मांन॥टीका॥[illegible]
यासखीसौं[illegible]

कवित्त ॥ नैंन निअैं सौं गह्यौं हित कौं पनु
चैंन लहैं जब लौं हरि हेरैं ॥ मांन छुटैं हूं न वा
नि छुटैं जब क्यौं न हसैं उपहास घनेरौं ॥ को
कुल कांनि कहां वपुरी गई लाज लजाइ य
आवति नेरौं ॥ नेर भटू अब सैं कसयां नन
येक हू कां मन आवत मेरैं ॥ १५ ॥ दोहा ॥
ललन निहार रूप की कहौ रीति यह कौन
जा सौं लागत पलकु पल लागत पलकु
पलौं न ॥ टीका ॥ यह नाइका की अवस्था
सषी नाइक सौं कहति हैं कि जब तें तुम दे
षे हौ तब तैं वा के पल काहू नाहि लगत ना
इका हूं नाइक सौं कहै तौ संभवै ॥ कवित्त
वार कदू बौ सुध्यौ न रहैं दिब साथ लगै
कुल कांनि भगै ॥ मोहनी रीति कछू मन
मौंहन रावरे रूप किधौं उमगै ॥ कौन ठगौ
राल [illegible] कित काहू रमैं न बसीकर मंत्र प

गोंग्राकीकहूंपलेयकनेंगपललाकोप
लोंपलकैंनलगं॥५६॥दोहा॥दयकर
त्तिहईछईनईजुगतिजगमोद॥कवित
ऊंदिलैंगेंदइदेइवगेनद॥ [illegible]
नाइकोकेनवेनाइकेकोदपिनगेमक
देइवरीलेनिदनाइकोमपधोपोकनति
हे नधोमपो [illegible]
[illegible] ॥कवित्त॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

अथ बानाइक सषी सों कहै ॥ कवित्त ॥
लागति न पलक लल करूप लषिवे कों
बाढ़ति ध्यान पग तिज गति दिन राति है ॥ ज्यों
ज्यों निरषति त्यों त्यों उमगति भूषी क्यों
हूं होति न अहू षी षरी षरी लल चाति है
और भये बरति विषम विरहागनि में
मीन जल हीन की सी गति दरसाति है ॥
सिर ज्यों न सुषरनु छविहारु आपनि कों
देषें न अघाति अन देषें अकुलाति है
१४ ॥ दोहा ॥ देषत कछू कौं तिगुइ ते देष्यो
ने कु निहारि ॥ कच कीइ कटक ऽ टिर हीर
टी या अगुरिनु फारि ॥ टीका ॥ यह नाइ
का कहू कै नाइक कों देषति है सो सषी ना
इक कों बताबति है सषी कों बचनु नाइक
सों प्रीति कराइवे कों प्रयो जनु ॥ कवित्त ॥
मैं न हूं [illegible] ऐन मन मोहन नुमा रोछ विने

ननुमेंषु भी व्रजवाल रिझारिकैं॥ वगर
कों वासु सासु ननदकों त्रासु ताते निरषिम
कें नय्यारी वदनु उघारिकैं॥ विनु दषें कल
न परति याते दृषिवेकों करयौ है उपाऊ दृषें
रतु घोंनि रारिकैं॥ कवकी निमेष भूलि ला
चन लगाइइ तनडटि रही टाटी करपल्लव सों
फारिकैं॥ २४॥ दोहा॥ चकी जकी सी कै रही
वूझें वोलन नीठि॥ कहूं डीठि लागी लगी कैं
काहू की डीठि॥ टीका॥ यह नाइका लछित्ता
है सबी नाइका सों कहति है सषी हूं सों कहैं॥
कवित्त॥ आजु चकी सी जकी सी कहा क
हु अंग सहारि जु राई सी हेरी॥ वूझें हूं नीठिक
षें यह तेरी नई गति मो मनसा च समूलि
री॥ डीठि लगी किधों काहू की तो हि किडी
ठि लगी कहूं कान्ह सों तेरी॥ २०॥ दोहा॥

नहुननैंननिकोंकछूउपजीवहीवलाइ
नीरभरेनितमतिरहैंतेउवनप्यासवुझा
ई॥टीका॥ यहनाइकाअथवानाइकुअ
पनेनेत्रनुकीआसक्तिसषीसोंकहैंसषी
सषीसोंकहैंतोसंभवैं॥कवित॥येकप
लोंनलगैपलकैंललकैंलषिवेकहला
गीचटी॥नीरभरेनिसघोसरहैंनमिटैं
तुउभूरिव्रषाउपटी॥आठहूजामनपेल
रफेउपचारहूसोंनिघटैंनघटी॥यहप्री
तिलगीनहिंआंषिनुकोंकोउपावकव्या
धिप्रलैप्रगटी॥२१॥दोहा॥केवांआव
तिइहगलीरहैंचलाइचलेंन॥दरसनकी
साधैरहैंसुधेहोंइननैंन॥टीका॥यहना
इकाअपनेनेत्रनुकीदसासषीसोंकहै
तिहैंकैंदेषेंतोलाजसोंदेषिनाहीसक
तिअनदेषेंअकुलातिहैंमध्यापरकीय

॥कवित्त॥काहू अलीच कुवेर गली इहिं आव
तु चारु सिंगार किये हूं॥ दषिवे कों लच हों त
वहीं ललचाइ रहें न चलाये चले हूं॥ ला
ज अचानक आइ रहे पछितात यहै अप
ने मन में हूं॥ सोहत चित्र की माधे रहें उर सू
धे विलोचत होत तन कें हूं॥ २२॥ दोहा॥ साज
मोहन मोहकों मोही करत कुचेन॥ कहा
करों उलटे परत टोने लोने नेंन॥ टीका॥
यह नाइका प्रौढा परकीया नाइक कों देषि
ने अकुलात है सो सषी सों कहति है॥ क
वित्त॥ भूकृति हों सति भाइ सषी यह सी
व इन्हें सिषई कहि कोंनें॥ में सजे मोहन मो
हिवे कों वहु अंजन साज वनाइ कलोंनें॥ देष
त ही ललचाइ रहे अब ये अपने सपने हूं
न होंनें॥ मोहि कों देन लगे दुषनें नयनों
उलटे परजात हें टोनें॥ २३॥ दोहा॥ लौभि

लोभलगेहरिरूपकेकरीसांटजुरिझाइ
होंइनवेचीवीचहींलोचनचगीचलाइ ॥ मि ॥
यहहेतुचलगनिना इकाकोंवचनसषी
सों ॥ कवित्त ॥ नंदकिसोरकीमोहनीमूर
तिदेषतही अतिमो मनभाइ ॥ लोलगि
लोभलगे ग आगेई जाँइ मिले मिलिसो
रमिलाई ॥ आपनो स्वारथसाध्यांसवैवि
धिहोंइनवीचहींवेचीरीमाई ॥ कैसीकरों
नकछूवनिआवतिनैननुकेमनमेंतोठ
गाई ॥ २४ ॥ दोहा ॥ जेसुअपाजेसुदेषतन
हींदेषतसामलगात ॥ कहाकरोंलालच
भरेचपलनैनचलजात ॥ टीका ॥ यहनाइ
कासषीसिक्षादेतिहैतासोंअपनेनैनुकी
असक्तिकहतिहै ॥ कवित्त ॥ सासुरिसातिकु
वैनननदीतऊतसिषवैसवविसीषकेवैना
हैंवृजवासुचवाईरीमाईचहूँओरचलेउप

हासकीसैना॥देषतसुंदरसांवरीमूर
तिलाफ़अलोककोलीकलषेना॥कैं
सीकरोहरकेनरहैंचलिजातनऊलचि
लालचीनैना॥२५॥दोहा॥नैंनानेंबून
मानहींकितोकह्योसमुझाइ॥तनमनह
रेंहूंसेंतिनसोंकहाबसाइ॥टीका॥यहना
इकाअपनेनेत्रनुकीआसक्तिसषीसोंक
हतिहै॥कवित्त॥सरीयेंजगाकेउपहासनि
तेंरहियेंगुरुलोगनिमांफ़गसों।उरुओं
नियहेंअपनेंउरहोंसमुझाइरहीनहिनेक
त्रसों॥अरुरंचकमरोकह्योनकरेंतनुहूं
मनहारेंतऊंनलेंसें॥यहनेंनगह्योसज
नीइननेननिपैंहारिहारिहसेंईहसे॥२६॥
दोहा॥सकैसकाइंनतमविरहनिसदिने
सरससनेह॥रहेंवहेंलागीद्रगनिदिप
सिषासीदेह॥टीका॥यहनाइकुनाइका

कौंधांनुहूं करतुहै तऊ विरहघरतुनाहिं

सोनाइकुमधौसौकहतुहै॥ कवित्त॥ मृग

लोचनके विछुरैंजुभईगतिसोनहिंजाति

उचारी॥ सुहृदसोपरपूरननेहविनान

पलीउंनअंतरधारी॥ जद्दपदीपसिषा

समनैनतुलागीरहैंतनकीदुनप्यारी॥ त

द्दपिसूझैंकछूनहींयोंभरिपूररह्योविरहा

नमुभारी॥ २७॥ सवैया॥ लाजलगामनमो

नहिंनैनासोवसनाहिं॥ येमुहजोरतुरंग

लोंअचतहूंचलिजांहिं॥ दोहरा॥ यहनाइ

कासषीसोंआपनीआसक्तिनैनुकी

अवस्थाकहतिहै॥ कवित्त॥ देषनवानर

नागरकीछविफांदपरेहढकेंनरहीहीं॥

लोचनलोलनुरीमुहजोरसुलाजलगा

मकोंमानतनांहीं॥ ऐचतिहोंअपनेर

नकोंवलियेवलुकेंउनहीचलिजांहीं॥ कें

सीकरैंनहिंमोवसयेकुलकांनकेचारु
कतैंनडरांहीं॥२८॥दोहा॥चित्तलगनि
फिरिफिरिचितउतहीरहतुरुटीलाजकी
लाव॥अंगअंगछविमोररमैंभयोंभौं
रकीनाव॥टीका॥सहनाइकुनारकाके
अंगअंगकीछवियपरीक्योंहैसुअपने
चित्तकीआसक्तिसषीसोंकहतुहै॥
विलालोवतुमहा[illegible]
लिभयोंतरललरंगह[illegible]नेकोंभ
उहे॥अंगअंगछविमें[illegible]
भौंरचपलकयाहत[illegible]
है॥चलिपैनसक[illegible]
रकिनिवृकाजमि[illegible]
तिनक्योंहूंकुल[illegible]
धीरजप्रबलपत[illegible]
दोहा॥उतनेउत[illegible]

जकनपरतचकईभईफिरिआव
ति॥ ॥ जकनपरतचकईभईफिरिआवतिफिरिजाति॥ टीका॥ यहनाइकापरकीयामध्याहैसोयाकीविचरयासषीसषीसोकहतिहैजोसषीनाइकाहूसोकहैतोसंभवै॥ कवित्त॥ तंवतैंअरकोनइनागरसोंनवतैंनकछूमनलावतिहै॥ इराति नहींछिनुएककहूंनिसिवासरज्योंवहरावतिहैं॥ कवहूंइततैउनधावतिहैकवहूं उततेइतआवतिहै॥ चकईजिमिआवतजातकछूपलकोनकहूंकलपावतिहैं॥३०॥ कोजानेचेहैंहैकहाबजउपजीअतिआगि॥ दोहरा॥ मनलागेनेननुलगेचलोनमगलगिलागि॥ टीका॥ यहनाइकाअनुरागुतेविरहकीयवानाइकाकेइषानुरागुतेविरहकीअगिनिसोंमनआकुलहैसोसषीसोंकहैहैं॥ कवित्त॥ दीसैनधूमनवरैंवितुईंध

नुउत्रनहैंप्रगटैनसिषाहैं॥नैंसुकनैंन
निलागनहीं मनुश्रांनिलगेंसवुश्रंगनि
दाहैं॥लोचननीरटरैंनवुमें उपजीव्रज
मेंकोउश्रागिमहाहैं।देषेंहूंडीठिपरेंनक
छूअवजानेंकोश्रागधीकहैकेकहाहैं।
३१॥दोहा॥उरनटरैंनीदनपरेंरहैंनकाल
विपाकु॥छिनकछाहउछकेंनफि
षरो।ग्रिषमहुविछाकु॥टीका॥यहने
त्रलगनिहेंसुनाइकुअपवानाइकास
षीसोकहैहेंकिछविकोछाकुपरोवि
मुहैसोविषताचर्ननकरैहैं॥कवित्त॥
सुधिकोनधरैनीदनेंसुकोनपरेंमहाभ
पतेंनडरेंसुषनिकरैंनुबाकुहैं॥कहैंक
विकाममचोकूंयकवेरछकेंसुनोंउछ
ननेंकोनसकोंपरिपाकुहैं॥सीरोल
वेरंनिसदिनंनरफेंपलकनिगतिहरैं

धरैकाहूकोंनधाकुहै॥ औरमतवारेले
तोंमेरेमुतवारेयहसवहीतेंविकटविष
मछविछाकुहैं॥ ३२॥ दोहा॥ उडीगुडी
लषिलालकीअंगनांअंगनामांह॥ वो
रीलोंदोरीफिरतिछुवतिछवीलीछांह
टीका॥ यहनाइकापरकियाप्रोढाहेंसु
नाइककीचंगकोछांहछुयेतेंनाइकके
मिलईवोसुषमानतिहेंसषीसषीसों
कहतिहैं॥ कवित्त॥ नंदलालनवनाग
रियेंनिजरूपदियाइहगोरीसीनाई॥ वा
हिंजोरेंतवनेग्रहनेनविलोकवेकोंअति
हीअकुलाइ॥ प्यारेकीचंगडडीलमेंउडीलु
षिमोदभरीनिजुआंगनआई॥ होंनगु
डीकीजितेंजितुछांहतितेंतितछीवेकों
डोलतधाई॥ ३३॥ दोहा॥ चलतघेरघ
रघरतऊघरीनघरठहराइ॥ समंजिउ

हीघरकौंचलैंभूलिउहींघरजाइ॥दोंतं
यरूनाइकाप्रौढापरकीयाहैं।जहांचि
तुनाग्यौहैतहांजानिहैसखीसखीसौंक
हतिहैं॥कवित्त॥बालचिधीरसकैचसकैं
वसकैनसकैमनकौंसमझावैं॥हौनघ
नैंघरघेरूतऊघरयेकघरीरहिवैनहिं
भावैं।रैनदिनाकलकानफिरैनकहूंक
लकौंकलवैनहिंपावैं॥जौनचलैतौउहीं
घरआवतिभूलिपरैतौउहीघरआवैं
॥२४॥दोहा॥यातेंकौंहौतइहांनेकौंधर
तिनधीर॥निसदिनडाठीसीफिरति
वाढीगाढीपीरा॥टीका॥परूनाइकाकेचि
तमैंलगनिलगीहैसायाकौंमनुकहूंका
लपावतुनाहींयाकीदसासखीसखीसों
कहतिहैं॥कवित्त॥सोभामनमोहनीकी
परमरसालचितचुभीव्रजवालकेनछि

नविसरैकहूं॥ वरसनतजलनरसनतइगदृ
षिचकोकहो श्रैसीलगनिठुराश्रैलैउरै
कहूं॥ घरनैवगर श्रावैवगरतैघरधावै
फरैम्योविकलपलुकलनपरैकहूं॥ वाढी
मनमप्पपीरत्तैसकोधरैनधीरजढीसी
फिरतिठाढीछिननरहैकहूं॥ ३५॥ दोहा
पलनिचलैज किसीरहीप्य किसीरहीउस
स॥ श्रवहीननुरितयोकहामनुपठयो
किहिपास॥ टीका॥ यहचित्तलगानिहै
सषीनाइकसोकहतहो॥ कवित्त॥ सासन
उसासतिहैवासकोसत्तोरहैनश्रैसीकै
कैकोनकेधोहितमेहितैरही॥ कितहेरी
तरोमतुरीनोसोलगनतनुश्रवहीतूसु
धिवुधिकहिक्योवितैरही॥ चित्रकैसी
लिषीइरीजकितश्रचेतभईपलकनिल
गत्तिभूलीचकितचितैरही॥ काहूहेरिह

रीमति विसरी सबै सुरति हो नौं तरी यह
गति देषि थकि तेर ही ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ ज्यों
ज्यों आवति निकट निसि त्यों त्यों षरी उ
ताल ॥ झमकि झमकि टहलें करैं लगी र
हचटै बाल ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रोढा है
तासु की सषी सों कहति है ॥ कवित्त ॥ गौनें
भये दिन केउ भये हिय मे पिय प्रेम की जो
तिसी जागी ॥ वासर ज्यों व्हराव तिनी ठिवि
धी च सके रिस मे अनुरागी ॥ आवति ज्यों
ज्यों नजीक निसा तिय त्यों त्यों उछाह उमंग
निपागी ॥ सा त्वरकाज करैं यह के रव नी रति
केलि के लाह कलागी ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ भृकु
टी मटकनि पीत पट चटक लटकनी चा
ल ॥ चल चष चितवनि चोरि चितु लीयो
बिहारी लाल ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रोढा
है नाइक की सोभा देषि मोहित भई सुअ
पने नन की बात सषी सों कहति है ॥ कवित्त

कहिवेकोहाइलौंकहौंरीयेकवातकानिवनि
ठनिवानिकसैंकोनकुइतव्हैगयौं॥ सांवरौंस
लौंनैंनतनसुंदरसुभगसोभासदनविलो
कनमदनमडुनैगयौं॥ चलनिकौलटक
निपीरेपटकीचटकनिमोहनिकीमटक
निसौंचेटकुसौंकैगयौं॥ चपलचषनिच
हचहीचितचनिचाहिआलोरीविहारीला
लुचोरिचितुलैगयौ॥३॥ चौदोहा॥ छुटैन
पईयतुवसिछिनकुनेहनगरयहचाल
मारयौफिरिफिरिमारियतुखूनीफिरैखु
स्याल॥ टीका॥ यहलगनिकौवर्ननुहैजा
कैलगतिहैताकोअधिकदुखुहैजाकोल
गतिहैताकेकछुमनहूमैंनाहींसुनाइका
अवस्थानाइकुसखीसौंकहतुहै॥ कवि
त्त॥ छिनुचसैंछुटिपैनविनुवसैचटपटी
नेहुनगरीमैंयहअरपहीरीतिहै॥ लीज
तुछिगाइमनुरतननजतननाहिअतनुमही

प तें हां अधिक अनीति हो। मों रहौं कों मा
रो परतु पुस्रो भयो घनो फिर जो तेहि कोगु
रु अरु म्हारे हि को जो नेते हो। पर यम् दृिजं न
ऊपर यस परीयनु जतेत कथ लोक परलो
क को नभीतिरि।।३ऽ०।। हरी। क्यों वधीयें
क्यो नि वधीयें नीनन्नु पुरनोहि। जगानु
गो बोचन करें ना कोमन वधि जाहि।।४
हो। पर हैं जग जिहि नवन के लोग मन वधिय हो।
नु हैं पहुं अरुमनु न अ नीत हुं यो ना ऽ का अ
च धाना हुं के में धि मां का लो [illegible] मा। ग व
कअ वे उतान भ [illegible] हिन [illegible] पुनु ये व गिय
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

मैंनमतवारेनाहकविचारोमनुवाँधिली
जीयतुहे ॥ ४० ॥ दोहा ॥ मैंनासेंकैंवांकह्यौ
तूजिनउन्हेंपत्याइ ॥ लगालगीकरलो
इननुउरमैंलाईलाइ ॥ टीका ॥ पहलगनि
हेनाइकाअथवानाइकुअपनेमनसोंक
हेहेंसषीसोंकहियोसंभवतुनांहि ॥ कवित्त
तासोंमैंकहीहीकेंउवेरसमभीइमननेनु
केमनलागेंभारीपतोषाइवो ॥ तबतेंनमि
षमानीइनहिंकीमतिठनीअबकहा
तपरवसपछिताइवो ॥ लगालगीइनकी
नीउरकोंलगाइदीनीलगनिअगनिता
तेंकहांभागिजाइवो ॥ कीजीयतुजतनुसी
रोस्योंस्योंहोतदुषनीरोनिसिदिनुअतनु
सतावेंतनुताइवो ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ सारीग
रीनीलकीओरअरूकचुकेंन ॥ मोमनुमृ
गुकरवरगहतअहेअहेरीनेन ॥ टीका ॥
यहनाइकाकेनेत्रदेषिनाइककोमनुल

परहतु नांहीं सषीसों कहै हैं करवलकों ॥ क
बि०॥ बाइ चढे वनके वनमें विहार करैको
केजराकेरहै विक्रम अकथ को॥ भृकुटीकु
टिल चाल अंजन असित वासन रक्त छ
वान गहै आयुध सुहथ को॥ सारी नीरी अ
रथ के आवतु अचानक हीरा रनअचूक
यों है रारहत नथको॥ मो मन कुरंगकों प
करलेन हथा हथीराधे तेरे नैन पअहेरी
मनमथ के॥ ५२॥ क्रमकिचढति उत्तर
तिअटाने कनया कतिदेह॥ भई रहति न
टकों वटा अटकी नागर नेह॥ टीका॥ नाइ
का प्रोढा नाइक की सोभादेषि आसक्ति भ
ई सो देषिवेकों उतरति चढति हैं सुयाकी
वस्या सषी सषी सों कहति है॥ कवित्त॥ को
न्हरको वदन विलोकिकें विकानी बालना
दिना तें देषिवेकें जतनकरति है सुरभी च
राइ वृजअंइवेकी वेर जो निरसवसहो

॥
सवकाजविसरततिहैं ॥ सौंकगुरजनकी
निसांकर्कैनठठौरहैं छिनइतछिनउतया
विधिढरतिहैं ॥ नटकेवटाज्योंनटनागर
केनेहपागी ऊंचेग्रटाऊमकिचढतिउ
तरतिहैं ॥ ६३ ॥ टीका ॥ ग्रथपूर्वानुरागको
जेनवहोनदिषादिषीभईग्रमीइकग्रांक
दगौतिरौछौडीठिग्रवर्कैवीर्छीकोडांक ॥
टीका ॥ यहपूर्वानुरागुजेचितवृनिसंजोग
मेंसुषदाईतेवियोगमेंसुधिग्रायेसाल
तिहैंसुनाइका ग्रथवानाइकुसषीसोंक
हहैविरहकीदसग्रवस्यानुमेंसुमिरनुक
हीयें ॥ कवित्त ॥ रंगरूगीलीभलीविधिसौं
वहुभातिनकसुषदैनहजेही ॥ तईवेकुंज
भयेप्रतिकूलविलोकहियेदुषसलसलै
ही ॥ नेहकेग्रादरसौलेचितौनिहूतीइक
ग्रांकग्रमीसमतेही ॥ वौसविसेविषसाइ

कहूंउरसालनवांकीविलोकनवेही॥ ४४
दोहा ॥ नेकोहूंईनजुदीकरीहरषजुदी
तुमलाल॥उरतेंवासछुटेनहींवासुछु
टैंमाल॥टीका॥यहपूर्वानुरागुनाइकाकी
प्रीतिसषीनाइकसोंकहतिहैकितुम्हारी
मयासोंश्रेसोंमानतिहैलोंतुमसोंकहा
कहैं॥कवित्त॥जादिनवाहिश्रलीनिकेद
षतरीझिहियेहितुमानिकेंभारी॥श्रनेंहि
यतेंउतारिदईतुमफूलकीमालरसाल
विहारी॥तादिनतेंवहवारिक्रवारिकेंप्रा
नतुहूंतेंलगीश्रतिप्यारी॥वासुगईकुंभि
लाइगईपैंकरीनतऊउरतेंछितुन्यारी॥४५
दोहा॥षिनषिनमेंषटकतिसुहीयषरी
भीरमेंजात॥कहीजुचलीवितुहींचितेंश्रो
ठनिमेंहीवात॥टीका॥यहनाइकापरकिया
हेंकाहूभीरमेंनाइकनेंदेषीहेंसुतानेंजुप
रकियाकीमिसुइनिदेषीपेपेंवाननमु

नीसुसषीसोंकहतुहैं॥कवित्त॥आजुमि
लीब्रजबालअचांनकसोमतिवाकेसने
हगहीहैं॥जातिहतीअतिभीरमेंसुंदरमो
तनहरिहियेंउमहीहैं॥आठनिहीमेंगई
जुकछुकहिमेंनसुनीपाछिताआयहीं
हैं॥४६॥दोहा॥वननतनकोंनिकसतुलस
तुहंसतुहंसतुइतआइ॥ऽगषंजनगहि
लेगयोचितवनिचेंपुलगाइ॥दोहा॥यहना
इकाप्रौढाहैसोछविसोंश्रीकृस्नदेषेहैंतें
सेंहीअपनेनेत्रनुकीलगनिसषीसोंक
हतिहै॥कवित्त॥आजुकळोंवनकोंइत
कुंवनिवांनिकसोंजसुदाकोंकन्हाई॥मो
रकिरीटलसेंमुरलीलकुटीअरुपीतप
टीछविछाई॥मोढिगआइमस्योंरसभा ॥५
इहरेंमुसिकाइमुस्योंसुषदाई॥चोंपकी
चाहनिचेंपुलगाइकेंलेगयोनेंननमो
लनिमाई॥४७॥दोहा॥जबजबवेसुधिकी

मीयैं तवसवहीसुधिजाइ॥ ऑंषिनु ऑं
षिलगी रहैं ऑंष्यौं लागतें नाइ॥ टीका॥ य
ह पूर्वानुरागनाइका अथवा नाइका सषी
सौं अपनी वात कहै है॥ कवित्त॥ यह प्री
तिकी रीति अनोषी कछू कहूं जानी न जा
ति कहा लागति है॥ चितचाह की चौंपचढी यैं
रहैं अरु प्रेम विथा उर पागति है॥ नित
ऑंषि निसौं वे ऑंषैं लगी रहैं ऑंषिन
केंसे हू लागति है॥ ध चा॥ दोहा॥ जहां ज
हां ठाढौ लष्यौ स्यामु सुभगसिरमौरु
विनु हूं उन छिनु गहि रहतु द्रगनि अजौंव
ह ठौरु॥ टीका॥ यह पूर्वानुराग कृष्ण देषि है
तई हौं रश्रीकृष्ण की भावना करिकें नेत्र
नु कों आग्रह नु करति हैं सु नाइका सषी
सौं कहति है॥ कवित्त॥ केलि सुधासाग
र मैं गेलि रंगरली परिपूरन विविधिक

नवबेसधिकी नतिहैं नवहींसवहीं सुधिभागनिहै

रलीज्युयोंमनोरथनु॥ ततमनवारतो
उमगिअनुरागुभ्यागुलागतुहोमद्यवास
चीकोअनुहूतैअनु॥ कृस्नप्रानप्यारेकी
दुहाइअतिछविछायैजिनजिनकुंजनिमि
लतहैंरीस्यामघनु॥ तेईतेईकुंजअबउ
नहूंविलोकेविनुमाईगहिरोषत्तिघरीक
लोंअज्योंरोनु॥ थटीदोहा सघनकुं
जछायसुषदसरसिजसुरभिसमीर॥ म
नव्हैंजातुअजोंवहेंवाजमुनाकेतीर॥
॥टीका यहपूर्वानुरागहेंसोजमुनाके
तीरसंजोगुमेंज्युचितकीव्रातिहोतिहीं
सुवहीभावनाफिरिवैसेईहोतिहेंसोना
इकासषीसेंकहतिहें॥कवित्त सघन
निकुंजछायसुषदसुहायअरुमंडित
सरसगुंजपुंजमधुपनकी॥प्रफुल्लित
मंजुअरविंदनकेवृंदन्पावेंविविधवि

लैंसुगंधकुसुमनकी॥ ललितल
लेतैछविवलितलहलहैं॥ तिनेकुंतीवि
हारभूमिनेंकेसुवनकी॥ कृष्णप्रान
प्यारेकीसोंवेईजमुनाकेतीरञ्चजहूं
निरषियहैंगतिहानमनकी॥ ५०॥ दोहा
फिरिफिरिवूझतिकहिकहाकह्योसांव
रेंगात॥ कहाकरतदेषेकहांअलीचले
लीक्योंवात॥ टीका॥ यहपूर्वानुरागस
षीसोंनाइकाकोवचनु॥ कवित्त॥ मदन
गुपालकोविलोकिछविछकीवालप
गीप्रेमपूरनसम्हारविसराईरी॥ वईवा
केवूझकेरिवूझफेरिवूझफेरिवेरवेरवू
झिवेकीरटसीलगाईरी॥ हाहाकहिसां
वरेंकुवारनोसोंकहाकह्योकैंसेहोसमं
जुवाकेसंगसुषदाईरी॥ करतकहाहो
हिहोरकोंनवानिकसोंकैसीकैसीभांति

निहारी ॥ नेकु कहूं नंदनंदन सों लगि जैं
हैं तौ फेरि न व्है हैं छुडारी ॥ वचति श्रोन
नवैंपर हाथ फसै मति प्रेम फदा ब्रज
नारी ॥५२॥ नाइका को वचन सखी
सों दोहा ॥ चित वितु वचतु न हरत हठि
लालन ड्ग वर जोर ॥ सावधान के व
टपरा ये जागत के चोर ॥ टीका ॥ यह नाइ
का नाइक के नैनन पै आसक्त है सु नाइक
के नैन या के मन को जोरवारी हरति लत
हैं सो नाइका सखी सों कहति है ॥ लाल ना
रायन सल्क मिलि मदन महीपति सौं सु
तनु सरकि जाइ कानन की श्रोर है । चप
रि हरत ब्रजवालन के मन घन मान न भ
रा रिभर जोवन मरोर है ॥ जागत हू मूसें
सावधान को विवस करें चपल चितौनि
सरचे धतस जोर है । मोसों कहि आली

नमेंलीनव्हैरहीहैसुसषीसषीसोंकहति
है।।दोहा।।ठाढीविलोकतिहोंकवहींय
हपूरनप्रेमहियेंढरियो।।ध्यानहीध्यान
मेंपाहनकीपुतरीव्हैरहींविसर्योअरु
अंचलकोधरियो।।ध्यानहीध्यानमेंजो
कवहूंयहहोइवहीतोकहाकरिवो।।या
कोघराअवलागिहैकाहिकहागतिहै
हैयहैडरियो।।५५।।अथनाइकको
ध्यांतुनाइकाकोकोदोहासरसतुपोंछतुल
घिरहतुलगिकपोलकेध्यांन।।करलैप्यो
पालरविमलप्यारीपठयेप्रपांन।।टीका
यहनाइकाकीआसक्तिनाइकासोंअधि
कहैसुसुवाकेहाथकेपांनदेषिजुचेष्टा
जुकरतुहैसुसषीसषीसोंकहतिहै।।क
विन।।आंनपियारेकीप्यारीतियापठये
करिहेतुहियेंसरसै।।पाटलपांनषरेसुथ

मनुससिसूरसमेत॥ टीका ॥यहनाइ
काकेलरैलैपरलालवेंदीहैतापैवारछू
टेहैं।सुसोभासषीनाइकसोंकहतिहैअथ
वासषीसषीसोंअरुकविहूकीउक्तिहोइ।
कवित्त॥नवनागरिकेमुषचंदकीचारु
प्रभासरसीरुहतेसरसीपुनिवेंदीविराज
तिभालपैलालविलोकविलोकतकोहि
करैनवसी॥अरुतापरस्यामसुदेससि
रोरुहछूटिछयेअतिश्रापससी।मनों
नेंश्राइनिगहेअहिश्राइराहुनेयेकतहीं
दोउभानुससो॥८६॥दोहा॥पचरंगरंग
वेंदीलसतिउठतिउमगिमुषजोति॥यहरे
चीरचीनोंदियाचरकचोंगुनीहोति॥टी
का॥यहनाइकानाइकनेंजैसीछविसोंदे
षीहैतैसीयेंभांतिसषीसोंकहतुहैं॥क
वित्त॥ललितललारपररसेंपचरंगवेंदी

षरीऊगउठतिञ्चमेंदमुषजोतिहै॥ षंजन
स ञ्चंजनसहितञ्चनियारनैनञ्चधरञ्चरु
नगारगरैंकारीपोतिहै॥ गोहैलषिवेकौ
छविसौंहैंचेउठैहैंकुचलचकनकरिमुनि
मनरसभोतिहै॥ गहरैंसरूपतनपहिरैंचि
नोंठीचीरचौंगुनीतिकाईकीचटकचारदै
तिहैं॥ ८७॥ सोरठा॥ मंगलविंदुसुरंग॥ मुष
ससिकेसरिञ्चाउगुरु॥ इकनारीलहिसंग
रसमयकियलोचंनजगत॥ टीका॥ यहसि
षनषमेंललाटकोंश्रृंगारहैंसुसषीसषीसं
कहतिहैंकविहूकौउक्तिहाइ॥ कवित्त॥ मंग
लविंदुसुरंगविराजतुभामिनिभालमहा
छविछायो॥ ञ्चाननचंदुकलापरिपूरन
केसरिञ्चाउमनोंगुरञ्चायो॥ कमकैहैंइक
नारिमेंञ्चाइमनोंपरिपूरनजोगवतायो॥
नैनभयेंरसकीवरषाकरिचौंनसमूहहियेंउ

मगायैं॥१८८॥ ठिठोनावर्ननंदोहा॥नैननि
मुहडीठिनलगैयौंकहिदीनोंडीठि॥इनै
केंलागनलगीदियैंदिठोनाडीठि॥टीका
यहडिठोनाकौवर्ननुहैसुनाइकुनाइकासैं
कहैंसषीसौंकहैंसषीनाइकासेंकहै॥कु
दिन॥तोहिलषैरतिकोदुतैलाजतिका
जातिश्रीपोसिगारकीश्रेते॥नौहानिको
वरनीनपरेछ्विमोहनत्याइहींमोल्लो
श्रैते॥सुंदरश्रोननडीठिनलागेकह्यौश्र
[illegible] योहितुमानिहिश्रेते॥तोमुषपैश्र
वलागनलागीरीइनीव्हेडीठिडिठोना
दोश्रैते॥१८९॥दोहा॥विषतियसौंहसि
केंकह्योलष्योंडिठोनादीन॥चंदमुषीमु
षचंदतैंभलोचंदसमकीन॥टीका॥यह
डिठोनावर्ननुनाइकुनाइकासौंकहैंअथ
वाश्रृंगारकर्त्तासषीसौंकहैं॥कवित्त॥

प्यारीकोंचारुसिंगारनिहारिहीयेंपतिकों
अतिमोदभर्योंहै॥ चाहिचषाऽकहींमुसि
काऽसहोविधिरूपसकेलिधर्योंहै॥ जामु
षकीफलकेंजुप्रभासकलंकमयंकविरा
जितस्योंहै॥ सामुषतेंवड़ोनाहेंआजुभले
यहचंदसमानकस्योंहै ॥१६०॥ मुषवर्ननं
दोहा॥ हाहावदनुउघारिद्रगुसुफलकरेंस
वकाइ॥ राजुसराजनिकेंपरेंहसीससीकी
हाइ॥ टीका॥ यहमुषबर्ननुहेंमुसषीनाइका
सोंकहेहेंनवोढाकेंप्रसंगमेंवनेंमानुछुगवे
सषीवचोंइकहेंतोवनें॥ कवित्त॥ लोचनल
हकोंफलुसुफलहमारोकरिप्यारीप्रानप
तिकोसनेहरमलीनकरि॥ तेंहीपाईपरम
निकाईअवधिअबयेंतोव्रषभानकीकु
वांरिअरवीनकरिटारिपरघूंघटकोंहाहाहि
उघारमुषुनिजछविपांनिपमेंपीकेनेंनमी
नकरि॥ कंजछविछीनकरिससिहिमलीनि
करिसोतिनकोंदीनकरिप्यारेकोंअधीनक

म

नपैंवरविवकीरकीप्रभानिदरवदनुदु
राइवैंठीमीनेमीनेचीरमैं॥ ५६॥ वानी
वर्नन दोहा॥ कियहाइलचित्तचाइलगिव
जिपाइलतुवपांइ॥ पुनिसुनिसुनिमुषम
धुरधुनिक्यौंनलाललचांइ॥ टीका॥
यहनाइककीश्रासक्तिजोनिसषीनाइका
सोंप्रीतिवढाइवेकोंकहतिहैंवानीवर्ननुहै
॥कवित्त॥ गजगत्तिनेरीहैंरीलटूतवहीतें
भयोंतापेंसुनीपाइलकीझनकसुकाईरी॥
तवहींतेंवाकेउरलागीश्रतिचटपटीतुवमि
लिवेकौंललतुहैंकन्हाईरी॥ वीनकसुरनीहूं
तेंमधुरसरसधुनिकालिकहूंतेरीउनिवा
नीसुनिपाईरी॥ काहतेनवाकेउरमदनमरू
रउठैयाहीतेंहोंकहनजनहरनोसौंश्राईरी
॥५७॥ दोहा॥ छिनकुछवीलेलालचहनहीं
जोलोंवनरातन॥ ऊषमहूषपियूषकीतोंं
लगिभूषनजात॥ टीका॥ यहनाइकाकी
वानीकीमधुराईसषीनाइकसोंकहतिहै

७२॥ मेरेजांनिपूरनकलानिधिसौंफिलमिलातुसरदसुधानिधिकौंलि
श्रीरामै

॥कवित्त॥जाकीसुनैंधुनिवीनुकहागाहिना।जियकीवनभागतिहै।जोमुनिकैकविक्रम्मकहैंमुनिकोमनसाअनुरागतिहै।जोलौंछवीललनातुमसोंवहवालनवातनुपागतिहै।तोलौंमयूषपियूषकीऊषकीभूषनकैसेंहूलागतिहै।५५॥किनारीवर्नन॥दोहा॥जरीकारगारवदनवदीधरीछविदेषु॥लसतिमनौविजुरीकियेसारदससिपरवेषु॥टीका॥यहनाइकाकेमुषपरकिनारीकीसोभासषीनाइकसौंकहतिहै॥कवित्त॥आजुमैंनिहारीवृषभांनकीदुलारीउतिधारीअतिमकलसिंगारतनसाजिकै।जगमगजोतिनवजोवनकीदेषतहींडगनिकोगयोदुषदंदसवभाजिकै।तनसुषसारीतापैकंचनकिनारीगारेआननकचहूकीदफवीछविछाइकै॥सरदकीपून्योंकेसुधानिधिकेआसपासुमानौंरह्योदामिनीकोमंडलविराजिकै॥९६॥मोहवर्नन

७३ ॥दोहा॥ नासामोरिनचाइद्रगकरीक
काकीसोंह॥कांटलोंकसकतहियेंवडी
कटीलीभोंह॥टीका॥ यहनाइकाकीभों
हनचाइवेकीचतुरदषीसोनाइकुसषी
सोंकहतुहैं॥कवित्त॥मोतननहेरिपरोसि
निसोंचतरानलगीवनितारसछाकी॥येक
रतीरतिकोइतिहोतिनवाकीनिकाईनषेस
मताकी॥नेंकचटाइउचाइकेंआठनचाइ
करीद्रगसोंकहकौ की॥वाछविकीवकटी
लीसीभोंहैंकरजेमनसूलसीसालतवाकी
॥९७॥अथनेत्रवर्ननदोहा॥वारोंवलि
ताद्रगनुपरअलिषजनमृगमीन॥आधी
जिहिं डीठिचितोनौंकियेलालआधीन॥टीका
यहनाइकाकेनेत्रनुकीअधषुलीचितवनि
देषिनाइकुआधीनभयोसुसषीनाइकसों
कहतिहैं॥कवित्त॥कारेरूपकारेरतना
रेअनियारसोहैसहजेदरारमनमथमत
वारेहैं॥लाजभरभरेमोरचापलनिहारेत

रसोचकेसढारप्याररूपकेउप्पारहो॥श्री
धीचितवनिमेंआधीनकियोलैरीहरिटो
नेसवसीकरकेलीनेथेनिहारहै॥कमल
कुरंगमीनषंजनभवरवृषभांनकीकुव
रिनरनैंननिपैवारहो॥६॥दोहा॥ चम्च
मालचंचलनयनविचघूंघटपटझीना॥मा
नहुसुरसलिताविमलजलउछरतजुगम
मीन॥टीका॥यहनाइकाकेनेत्रनकीसो
भासषीनाइकसोंकहैनाइकुहनाइकासों
कहैंसषीसोंकहै॥कवित्त॥ रूपकीरसा
लश्राजुदेषीव्रजवालयककेतीसोभास
नीवाकसोनेसमरीरमें॥टाचोनटरतुव
हभाउमाहियेलक्योहूवेठोमुषठोपिगुरलो
गनकीभीरमें॥कहैकविछमअतिचपल
विसालवाकेलोचनजुगलझलकतमी
नेंचीरमें॥कोनमनुहाइछविनिरषिश्रा
धीनचिविमीनउछलतमानौसुरसरिनी
रमों॥६॥दोहा॥करचाहसोंचुटकिकेष

रउडोहमेंन ॥ लाजनवायेंनरफरतकर
तखूंदसीनेंन ॥ टीका ॥ यहनाइकाकेनेत्र
लाजओंरचाहतेदोउनकेवसखूंदसीक
रतहेंसुसषीसोंनाइकसोंकहतिहेंनाइ
काकूकहसषीसषीकूसोंकहे ॥ कवित्त ॥
नेंननवनागरिकेतरलतुरंगअंगछवि
कीतरंगरंगनिधरकधारेंधरें ॥ मदनुमवी
नतिन्हेंफेरिवोसुधावतुहेंघूंघटकीओ
रअ्रेसोकोंतिगुकरेंकरें ॥ कीनेंचाउच्या
उगीसोंचुरकिचपलहोतषरहीउजेंहेंते
हीउमगभरेंभरें ॥ लाजवागवसयतर
फरातत्तांईभरकरतद्रुषुदीसीपगहरेंह
रें ॥ २०० ॥ दोहा ॥ सायकसमघायकनय
नरंगेत्रविधिरंगगात ॥ ज्ञषोविलषिदुरिजा
तजललषिजलजातलजात ॥ टीका ॥ यह ॥७
नाइकाकेनेत्रनुकीसोभासषीनाइकसों
कहेंनाइकुनाइकासोंकहेंसषीसोंनाइकु
कहे ॥ कवित्त ॥ नाइकसेघाइहेंतीषनत

रलइगसेतस्यामअरुनविधिरंगगातहैं
कहैंकविकरुप्रजाकेउरमैंमिदतनाहिंसु
धिनरहतगातघूंमिघनतौतहै॥येतेपर
भायेहैविषमविषअंजननसायाहैतेनेंवि
सेषविथाउरसरसातहै॥सफरीविलोकि
जलविलखिउरतिइगभरतकतविपल
घजातजलजातहै॥१॥दोहा॥वरनौंन
सरमैंनकेअसरछुमैंन॥हरिनीकेनैंना
नुतेहरिनीकयननन॥टीका॥यहनाइकाके
नैनुकीसोभासषीनाइकसौंकहतिहै
कोरिकि॥१॥चेरकितघेननकमरकोनैंल्उ
फनपुंजअमाकानरअरिचकलगन
है॥१॥सोहितविसालवेरसालसालसौंनि
नुकोदपमनुहरनकरतचितचेनुहाने
पलकलाकुवरनीततमदनचारुपक
निकरऔरदेवेअनननैनहैं॥कोनहुय
दंदननीकेवृषभानुनंदनीकेकहिनीकेन

७५॥ नहैं ॥ २ ॥ दोहा ॥ सरासिंगार मंजन कीये
कंजन मंजनु दैन ॥ अंजन रंजन हूं विना
षंजन गंजन नैन ॥ टीका ॥ यह नाइका नै
चनु की सोभा सषी नाइका सों कहै नाइकु
नाइका सों कहै सषी सों कहै ॥ कवित्त ॥
कंज कुरंगनु मानन गंजन पी मन मंज
नहैं अनियार ॥ षंजन मीननु के मद मंज
न अंजन हूं विनु ये कजरार ॥ लाज समं
जनु सील है सील रस रंग भरे विधि मैंनसु
धार ॥ कहा कहैं उपमा कहीयै तिय या
जग मैं दृग रंग उजार ॥ ३ ॥ दोहा ॥ जोग जुग
निसि बय सधैं मन महा मुनि मैंन ॥ चाह
त पिय अद्वैतता सबनु कोननु नैंन ॥ टी
का ॥ यह नाइका के नैनु की सोभा अरु
तरुनाई कों विलासु पिय की चाह सषी ना
इका सों कहति है सषी सषी सों कहैं ॥ क
वित्त ॥ लीनो उपदेस महामुनि मीन केतनु

कोजोगकलाकुसलविमलविलसतुहै
ननमनमोहनसोयकभयोचाहतहैको
ननकोस्रवतजुगतिजोतिवतहै।कस्म
श्रोनप्यारकोदुहाईजिन्हदेषतहीविरह
कलेसदुषसकलनसतहै॥सरलहेसु
भाउउरमोकथरेस्पामछविप्यारीतरनैं
नमनहरतमहतहै॥४॥पुतरोवर्नन
दोहा॥सवश्रंगकरैराषीसुघरनाइक
नेहसिषाइ॥रसजुतलतिश्रनंतगतपु
तरीपातुरराइ॥टीका॥यहनाइकापुत
रीनकोसोभाश्ररुसनेहकोश्रधिकाई
लषीनाइकसोकहतिहै॥कवित्त॥चारुश्र
भाश्रेपलकेमलकेमृदुपानपुटीपहें
सुधरीहै॥नाइकनेहसिषाइमवरसभद
सधईश्रधीनकरीहै॥कसकरेंश्रति
चाइनिमोगतिलेतिमनेचहुभाइभगी
लेतरिकाइमनेंश्रतिचातुरपातुरा

७६॥

॥दो०॥लागतकुटिलकटाछसरक्यौंनहोइबेहाल॥ कढतुजुहियहिंदुसालकरितऊरहतनटसाल॥ टीका॥ यहनाइकाकनेत्रनाइकके हृदमेंचुभेहै सासषीनाइकासांकहतिहैनाइकुसषीसांकहैसषीनाइकासांकहै॥कवित्त॥ भिदंमृधतीरततोंतनकोंवढावैपीरजांनीयहैबातजियसकलउरातहै॥लागेब्रजनागरिकेकुटिलकटाछसरक्योंनहोंतिविकलविलाससबगातहै॥ विक्रमनिधांनत्रंनिपारथकेयांन॥ तेरमरजांनइनकेश्रनोंषेउतपातहै॥ दषीयेंनघाउउरकढनेउसालकरियेतपरदषीनटसालरहिजातहै॥ ६ ॥नासाबेधवर्ननदोहा॥ वेधतश्रनियारेनयनचधतकरिनिनषधु॥ बरबटवेधतुमोहियोंतोनासाकोबेधु॥ टीका॥ यहनासाकवेधकीसाभानाइकुसषीसांकहतुहै॥कवित्त॥ श्रनियारने

७१॥

ार'

इकासों ॥ कवित्त ॥ आजुसिंगारचन्योंतिय
नरोंजगमगजोतिसमूहकरें ॥ दपत
आरसीवारहींयेहरिकोंहरियंवानहरें॥
चसरिफमुकतीकोप्रभाअतिउजलआं
निपरीअधरे ॥ होअंतचूनीलगंयेमृग
लोचनिकोंपटसोंअंचयोछिपरें ॥ ८
नासिकनैन दोहा ॥ इमाई हिं वेहीमोलसु
गथ्रत्नथगरविनिसांक ॥ जोहिपहिरें
जगइगग्रसतिलभतिहसमानसीनां
कानीका ॥ अर्थनाइका कौनथकीसो
भासषीकहतिहैं अन्योक्तिकवितहर
सोंचनैं ॥ कवित्त ॥ सुरनिसमेतनाकथ
हीतेंकहतमुकत निजुलमुकतपुरीसोंद
रसतिहैं ॥ कहेंकविकमनमोहनकोंन
मोहिवेकोमोहिनीकोसिद्धिमानोसोभा
सरसतिहै ॥ तोपहिरेतेजगनयनग्रसति
सोभासरसतिअंसमानोंनासिकाहस
तिहै ॥ अहेनथउरमेनिसंकनगरचकोर

ईमुकताकेगथसहतिलसतिहै॥२८
नीकवर्नेन दोहरा॥ जटितिनीलमनि
जगमगतिसीकसुहाईनाक॥ मनोअ
लीचंपककलीवसिरसलेनुनिसांक॥
॥टीका॥ यहनाइकाकीनाइकमेसींकहै
ताकीउपमाकविउक्ति॥कवित्त॥ पूरन
मयंककेकिअंकमेलसतुकीरु नेकनिर
षतुहीरुरितुचितचतुहै॥ प्रफुलितुपंक
जपेसोहैकरहाटकिधौंतिलकसुमनसु
बसोरभसमतुहै॥ नीलमनिजटतछवी
लीतरीनाकपरसीकयोंलसतिमानो
सोभाकोनिकतुहै॥ मरंजोनमुकलित
चंपककीकलिकापेवोंसोअलिसावकु
निसकरसलेतुहै॥ ०॥ लोगवर्नेन॥ दो
हा॥ ॥जदपिलोगललितोतऊतूनपह
रिइकआंक॥ सदासंकवढीयेरहैरहैचढी
सीनांक॥ टीका॥ यहनाइकाकीनाकमे
[illegible]

नाइकासोंदर्षेकहतिहैं ॥ कवित्त ॥
किधोंहैवदनछविदीपकोसुमेरजाकी
जगरमगरजोतिपूरनप्रकासिका ॥
किधोंकविकुलचारुचंपककीकलि
काहैसहजसुगंधनिकसतिजाकेस्वा
सिका ॥ जदपिलवंगआतिललितोंस^
तिलकतूंमतिआहिरिडरपतिउरदासि
का ॥ मोनकेभरमलिपेमोहनविलोकि
रहमृगनेनीनिरषिचठीरीतरीनासिका
॥ ११ ॥ इतिनासिका वर्णन ॥ दोहा ॥ लसतसत
सारीदर्योतरलललरयोनाकोन ॥ परयोमनों
सुरसातिसलिलरविप्रतिविंववहोन ॥ ती
का ॥ यहतस्योनावनेनहेसषीकोवच
नसषीसोनाइकहूकोवचनसषीसोक^
विहूकोउक्तिहोइ ॥ कवित्त ॥ छविसोंनिह
रीवृषभांनकीदुलारीआजुसकलसिंगा
रसाजचम्योहैसुठंनको ॥ कहैकविकुल

वारुप्रभाकीनिकाईलषेगरवविलति
सुरपुरवनितानिकौ॥सोहुतुसुदसञ्चति
फोनेसेतसारीहयांतरललस्योनाफूल
कतुवाकेकानेकौ॥ मेरजाँनदेवनकौरु
लमलातुपबीयजूपल्योहैप्रगटप्रति
विवभानकौ॥२१२॥कर्नभूषनवर्ननं
दोहा॥ सालतिहैनटसालसीक्योंहूनि
कसतनांहि॥मनमथनेजानोकसोपु
भीषुभीजियमांहि॥टीका॥ यहनाइका
कौषुभीकीसोभानाइकुसषीसोंकहतु
हैं॥कवित्त॥राधिकाप्यारीकेश्रांननपछ
वितीनहूलोककीश्रोनिगुभीहैं॥ मेंनिरु
षीजबतेंतबतेंमतिमेरीलुभाइरहीहि
चुभीहैं॥रूपकेवोहिथकांनमैंवाकेवि
राजतिवापश्ननपलुभीहैं॥ सालतिहै
सुमनोजकेनजकीनोकामनमनोउरमा
[illegible]॥२१३॥हरिवर्ननवर्ननं॥दोहा॥तं

कांन॥लालला लचमकतचुनीचोंकाचि
न्हसमांन॥टीका॥ यहतरिवनकीसोभा
सषीनाइकसोंकहै नाइकासोंकहै अरु
नाइकुसषीसोंकहै तोरूपगर्भितोहोइ॥
कवित्त॥ आजुकीवनकवरनतनवनत
तरीछविकीछटानुकीघटासीउमगति
है॥दमकतिसरससिंगारआपजोवनु
कीजोवनकीकांतिजगजोतिसीजगति
है॥कनकतस्यांननुकोललितकपोल
निकीदुतिमेंसमाइगयोअदभुतगतिहै
रूपभांनप्यारीकी सोचारुचमकतियतौ
लालुलालचुनीचोंकाचिन्हसीलगतिहै
मुक्तावर्नन॥ ॥दोहा॥ लसोमुक्तासांति
यश्रवनयोमुकतनदुतिपाइ॥मानोंपर
सकपोलकरहस्वेदकनछाइ॥टीका॥य
हमोतीकोमुक्तानाइकाकेश्रवनमेहैसो
कीसोभादेषिसषीनाइकसोंकहतिहैअ
पनीनाइकाकेकपोलपैस्वेददेषिसषीना

इकसोमुरासाकोंवर्नंनुकरिकेहैंतोलछि
ताज्ञानायें॥कवित्त॥आनुनचनागरी
कीआगरीविलोकीछविदेखिकेकोनेंन
ललचाइललकतहें॥कहेंकविकुसवही
वांनिकविलोकटगारीरूपगेतवलेलग
तपलकतहें॥तरुनीकेश्रवनश्रमोलमु
कतापलकेकरनाभरनश्रेसोत्र्प्राभाछ
लमुकतहें॥मरजोंनपरसिकपोलइनहूं
केउरउलह्योपसेदतेईवूंदझलकतहें॥२५
मुसिकानवर्नन॥दोहा॥नखसिखरूपभरे
खरेतोमांगतमुसकांनि॥तजतनलोभन
लालचीयेललचोहींवांनि॥टीका॥यहना
इकाअथवानाइकुमुसिकानिदर्षांचाहत
हेसुअपनेनेत्रनुकीआसक्तिकहतुहै॥
कवित्त॥देषतहीअनमेषरहेंउमडेसपरे
नविचारलगोहूं॥रावरेरूपअनूपसोपूरि
रहेंजउनषनसिषलोंहूं॥मांगतहेंइन
नेपरतोमधुरामुसकानिअधातनसो

हूं ॥ नैंनभयेअतिलालचीयेललचांनिकी
वांनिनछांडतकोंहूं ॥ १६ ॥ नायकवर्नन ॥
दोहा ॥ नैंकहसोंहींवांनिनजिलष्योपरतु
मुषनीठि ॥ चोंकाचमकनिचोंधिमेंपरी
चोंधिसीडीठि ॥ टीका ॥ यहअकारनिहा
सीजांनिगुरुसषीनाइकासोंसीछाकप्रसं
गमेंचोंकाकीचमककीवडाईकरेअथवा
नाइकुहैनाइकासोंकहैतोसंभवें ॥ कबित्त
सीसफूलदमकतुकितिलकुफलमला
तुजोतिकोंसमूहजगमगतुअमंदुहै ॥ भा
लकीतिलकचारुफलककपालनुकीउम
ग्योपरतुअतिदुतिनकोवंदुहै ॥ हाहावलिनें
कमुसिकांनिकांनिवांनिनजिचकितहैरह
तुचतुरनदनंदुहै ॥ चोंकाकीचमकहीचं
चनुचषचोंधीहोतिचाह्योनपरतुनीके
चारुमुषचंदुहै ॥ १७ ॥ छैलवर्नन ॥ दोहा ॥
जरठाडीगाडगहिनैंनवटोहीमारि ॥ चि
लकचोंधमेंरूपठगुहांसीफांसीफीरि
डा

नाइकुंना
टीका॥ यहठोरी गाइकौंवनेनु नाइकुंना
इकासौंकहेसंषीसाकहे सषीनाइकासौं
कहो॥कबित्त॥ कसनुकेवनके उपकूल
नहींभ्रकुटीगिरिश्रारविचारां चारुलिला
रु सिंगारकी चाधिमेहतु प्रचंड ध्यानहिहा
र॥फांसीगरेसुसिकानिकी यांरिकेठाडीकौ
गाइकुश्रावागरिहारी॥ प्यारीमहारूगुनेरी
सरूपहृयालजिनेन वरोहिनुसारे॥१८
लीलावर्ननदोहा॥ ललितस्यामलीला
ललनचढोचिबुकछविइन॥ मधुछाक्यो
मधुकररूपस्यांमनोंगुलावप्रसूंन॥टीका॥
यहनाइकाकीठाडीपेलीलाकीसाभासषी
नाइकसांकहतिहे॥कबित्त॥ कुंकुमगारि
कियोमनोंहहुमहासुकुमारसुगंधकोंभे
ना॥रूपसुधाभस्योचेहसोंश्रानुपीतव
मनकोललचोंना॥ठाडीकीगाडमेस्यां
लबिंदुनिहारतरूसंषकेमनमोंना॥
मधुपानगुलावकेफूलमेंमत्तपस्यांम

भोरक्षीनां ॥ अंटवर्नन ॥ दोहा ॥ षीन
मतिगोरोगोरधसतिपानकीपीक ॥ मनो
गुलीबंदलालकीलाललालदुतिलीक
॥ टीका ॥ यहकंठवर्ननहै सुकुमारसषीन
कसोकहै अथबानाइकासोकहै ॥ कवित्त
प्यारमेंप्यारीतिहारीलषीनषनेसिषलों
सुनिया ॥ ईभरीहो ॥ केसरिकीसुकुमारि
मनो छबिपुंजसो आपिविरंचिकरीहै ॥
गोरीकीगोरगोरेमनमोहतिसोहतिपीक
कीलीकभरीहै ॥ चारुगुलीबंदलालकी
लालमनोदुतिकोअतिलीकपरीहै ॥ २०
कुचवर्ननं ॥ दोहा ॥ कुचगिरिचढिअति
थकितव्हैचलीडीठिमुषचाउ ॥ फिरिनटरी
परियरहीपरीचिबुककीगाड ॥ टीका ॥ यह
अंगदपनदबल दृष्टियाडीकीगाडमेंजा
इपरीसुटरतिनाहीसुनाइकाअपनीअ
ष्यानाइकासोकहै अथवासषीसोक
है ॥ कवित्त ॥ डीठिनदीत्रिवलीतरनीठि

टीका॥ यह कंचुकी के बीच कुच सो भाउ प
मानेहे तिन की अभाद पिनाइ कुनाइ कासो
कहै सषी नाइका सो कहे नाइक सो कहै
कवित्त॥ कंचनवरन मनहरन अगोल
गुरु वेस गोल गोरसी ससपांम ताधरत है
उन्नत करर परचीन नेतुनाई मारमदनव
सोकर सम मन को हरत है॥ कुचमीन चीर
सत कंचुकी निलो छोमां मझ प्यारी यह राय
ते उरत उघरत है कहै के विक्रम जेसे सुक
विकु आ कतु मे अरघ उमग डी छि प्रगट पर
तु है॥ २२३॥ उरवसी को लक्षण॥ उरमांनि
क की उरबसी डलेहु परतु डगदागु झलक
तु बाहिर भरमनो तियाहि यको अनुराग
टीका॥ यह उरवसी को सो भा सषी नाइ
का सो कहतिहे पा के अनुरागकी पूरनता
प्रगट करनिहे सषी नाइका सो कहे तो ति
पपहु सवोध लुहोइ नाइका लछिता जानी

॥ कबित्त ॥

यों। आनुकिनिकाई वरनलनबैंनतिसों
पैंरूपकीतरंनिश्रनेदुवरसाऔहं॥ श्रंग
श्रंगश्राभूषनजोतिजगमगैंश्रेसोंतोंव
नावरतिरंभाहूनपायोंहै। मांनिकर्किल
सीउरवसीतियउरपरद्रगनिकोंदुषदंदु
दषतनयोंसोंहै। श्रंगश्रंगश्राभूषनजो
तिजगमगहोतिश्रेसोंतोंवनावरतिरंभा
हूनयायोंहं॥मांनिककीलसीउरवसीति
यउरपरद्रगनिकोंदुषदंदुदषतनसायों
है॥मेरजोंनपूरनकैश्रंनरकोंश्रनुरागुहियें
भरिवाहिरछलकिछविछायोंहैं॥२३॥हा
थवरनेनदोहा॥ वडकहांवनश्रापुसोंगर
वगोपीनाथ॥ तोंवदिहोंजोंराषिहैंहाथनु
लषिमनुहाथ॥टीका॥ यहनाइकाकोंहा
थकीसोभासषीनाइकसोंकहतिहै। क
वित्त॥ चोंहैंल्यैरिनुकोंछविपैंरदहोतिरतों
पलहूकीरजाई॥कोरिफरीनुहूंथेंसुधरी
श्रंगुरीनुभरीश्रतिकोंमलताई।राषिहैंहा
थनथेलीकेहाथलषेंमनुतोंवदिहोंचतुरा

ज्यौ॥

ई॥रूपसुधानुकौअपनेमनस्यांमनि
संकुकरैगरूवाई॥२५॥दोहा॥नषरू
चिचूनुरेंडारिकेंठगुलगाइनिजुसा[illegible]र
सोराषिलठिलैगयौहथ्यारथीमनुहाथ
॥टीका॥यहहाथकीसोभादेषिनाइककौं
मनुयाकेहाथनाहीरह्यौसुनाइकुआप
नेमनकीगत्तिसषीसौंकहहैनाइकाहूसो
कहेहै॥कवित्त॥बूंदलसेमहदीकेसुरंगउ
लीअरुनाईकेरंगरचेके॥रषवसीकरमंत्रु
दिषाइकेसाथलगाइलियोअपनेकोंचारु
नषछितिचूरनुडारिअधीनकियोवहुभां
तिसुरैके॥राषहूपेनरह्यौमनुहाथहथा
हथीहाथगयोसुमिलैके॥२६॥अथगुरीव
नैनसोहा॥गोरीछिगुनीअरुननषछल
स्यांमछविदेइ॥लहतुमुकिरतिपलकुम
हलैनचवैनीसइ॥टीका॥यहनाइकाकी
अंगुरीनुकीसोभानाइकुकहतुहैनाइका
सों॥कवित्त॥कोंवरीगोरीलसैछिगनीअ

कुलाल प्रभान षकी सुषदैनी ॥ ना ...
मछला की पचीछबि नैननु कों ...
ति श्रैनी ॥ लोचन संतत ... ति मुक्ति ...
षकदेषत ही मृगनैनी ॥ ना ...
न्तिसांध केतोर ... सनको ...
२७॥ लो रवननंद ... बदन ...
चकोर ... ब ... 
लुरि ... लोर ... 
हीको॥ यहनाडको ...
नेदेषो ... 
नश्रानुलषो ...
हीचढ़ ... 
यांभुजा ... 
दितांको ...
भाभुजभ ... 
विलाकन ... 
र ... 
तपर ...

४॥ लषिललनाकीलौंट॥टीका॥यहनाइका
कीलोटकीसोभानाइकनैदषीहैसोसषीस
षीसोंकहतिहै॥कवित्त॥जातिहींबालगली
मेंअलीसंगआवतमोंरनदष्यौंअगोंटै॥
न्योंकीयेंघूंघटहीछुउठाइकेंत्योंउसरीपट
कीगुजरौंटै॥सोछविमोपेकहीनपरैकछु
कारिनुकारिरै:लुटेसुषमोंटै॥लालल
ष्यौंअतिमाइहियेंनवनागरिकीनिरषीज
वलौंटै॥२८॥दोहा॥लगीअनलगीसी
जुकरिकरीषरीकटिषीन॥कियेंमनोंवे
हीकसरिकुचनितंबअतिपीन॥टीका॥यहनें
इकाकेअंगजोबनकेआयतेघटिबढिकें
यहैसुसषीनाइकसोंकहतिहैकविहकीउ
क्तिहाइ॥कवित्त॥रूपसांचेढारेराचिप्रचिकें
सुधारेविधिअंगअंगसकलसुदेसरसभी
नेहै॥तापेंतरुनाईनेंवनाईकछुऔरवि
धिषीनकरपीनअरुपीनकरषीनहै॥छी
लिछांडिलांकुअरुसुछिमकोंराष्योंताहि

लचकतजानिकेंजननश्रेमकीनेहें॥क
रिहांकीकसताकीसाधिकेंकसरिमांनों
उरजनितंवश्रतिपीनकरिदीनेहें॥२५॥
लहलहाततनतरूनईलचिलगलोंलफि
जाइ॥लगेलांकलोइनभरीलोइनलेत
तलगाइ॥टीका॥यहनाइकाकीजुसा
भादषीहेसोनाइकुसषीसोंकहतुहे॥क
कचिन्न॥लकलकेलनमेंलहलहातिता
तरुनईताकीनइअरुनईरहीहेछविवि
छाइकें॥कुचनुकेभारचपिलगलोंलप
तिजवचलतिगयेंदगतिरहतिसुभाइकें
कहेंकेविकसनषसिषलोंलुनाईभरी
मांनोंमहामाहनीनेदेहधरीआइकें॥म
रमलसतुश्रतिचारिकोसोंश्राकुश्रेस
तगलांकुवारीलतिलाञ्नलगाइकें॥२१
दाहा॥वुधिश्रनुमानप्रमानश्रुतिकि
यंनीठिठहराइ॥सूछमगतिपरब्रह्मकी
अलषलषीनजाइ॥टीका॥यहकटिवर्न

हि

लिकै ॥ मानिकपवारी विवाकेसेपटतरहो
तऐसीदुतिलहजउठतिजालूजालिकै ॥
चाइनिसैपाइनिमहावरलगावैकौचाई
रकुरांइनिनिकटकोनुकूलिकै ॥ कहेकावि
कस्मचारुचारनवैलोकतहींनाइनिवि
चारीगडीसबसुधिन्लिकै ॥ २३५ ॥ दोहा ॥
अरुनवरतरुनीचरनअंगुरीअतिसुकुमा
र ॥ चुवतिसुरंगरंगसीमनोंचपिविछिय
निकेभार ॥ २३६ ॥ दोहा ॥ पहचरनांगुलीन
कोसोभानाइकुसखीसोंकहतुहैनाइकाहू
सोंकहतुहैनाइकाहूसोंकहै ॥ कवित्त ॥
मंदगतहरेकलहंसनलहनकलसमद
गयंदकोगरबगरतुहै ॥ कुसमप्रानप्यार
चारुचरनविलतरेयाकेजलजसमूहतजि
लाजहियरतुहै ॥ अतिसुकुमारतरुनीकी
पगुअंगुरीलुभैसेअरुनाइकोउजासुउध
रतुहै ॥ मारजोनपरकोविछियान
कोअपारभारताहीतेंअगिरंगुलिचुसौ

परतुहै॥ ३६॥ दोहा॥ पगपंगमगग्रग
मनपरेनचरनग्ररुनदुतिजलि॥ ठौर
ठौरलषीयतउठदुकुपरयासेफूलि॥ ऐसा
यहनाइकाकेचरनमेंग्ररुनाइकीग्रधि
काई है सोसषीसोकहतिहैनाइकुनाइ
कासोंकहैसषीनाइकासोंकहैसषीसों
कहै॥ कवित्त॥ पलिकातेउत्तरिमवीन
प्रानप्यारीधामधरनीमेंसहजचलतिमं
दगतिहैं॥ कछमानप्यारेग्रैंसोकौतिक
निहारेनवचरनग्ररुनदुतिग्रतिउमग
तिहै॥ जहीजहीग्राडीकविपरतिग्रडो
गीग्रानितिनकीहलकजगजोतिसीज
गतिहै॥ लहीलहीदुपहरीयालषीयतकों
नकीनमतिदेषेप्रसोपगतिहै॥ ३७॥ दोहा
साहतग्रगुरापाइकेग्रनवटजस्योंजरा
इ॥ जीस्योंतरवनदुतिसुढरिपस्योंतरनिम
नोंपाइ॥ टीका॥ यहनाइकाकेग्रंगार
कोग्रारंभहैसुयकहीग्रनोटपहस्योहै
ताकीउपमासषीनाइकसोंकहतिहै॥

अथवा सषी सों कहियो संभवे तु है ॥ दो
हा ॥ प्यारि सिगार सवांरन वैठी अंचा
नक आयो तहां दधिदानी ॥ ज्यों हि कुती
अरूप्यों हि रहिनिच ना गरि स्याम के रूप
लुभ्यानी ॥ नीकों जराउ अनोट ल सै प्रग
के अगुठा उपमा सुवषानी ॥ या ट्टपर्यो
हे मनो रवि आइके तेज को हांनि तुल्यो ना
सों मानी ॥ ७ ॥ अथ सुकुमार लाषन ॥
दोहा ॥ सरस कुसम मडराति अलि निउ
कि रूप टल परातु ॥ रसति अति सुकुमा
र तनु परसतु मन न पर्‌यातु ॥ टीका ॥ यह
सुकुमारता अधिक है विसष के अरुको
ऊ क सषी नाइक को अमग्यन मिल्यों जा
नति हे सु नाइक की सषी भ्रमर के प्रसंग
करि अन्योक्ति सो वाको भ्रमु निवारन क
रति है ॥ वाटिका ॥ सुष को सिगार उपवन की
सिगार चार सौरभ विविध उमगतु जा को
गातु है सरस कुसुमनु सरस अति सोभा
सों भ्यों निरषि लुभ्यानो अलि दषें न अघातु

हो। कहै कवि कृष्ण अतिरीझ पग्यो ओमपा
सर है मड रानो न दूपटिल पटा तु है ॥ दरसत
या कों तनु अतिसुकुमार ना तें पग्स नुवा
को मंनु क्यो हूं न पग्यो तु है ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ अ
पन भार सम्हारि है क्यो इहि तन सुकुमार
सूधे पाइ न परत धर सोभा ही के भार ॥
सि कान्ह सुकुमारता है सो सब यों सब यों
निकाय है सुकुमारता ह सोम वा सर्वा मां
नाइ कासों कहति है प्रयोजनु य ... किअप
न पहरतु विलंबु न हो स्यान विनेचुन ...
याते विगिं चलं ॥ कवित्त ॥ विरच्यो विधि चनग
अतिसुकुमार तनु आपु ही निहारि का ...
इ कोस के लिहे ॥ कसि प्रान प्यारे कों मान ...
पहुति गषा मग मन मोले ... न नं निमं ...
है सोभा ही के भार सूधे पग न पग न पग ...
[illegible]
[illegible]
ननु कें भाग या ... [illegible]
[illegible]
मव ... [illegible]

लगैगुलावकीपरिहैंगातषरोंट॥टीका॥
यहनाइकानवोढाविश्रधानवोढानाइ
काहैसयनमैथिरतानाहींयातेसषीऽ
रुदिषावतुऽसयनकरावतिहै॥कवित्त॥
मेवरजीयहुवारश्रहेंनहिमानतितूंवके
हा.. करेंगी॥लतिकरोंटइतेमुरिवयाश्र
रवीरउरकोलोइतेकधरेंगी॥कोमलाश्रा
पनेश्रंगनिहारितवेसुकुमासिसुकोसल
रेंगी॥पांषुरीगातगुलावकीजोंगडिजैहैं
कहूंतोंषरोंटलगेंगी॥२१॥कवित्त॥नज
कधरतेहराहियधरीनाजुककमलावाल
भजतभारभयभीतहैघनचंदनवनमा
..ल॥टीका॥यहनाइककेहृदैमैजुनाइ
कावसतिहैताकीप्रीतिकोश्रधिकारसषी
सषीसोंकहतिहै॥कवित्त॥निजुभक्तिहि
कहितकोकमलापतिसंततचित्तविचारु
करें॥श्रतिचंदनुश्रंगलगावैनहींवहुफूल
निकीनहिमालधरें॥श्ररुजोकवहूंकसिग
रुसजेकविक्रमनऊकलकेंसेपरें॥इहमो

सुफल अब कहैं कवि करम रसज्ञात पुनि
वारीये ॥ अथ ॥ दोहा ॥ दीयौ अरधुनी
चौं चल्यौ संक टु भांने जाइ ॥ सुचिती ह्वै औ
रौं सबै ससि हि विलोकै आइ ॥ टीका ॥ यह
नाइका के मुष की सोभा सषी नाइक सौं क
हति है ॥ कवित्त ॥ पूजि निसा करु अरधु
दीयौ अवनी चौं चल्यौ अलि संक टु भांनें
औरन कौ हु चिलाई मिटै जिन साध उपास
मनोरथ ठांनें ॥ चंद उतौ इत तो मुष चंद कि
तौ विन वै चित सोच समांनें ॥ वे अपने व्रत
पूर करैं जु रही चकि औं चिर दै उखौ नै ॥ ध
प ॥ दोहा ॥ तूर हि हौ हौं स विचवौं च ढिन
अयो वालि वाल ॥ सव हितु विन हौं ससि उ
दै दीजतु अरघु अकाल ॥ टीका ॥ यह नाइ
का के मुष की सोभा की अधिकाई है सु सषी
नाइक सौं कहति है ॥ कवित्त ॥ हौं हीं अय
च ढि हौं ससि दषन तैं सजनी रहि आंगन ही
तिन ॥ और कितौ कछु तौ कछु तौ वनिता
सब दषति चंद उदौ छिन ॥ तो मुष दषि उछ

हभरीसवदें हिगी अद्युमयंकउदविनु॥ औ
रनुकेमूंतिभंगकरंमत्तिहोहिंगोपालकुमा
नेंकर्योकिनु॥ ४६॥दोहा॥कहूंलडेंतडगक
रपरलालवेहाल॥कहूंमुरलिकापीतपरक
हूंमुकटवनमाल॥टीका॥ यहनाइकाकेन
त्रदेषिनाइककीजुदिसाभई सासषीनाइ
कासोंकहतिहे प्रयाजनुकितेरीचाहहेंतें
चलि॥कवित्त॥ तूचितईजवतेंतवतेंउह
भांतिरह्योचितुचतुरह्योहें॥ पीतपटीलकु
टीकितहूं अरुमारकिरीटकहूं विसर्योहें॥ना
डिलीनेंनूलडेंलेकहाकरदेषितोंलालविह
लपर्योहें॥४७॥दोहा॥ पियमनरुचिकौ
वोकठिननतनरुचिहोतसिगार॥ लाषकरो
आंषिनवढेंवढेंवढायोवार॥टीका॥यह
नाइकासिंगारकरनदेषीसुसषीनाइकासों
कहतिहे॥अथवासोंतिकोंअगरदेषिया
केईर्षाभईसासषीसोंकहतिहें याते अप्रम
विलानहोइ॥कवित्त॥वेसोंकुंजसदनविद
लो किनुहेंतुचंमगुलरोनामुमालतुरढतुवा

९०॥ रती॥ उठ्यचलितिहिलिमिलिमांनरगरली
अलीमेरोकह्योमांनिअनगवलिकहारही
पियमदनवसकरि योइहैकठिनअरुत
नदुतिसरससत्तिसाजेऊसिंगारही॥ कहै
कविकछ्मकीजेलाषकजतननतूला
चननवदनवढायेवहवारही॥ ८८॥
मनोरथकोदोहा॥ गहलीगरवनकीजीयेंम
मेंसुहागहियाइ॥ जीयकीजोवनिजेहसो
माहछाहसुहाइ॥ टीका॥ यहसषीकीसि
छाहै॥ अरुजोजेष्टाकनिष्टाभेदमें॥ यासो
नाइकाकोहितुदषिसौतिकहैतोहूसंभवे
ईर्षासंचारीहुहोइ॥ कवित्त॥ अलिहोंसम
भावतुतोइयहैतजिमांनुमहासुषदेहिहमें
कलुवेपानलहैवलिजोवनकोमनमोहन
सोंमिलिक्योनरमें॥ लइवावरीपाइसुला
गसमेजिनयेतोगुमानधरेजियमें॥ सवकी
वहजेठमेंजीवनमूरिसुछाहसुहाइनमोह
समें॥ ८९॥ अथमिलितकोदोहा॥ सघनकुंज
वनघनतिमरअधिकअंधेरीराति॥ तजून

डुरिहैस्यामयहदीपसिषासीजोति॥टीका
यहनाइकुनाइकाकुंजमैनिसंकवैठे॥
सागुरुसषीनाइकसौकहतिहै।याकोदं
पतिवर्ननुकरिसीछाकहतिहै॥अथया
नाइकुश्वेतरंगसषीसौकहै॥क्रियाका
कुंजमैतूलेचलितहैमयाकौकहिवोसं
भवै॥कवित्त॥रैनअंधेरीनट्यौपरंक
रकुंजसवैतरुपुंजनिछाइ॥घंमिघनघु
मडेघनहेंदअमंदभईतमकीमरमाई॥ब
चकसाजिसिंगारकेंजहपिआईयमकि
कोपैंवतुराई।दीपसिषासमदोदानिसा
लेतऊंयहच्यालहुनहुगई॥यथं॥वि
लिवौ॥गीता॥फूलौफालौ[illegible]
सुविमलचिकाम॥[illegible]
लततौहिप्रियापाम[illegible]
सषीनाइकासौ[illegible]
निकाइलैगैतेविक[illegible]
चलोकछुपनकछु[illegible]

आगेरतिनरनीकुलनागेसांचीकहिकोंलें
औमोहहउरधरेंगी॥ फूलीफालीफिरति
सिंगारसजेंसोंतितरीतिनकेगुमानक
हितूंधोकवहरेंगी॥भोरकीतरेयासमद
षियेंगीप्यारीसवहितुकारजिवतूप्यारेश्रो
रवरेंगी॥५१॥सिंगारसोंरोदाहरा॥ तनभू
षनअंजनडगनुपगनिमहावरेरंगु॥न
हिसोभाकोंसाजीयतुकहिवेईकोंअंगु॥
टीका॥ यहनाइकाकअंगकीसोभाविक
सोभासघीसोंकहतिहें॥कवित्त॥सहजअरु
नगुलफनितेंऊचलेछ्टातिनकेनिकरके
हाजावककोरंगुहैं॥ गातकीगुराईआंगेकं
चनकेआभूषनकीकेसलगतरंचसोभा
कोनसंगुहै॥अंगजनहंआजेविनुनेंन
कजरारेदेषेषंजनअनेकनिकोंहातुभ
नुभंगहैं॥तातनसिंगारकधूसोभाकोंन
साजीयतुसाजीयतजोंनिश्चहिवेतहीकों
अंगुहैं॥५२॥दोहा॥ वेदीभालतमालमु
षसीससिलिसिलवार॥डगतजेंआंजेष

डगआंजेंराजैंबरीयहीसहजसिंगार॥टी
का॥यहनाइकाकीसहजकीसोभासषी
नाइकसोंकहतिहै॥कवित्त॥देषीछबिछा
जतिहैललितललिलारपरनीकीनवजो
बनकीजोतिनिरषतिहै॥ सिलसिलस्यां
मसटकारेसुकुमारबारनिमिषिमिवारपां
तिसरनिसरतिहै॥अंतमुहूँअधरअतिअ
रुनतमोरभरेषंजनुसेडगनुमेंअंजनुध
रतिहै॥सहजसिंगारयहीराजतिअपारदुति
सोतिनुकीआंषिनुमैंछारसीपरतिहै॥५३॥
दोहा॥बरसेपातरीकानकीकोंवहोंउवांनि
स्यांककलीनरलीकरैअलीअलीजियजां
नि॥टीका॥यहनाइकाकेमनमैंनाइककों
अन्यासक्तिजांनिभ्रमुभयोहैसुसषीनि
वारनकरतुहै॥कवित्त॥बालकहैकोऊन्य
हीजोआइकैतूमनसारसुचेतिकैजांनि
जांनिपरीषरीकानकोपातरीसिषीकिन
कहिधौंयहवानिहै॥छोडिकैक्योंमृदुमा
लतीवेलिभलीरसरूपरली ॥निह

कंपकिसोरीहरसकेषरेलजायेलाल।
टीका॥ यहसात्विकभावसषीकोवच
नसषीसों॥कवित्त॥ लोपसुन्योवलि
कोमघवातयकोपकेमेघसवेसुकला
ये॥गोधनुकोंरुधस्योजवहींसवकेउरके
भयभूरिभगाये॥यानिडगोडगुलालतलषो
गिरिलोगसवैव्रजकेश्रकुलाये॥गोप
किसोरीनिहारकैकंपितगात्तषरेनदला
लजाये॥२५॥याकोटीका॥ सुरतिनताल
नतांनकीउठांनसुरठहराइयेरीरागुवि
चारिकंगावैरीवोलुसुनाइ॥टीका॥यहसा
त्विकभावनाइकाकोंवचनसषीसों॥श्र
रुसषीकोंवचनुनाइकासोंहोइतोलछि
तासषीसषीसोंकहैतोसभवेपरकिय
कवित्त॥ लेंकरवीनप्रवीनतियासुरसा
धिकेगातुकोठाठठयोहै॥ द्वारपेश्राइके
ताहीसमैमनमोहनकाहूकोनामुलयोहै
तांनकहूंश्ररुतालकहूंसुरतोकछश्रोर

तें औरं भयौ लो। वरी अचौंन कवो लसु
नाइ कैंन दको रागु विगारु गयौ हैं ॥ ५६॥
दोहा॥ ध्यांन आन ढिग आंन पति सुधि
तरहति दिन राति॥ पल कुक पति पुलक
नि पल कुपल कुप सीजति जाति॥ टी
का॥ यह नाइका विरहिनी ध्यांन करि मि
लति है सो तव हो सात्विक भाव हो तु हैं सु
स षी सषी सों कहति हो। सषी नाइका कु
सों कहै तो सभवे॥ कवित्त॥ बाहिर कवि
छुरें गति औसी भई सुव षानि कहो लेमि
की जो। ध्यांन हो ध्यान में चंद मुषी पिलि
आंन पीवें रस रंग में मीजो। रेंन दिना रहें
मादरी वह कों हि बिथा पिनि क्यौं तन छीजें
कंपित हें कवहूं ललकें कव हूं पुलकें कव (
कंपसीजो॥ ६०॥ दोहा॥ स्वेद सलिल रो
मांच कुस गहि दुलही अरु नाथ॥ हियौ दि
यौ संग माथ कें थेलें बाहीं हाथ॥ टीका
यही विवाह समें यदारून के अति सनेह के

अधिकारतेंसात्विकभावभयोसोसषी
सषीसोंकहतिहैं ॥ कवित्त ॥ मंदपमंद
लोतीरथसोधिकेवेदविधानुसोंदानुदि
योहै ॥ स्वेदभयोसोईनीरुनयोउनहैपु
लकैंकुसपुंजलीयोहै ॥ मैंनुसुनिहुप्र
योगपसौरसकेलिहियेंअभिलाषकि
योहै ॥ दोउनलैंअपनोअपनोयोंदियो
हथलेवाईहाथहियोहै ॥ ६१ ॥ दोहा ॥
तच्चोंआचअतिविरहकीरह्योप्रेमरस
भीजि ॥ नैननुकेमगजलुवहैहियोपसी
जिपसीजि ॥ टीका ॥ यहनाइकाअथवा
नाइकुवियोगतेअसूवावहतिहैतिनकै
उत्प्रेक्षाकरतिहैसोसखीसोंकहैसषीस
षीसोंकहै ॥ कवित्त ॥ जादिनतेंनवनाग
रिकोंमनुनंदकिसोरकेनेहगह्यो ॥ ताद
नतेंदिनरैनढरेअसूवानिकोयहभेदु
लह्यो ॥ आचतच्चोंविरहानलकीहित
केरसमैंअतिभीजरह्यो ॥ नातेपसीजप

सीजहीयोंविपनेंननुकेमगनीरुवथ्यों॥ २४

दोहा॥ मेंयहलोहीमेंलषीभगतिअपूरववाल॥ लहिप्रसादमालाजुभोंतनुकेदेवकीमाल॥ टीका॥ यहसात्विकभावसषीकोवचनु नाइकासोंपरकियालछिताहोइ॥ कवित्त॥ कोरिकवारिनपेंमपगीरगेललनकेरगलालभईहोंमेंनिरषीयहलोतनअजुअपूरवभक्तरसालभईहोंमालप्रसादकोंपावनहींसबदेहकदेवकीमालभईहे॥ ६३॥ नाइकाकोवचनसषीसोंदोहा

॥ होरीनाईसुननकीकहिगोरिमुसकाति॥ थोरीथोरीसकुचसोंभोरीभोरीवात॥ टीका॥ यहनाइकाप्राढानाइककीजुचशटतषीहेसोसषीसोंकहत्तिहे॥ कवित्त॥ जादिनतेंवहसांवरोनेंसुकनेंनमिलेसुसिकाइगयोहे॥ तादिननेंकविकध्मकहेमनुवांहिकेलाथविकाइगयोहे॥ थोरीसीलाजगहेरहेनचोकनी

गयो है ॥ कौन तु कौं अब यवाति यकी सुनि

वई की ढे री लगाइ गयो है ॥ ६४ ॥ दोहा ॥

जो लौं लषै न कुल कथा ढिक तौ लौं ठह

राइ ॥ दषें आवत देषही क्यों हू रहै न जा

इ ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रोढा अपनी ड र

तासषी सौं कहति है अरु नाइक कौ स्वरूप

असौ सुंदर है सो दषै तें क्यो हू रह्यौ नाहीं ज

॥ कवित्त ॥ जो

लौं नाइका कौं वचन सषी सौं

लौं न डीठि परै मन मोहन है तौं तु वधा सषी तौ

लौं सयान है ॥ तौ कहु दानि पतिव्रत कौ क

रिलै कुल कानि कथा केवषान है ॥ तौ कहु

दानि पतिव्रत कौ कर लै कुल कानि ॥ लोच

न क्यों हू न रोकि रहै जब देषति वा मृदु मूरति

कौ न्हहि ॥ देषै विना न रहौ परै क्यौं हू मेरा

ही ॥ ६५ ॥ दोहा ॥

चौं कि निसां चुके मानहि

न सब लोक सु कीर रह्यौ वस करि लीनौ म

र ॥ भेद हिंदु सार कियौ हियो तन न दुनि भ

सार ॥ कवित्त ॥ यह नाइका कौ न न दु नि

नाइकुसषीसोंकहतुहैं।कवित्त॥राधि
कारंगभरोंकोमनोंविधिलीनहूंलाककों
रूपदिषायोई॥लाहिअलीअवलोंकन
हांविविनेनतुप्रेमपियूषपियोई॥जद्द
पिकेतरह्योंकसुकेंधारिकेंअलिधीरतुम्हे
रोहियोई॥तद्दपिवातनकोउतिभेदके
मारनेंमेदुरासकियोई॥६६॥दोहा॥
तोतनअधिकअनूपा॥रूपलग्पोसवजं
ग्रातुकें॥मोदृगलागरूपद्रगनिलगीअ
तिचटपटी॥२॥तानाइकाकरूपसोंनाइ
ककेनचलगेहैंसोअपनेनेत्रनकोंलल
कनिकहतुहै॥नाइकाकोवचननाइकासों
सुंदरताकोंतुहींपरमामधितरनिकोउनि
पोइलुपली॥कोरमनोरमनोअतिहूंपु
रराधिकेतासमहोइजुहली॥तोतनसों
लुनाईकीषांनिलग्योंतिहूंलाककोरूप
वेली॥त्योंतिहूंरूपलगमनेनलगीम
मनेननित्योंनलवेली॥ ६७॥दोहा॥

सहितसनेहसकोचसुषवेदकंपमुसिकां
नि ॥ प्रांनपांनिकरआपनैपांनधरमोपं
नि ॥ टीका ॥ यहनाइककोपांनदेतनाइका
कैंसात्विकभावभयो अरुनाइककेप्रांन
वाचिहसनिकैदेषिविवसभयेसुसषीसों
नाइककहतुहै ॥ कवित्त ॥ वामृगलोचनि
कैसबअंग अनंगविलासवसीकरहै ॥
स्वेदसकोचसनेंकविक्रमसनेहभरसुष
पुंजघनेरे ॥ कंपतगातकछूमुसिकातच
ठाइकैभौंहविलोचनफेरे ॥ मोकरपांन
येहितसोंउनिप्रांनलयेअपनेकरमेरे
६८ ॥ दोहा ॥ ऊंचचितेसराईयतुगिरहक
बूतरलेत ॥ झलकतडगमुलकितवदन
तनपुलकतकिहिहेत ॥ टीका ॥ यहना
ककोकबूतरदेषिनाइकाकेसात्विकभ
वभयोसुसषीनाइकासोंकहतिहैपावि
पालछिती ॥ कवित्त ॥ प्रेमरमेसोभाय
जिउडा नहेपारावतवाजीकरैरंगभ
गिरहआछीलतहैं ॥ तिन्हेंसबकोऊन

ऊंचे करि चाहत तुहें री मिरी मिसु घर सराह
त सहेत हे॥ चाहिवो सराइवो बिसरि गयो
ताहि प्यारी देषत ही द बिरही हरे चित
चेत हे॥ फल कितने न मुल कित हे श्रध
र तर साची कहि श्रंगसुलि कित कि हिह
त हे ॥६९॥ दोहा॥ रहे गुहीवो नील षगु
हिवके सो नार॥ लागनी रचुचा नजे नी
ठिसु कायवार॥ टीका॥ ॥यह नाइका स
वी ए षके वेनाइ का कों श्रंगार करन ला
गी वेनी गुहत सात्विक भाव भयो सा तव
नाइ का न जान्यो सो नाइक सों कहति हे॥
कवित्त॥ गोपी कों वषु वनाइ गुपाल जु श्री
वृषभान सुता ढिग श्राये॥ हासजि जो न
तिनी के सिंगार करे सुकरो कहे वेन सुहा
ये॥ वेनी गुहावत प्यारी कसी सुघरा पन
यकित न तु म पाये॥ नीरचु चान लगे श्र
व हीं सट कारस्से वार सुनीठ सुकाये॥ ७०
श्रथ लीला हाव॥ दोहा॥ राधा हरि हरि रा
धिका बनि श्राय संकेत॥

रीरत सुसहज सुरत हूँ लेत ॥टीका॥ यह
लीला रथ रति विपरीत समय सषीस
धी सौं करति है ॥कबित्त॥ देषिवे कौ दे
ध पेषक मन पक प्रान रूप सील वेस गु
न चातुरी समेत है ॥ जे सौदाऊ साँच मत
राच प्रीति रंग आजुलौं नंद षकहूँ अैस
हियहत है ॥ राधा माधौ माधौ राधा अव
लिवदलि सलेव निवनि आय कुंजकेलि
कनिकत है ॥ कहै कवि केसदाऊ सहज
रति करि रति विपरीत के विविधि सुम
त है ॥७१॥ ॥दोहा॥ नेक उते उठि बैठियै व
रह गहि गेह ॥ छुटी जाति नहदीछि नयु
हदी सूषन दऊ ॥टीका॥ यह नाइक के
षि नाइका के सात्विक भाव भयौ सुस
नाइक सौं निवेदनु करति है ॥ नाइका
रह के अधिकपते तौ नाइक सौं कहै
॥विरा॥ आजुलौं के मोह जानि परीन
जवते रसरीति चला ॥ देषितु स्ल

अवतिंकरपल्लवछोरनस्वेनजला॥
वेहुनेकउतेंउठिकेंउधरीयह आवति
पेमंकला॥जातहुथीअवतिंनहदीम
हदीछिनुसकनदकुलला॥२७२॥दो
हा॥परततहींगारेगरें याँ दुतिदेसिवा
ल॥मनोपरसिपुलकितभईयांलसि
रीकीमाल॥टीका॥ यहनाइककेअपर
ससोंनाइककेसात्विकभावभयोसो
सषीनाइकसोंकहतिहै॥कवित्त॥मार
भमहितचुनिचुनिकेंकुसुमचारुआप
नेकरनमनमोहनगुनोवनाइमनांआ
इकेनीउनिलीनोंअतिआदरसोंपहि
राहियभेप्रानप्यारीहितुमारमालाअप
नेप्यारवाकेगारगरेंतसीपिकुरंयकी
नचलदुतिरहीअमोछविछाइ ःनेरजो
नलालजोलमिरीकीनेहितनालदुति
कितभईवाकतनकोपरस ---२७३
दो॥ ॥हितुकगितुम

स्त्रीतपतिलनकीलजु
नाकीवाइ ॥ स्त्रीतपतिलनकी ॥ टीका ॥ यह नाइका
लोपसीनान्हाइ ॥ टीका ॥ यह नाइका केसाथि
विजनाकीनाइ लगेनाइकाकेसाथि
भाउभयोसुसषीनाइकासोकहति
कभाउभयो ॥ मोरपषोवनिकोरचिके
॥ कवित्त ॥ मोरपषोवनिकोरचिके ॥ ताहि
हितुकेपट योतुमप्यारेविहारी ॥ ताहि
विलोकनहीतियकेतनतापरीउमगो
भारी ॥ होतोविलोकिच्चंचेभोरही
मृदुभारी ॥ होतोविलोकिनिहारी ॥ याचि
अवलोनकहातिज्येसीनिहारी ॥ याचि
जनाकीवियारलगेवहनाइपसीनाव
नीरमैंनारी ॥ ७४ ॥ दोहा ॥ इहिवसंत
नीरमैंनारी ॥ ७४ ॥ दोहा ॥ कहिवो
नवरीअरीगरमनसीतलवात ॥
नपुलकिपसीजेगात ॥
ष्फलकेदषीयतपुलकिभावदषि
॥ टीका ॥ यह नाइकासात्विकभावदेषि
सषीनाइकासोकहतिहै परकीयालछि
ताजानीये ॥ कवित्त ॥ सोहतुसमानसम
यहतोवसंतरितुनाहिनेगारसुअरुसमीरभ
नअवलिहै ॥ कहैकविकसमवलिहमसों

चीकहिकाहैतैंछबीलीभईतेरीश्रेसी
गतिहैं।।कबहूंतपतगातकबहूंपुलकहो
तकबहूंपसीजिश्रावेकबहूंपेकैतिहां।।जो
नीहैंरीजांनीहिलसांनीश्ररगानीरहिदषि
दषितनीप्रेमरसमेंपगतिहै।।७५।।मुदि
ताउदाहा।।लजिसंकसकुचिततचित
तियाकुकुयाकु।।दिनदिनदाछाकी
रहतिछुटितिनछिनुछविछाकु।।टीका।।
यहनाइकाकोछविकोगावहैसासबीसषी
कहैनाइकासोसषीकहैमदहाउजोना
ककीछविकोछाकुसषीकहैलालछि
नाहाइ।।कवित्त।।कछूकतबातहिउतरु
तिनलाइटक्रीश्रनिमषतकै।।अरुकोनि
रैनश्रलीनिहूंकीतजिलाजरावनिकें
गिके।।सबसंकतजीसकुचैनहियेमुहश्रा
सुबाकुकुबाकुबके।।रहैरैनदिनाबृषभा
सुताछबिछाकछकीनछिनीनछकी
भ्रमताउदाहा ।।र दहैडीठि गिभ
मषनीयावारि।।

ईविलोचनहारि॥ टीका॥ यहनाइका
कोविभ्रमहाउदेषिसषीनाइकासोक
हतिहैसषीसषीहूंसोकरै॥ कवित्त॥
पासदहैंगेधरीमैरहीजलसोभरिकै॥
जुमथानीलईहै॥ घोभसोनेलीवपेरि
दईउलटीपरिकेरतिनामेरईहै॥ मोहितो
लागतिनीकोमहाउरपूरनप्रेमकीरीतिठ
ईहै॥ सांवरीमूरतिकौरिकवारनईत्यौंवि
लोवनहारिमईहै॥ ७७॥ कुंडलितलाउ
टीका॥ लहिसूनैंघरुकरुगहतदिषादिषी
कीडीठि॥ गडीसुन्यतिनोहीकरतिकरल
लचौंहींडीठि॥ टीका॥ यहसुरतारंभस
मैंनाइकाकौजुचरहादेषीसुनाइकुसषीसो
कहतुहैपरकियाकुहैविंतलाउ॥ कवित्त॥
देषांइदेषीकीईठअचानकडीठिपरीअ
किलीपरमोहि॥ सालतुकैअपनउरमेअ
तिमैंठगजाइलगहिबांती॥ लेलिसकीग
हराइकरेउहितीछनैनैनकियेचहूंघोहि

केंललचावलडीढिकरी वहनाहि हियैलैंरहैं
श्रवनांहीं ॥७८॥दोहा॥ हरषिनबोली
लषिललननिरषश्रमिलसंगुलाषु॥
श्रांषिनहूंमेंहसिधस्योसीसहियेधरित
षु॥टीका॥यहबोधकहाउनाइकाप्रोढाप
रकियासुनाइककोंजुदेषिचेष्टाकीनीसो
सषीसषीसोंकहतिहै॥कवित्त॥ उषि
लसाथमेंदेषिगुपाललहिंगाएकुंअरक
रीचतुराई॥वेंनकछूनकहेंमुषतेंलनिपू
लीमनोंनिधनीनिधि पाई। हाथुधस्यो
हियपेंपहिलेंपुनिसीसछियोरसरीतिव
ढाई।श्रांषिनहूंमेंकछूविहसीपियकोंजि
यकीसबबानबताई॥७९॥दोहा॥लषि
गुरजनबिचकमलसोसीसछुवायोस्याम
हरिसनमुषकरश्रारसीहियेलगाईवाम
॥टीका॥यहनाइकाप्रोढापरकीयाहूजु
चेष्टाकीनीसुसषीसषीसोंकहतिहै॥क
वित्त॥श्रानुदुहूंमिलिकेंसजनीकछुसेंन

नुहिंमनकोंसमुझायौ॥ गोरीलषीगुरनारि
नुमेंसरसीरुहसोंसिरुस्यामछुवायौ॥ सो
लषिकैंवृषभानुसुतादियौउत्तरभेदसुक
हूंनपायौ॥ क्रमकरहेहरिकेसमुहेकरिदर
पनुवामहियेसोंलगायौ॥२८०॥दोहा॥
सुनिपगधुनिचितईइतैन्हातदियेंहींपीठि
चकीझुकीसकुचीडरीहसीलजीलीडीठि॥
य॥[illegible]॥ यहनाइकानाइकाज्ञासमेंना
इकनदेषीतासमेंकोजुचेष्टाउनिकीनीसु
नाइकुसषीसोंकहतुहै॥ कवित्त॥ कामकी
वांमहूंतेंअभिरामलसैदुतिजोवनकीरस
सांनी॥ न्हातिहीडीठिदियेंअकिलीसकिली
धुनिपोपगकीपहिचांनी॥ जाछविसोंचित
इरहिअंचरसुकेसोंहूंमोपेंनजातिवषांनी॥
चोंकीचकीसकुचीडरपीकरडीठिलजोंहीं
झुकीमुसिकानी॥२८२॥दोहा॥ बालम
वारसौतिकेंसुनिपरनारिविहार॥ भौरसु
अनरसुरिसरलीरिझषीझइकवार[illegible]

यहनाइकी वरुनाइ कना मुनिकैं माइ का।
कैंडु षुभयौ अरु सौं तिकौ वागि ब्रुयौ भइ
सुनि सुसु षभयौ सौ सम्प्राम पौ [illegible] क।नि
है।।कविना वैदी मयौ नु मयौ न मुं [illegible]
गारकै सा जनु सौ सरमौ नौ।।ना [illegible]
सौ तिन कै ज्ञो सर ज्ञो निवधुव [illegible]
दोनौ।।सो मुनिकै व विक [illegible]
न धौ डुलसौ अरु कुनोनो।। [illegible]
नो धग ना च निगो कै नु पौ पु [illegible]
नो।। [illegible] ।। [illegible] ।। [illegible]
[illegible]

रत्नषौहसियेंसम भाउहियेसरसौनौं ८
षुसवैसुषुपाइचलीअपनेंपरकोंकछु
ऊहमुहानौ ॥ ८३ ॥ दोहा ॥ लषिदरतषि
यकरकटकुचांसछुवैनकाज ॥ वरुनीवन
गाढेंग्रगनुरहीगुढोंगहिलोज ॥ टीका ॥ यह
सुरतसमयसषीसषीसषीसोंकहतिहै
॥ कवित्त ॥ रतिमंदिरमैंनवनागरिकान्ह मिल
रसरंगाहियेंढारिकैं ॥ दलदोरतदष्टोतहा
षिपकोंकरुवासुषु गवनकोंधरिकैं
कविलक्षकहैढहराइतहानसकीरहिधीर
जकोंधरिकैं ॥ गहिओटघनेंवरुनीवनकी
रहीनेंननुलाजगुढोंकरिकैं ॥ ८४ ॥ दोहा ॥
मोह नुत्रासतिमुहनटतिआपिनिसोंल
पटाति ॥ ज्यैं चिछुगवतिकरइचेंआगेंआ
वतिजाति ॥ टीका ॥ यहसुरतारंभसमै
प्रोढानाइकानाइकाकीजुक्तिया [illegible] हैसु
सषीसषीसोंकहतिहैनाइकुसषीहूसोंक
हैतोहूसंभयें ॥ कवित्त ॥ तियसूनेंअवास

ससरोज मुषी दुति पुंज निकौं उमगावतिसी तहां कस्म अचांनिक आंनि गही चहि भोंह नुसौं डरपावतिसी ॥ अरु आंषनि मैं लप टावतिसी आंषनि नाकरि नाकु चढावतिसी ॥२८५॥ दोहा ॥ सकुचि सुरत आरंभ हि बिछरी लाज लजाइ ॥ ढरकि ढार ढुरि ढिगभई ठीठि ढिठाई आइ ॥ टीका ॥ यह प्रोढा नाइका कौं सुरत सषी सषीसों कह ति है ॥ कवित्त ॥ आनि अभिराम स्यामा स्यामरत्ति मंदिर मैं विहरति उमगि अनंग रंग भ रिकैं। रनषदांन रददांन चुंबन अधर पांन आलिंगन करत अनेक भाइ भरकैं ॥ सुरति क आरंभ की लाज लजवंती सषी निकट ल नाइ जिय गई कहूं टरिकैं ॥ ढादसु हिये मैं ग हि निधरक व्हैकैं आई ढाढीभई निकट ढिठाई दीठि ढरिकैं ॥ २८६॥ दोहा ॥ दीप उजेरे हूं प तिहि रहत वसन रति काज ॥ - ॥ लपटि छवि कीछटनुने ..

नवरोंन नाइकाके तनकी दीपतिकों आधि
कासषीकों वचन सषीसों ॥ दोहरा ॥ तैसो
ईप्रकासुरतिमंदिरके दीपनुकों तैसोई स
मूह जगमगाति तनकौ ॥ तैसीयें सुधा
निधिके मुषकी निरष जोति मोहनके मन
भाऊ उमग्यौं अतनकौं ॥ प्रीतम बिहारी
लाल लैवेकौं सुरति सुषनि जु करवसनु
टकि हल्यौं तनकौं ॥ छविकी छटानहीं सों
रही लपटाइ राधा मगनहूं तनकी छुटीन
लाज तनकौ ॥२२७॥ सषीको वचन सषी
सों ॥ पटकी ढीग कत ढांपियत्ति सोहति सु
भग सुवेष ॥ हद रद छद छवि देत यह सद रद
छद की रेष ॥ दोहरा ॥ यह सुरतिकौं चिन्ह
दुरावतिहै नाइका सु सषी नाइकसों कहति
है लछिता ॥ कवित्त ॥ आजु भट रतिरंगके
मंदिरत्तूं मनमोहनके संग जागी ॥ केलिवि
लासहुलासनिकौं वड भागिनि तैं रिझयौं अनु
रागी ॥ ढांकतिक्यौं पटकी ढिगसौं अतिसोह

तिवारूप्रभानिसौंपागी॥देनिमताछविकी
हदकोंयतरेषरदछदकीमदलागी॥२८८
दोहा॥ ॥सुरतिदुराईदुरतिनहिमगटकर
तिरतिरूप॥छुटेंपीकऔरैउठीलालीअ
धरनूप॥टीका॥यहसुरतिकेचिन्हदेखिस
षीनाइकासोंकहतिहैपरकीयानोनाइक
सषीसोंकहैतोअन्यसंभोगदुषिताहोइ
कवित्त॥भूषनचारुवनाइसजेकचफूल
गुहैफिरआइवनाई॥हातोंकहापरहैंप
रातिषिकेलीककपोलकीपोंछिकेआई॥
देतकहैरतिरंगकीभांतिसुपंमकीरातदुरै
नदुराई॥पांनकीपीकछुटेंअधरानिपेंऔ
रैकछूप्रगटीअरुनाई॥२८९॥दोहा॥मो
सेंमिलवतिचातुरीतूंनहिभांवतिभेऊ॥
कहेदेतुयहप्रगटहीप्रगटोपूसपसेऊ॥
टीका॥ यहनाइकाकेस्वेदलषिसषीसुत
रभपोजांनिकहतिहैतिछितानांनियें॥क
वित्त॥आनुपगीसुषपुंजमेंप्यारीसुकुंज

मैकेलिकरी मनभाई ॥ पीकगईधुरिश्राठ
नुपेंप्रगटीमुषमंडलपेंश्ररुनाई ॥ मोद
कीवातकहेकिनिभांमिनीमासेंचलावं
तिकैसेंचतुराई ॥ तौतनुदेनुकहैप्रगरैयह
पूसकेपासपसउमैनराई ॥ २९० ॥ दोहा
श्रानुकष्ष्श्रौरैभयचयननयेंछि कैठेंन
चितकेहितकेचुगलयेनितकेहोंहिंननैं
न ॥ टीका ॥ यहनाइकाकेनेत्रदेषिसषी
कहेंतोलछिनाहोइजोंनाइकानाइकसोंक
हेंतौबंडिताहोइ ॥ कवित्त ॥ श्रालिनुकर
हेंतोषंडिताहोइ ॥ कवित्त ॥ श्रालिनुकर
समैविपकेरंगिलालकरगसुरंगभयेहें
दंतकहेंचितकेहितकीचुगलीछिकठेंन
नयेईठयेहें ॥ निंदतहेंश्ररविंदमभाश्रनुर
गपरमामेपागिमयेहें ॥ हेहिनयेनितके
सजनीश्राश्रानश्रपूरवश्रापछयेहें ॥
२९१ ॥ दोहा ॥ जदपिनाहिनाहिंनहींव
दनलगीजकजाति ॥ तदपिभौंहहांसी
भरीहांसीयेंठहराति ॥ टीका ॥ यहसुर

तारंभनाइकाप्रोढासषीकेंबचनुसषी
॥कवित्त॥ बैठीसिंगारसजैंब्रजनारि
अचानकमोहनआयेंतहांहीं॥पांलिग
अवलोकिअकेलीआलोंकिककेलि
चितचांहीं॥ जद्दपिबानबनागरिके
पलागीयहेंजकनाननलांहीं॥तद्दपिहां
सीभरीभ्रकुटीनुमैंबीसविसेठहरातिहेंहां
हीं॥९९२॥सुरतांत॥दोहा॥सकुचिसरकि
पियनिकटतेंसुलकिकछूलनतोरि।करऔ
चरकीआटवेंजमुहांनीमुरमोरि॥टीका॥
यहसुरतांतनाइकाप्रोढासषीकोंबचनस
षीसों॥कवित्त॥केलिकलाकुसलकुरंग
नयनीपिकवेंनीजाकीछविपररतिवारि
करोरिकें॥सेंनसुषपागीअनुरागीपति
गजागीमैंनकेविलासनिसोंलेतचितचो
रिकें॥सरकीसकुचमनमोहनकेनिकट
कछुकिमुलकिअगिरानीतनुतोरिकें॥
भावहमोपेंक्योंहूजातिनवषानीकर

आंचनकीओरजमुहांनीमुहमोरिकैं ॥८॥
॥दो॥ चमकतमकहांसीससकमसकजप
रलपरांनि ॥ येजिहिरतिमारतिमुकतिओं
रमुक्तिकिहिंहांनि ॥टीका॥ यहसुरतवर्ने ॥
ननाइककोंवचनअरथयाकविकीउक्ति
॥कवित्त॥ किलकनिमुलकनिहेरनिहरति
चितुचमकतमकदमकनिमुसिकांनिहें ॥
हिलनिमिलनिअरुरसभरीकसकनिसक
निससकनपटनिसुघटांनिहें ॥ लटकनिम
टकनिकुरनिमुरनिकलकुंजनिलफनिचल
चपटांनिहें ॥ ऐसीरीतिरतिसाईमुकतिव
हावतिहेंमानोंसानोंअतिहांनिहें ॥ २६
॥दोहा॥ लषिलषिअषीयांअधषुलीनुक
गमारिअंगिराइ ॥ अधिकउठिलेटकिल
किआलसभरीजमाई ॥टीका॥ यहसुरतांतनतु
प्रौढासषीकोंवचनसषीसों ॥कवित्त॥
सुषपागीअनुरागीहरिसंगजागीसाभ
सांनीअरसांनींआगरातिहें ॥ विथुरीव

नुकीआवतिपलकमनमधकी गलकन्य
लिरसवरसातिहैं। ललित कपोलनि वें
सतिनी कीपीकलीकदोऊ भुजजोरिमुह
मोरिनमुहातिहैं।अथ फूलीआंवनिसों
आलीननअवलोकिआधीउठिअनहील
रकिलेटजातिहैं ॥२८५॥दोहा॥ नीठि
नीठिउठिबैठिहूं प्यौप्यारिपरभात॥ दोऊ
नींदभरेषरेलागिलागिगिरजात॥टीका
यहसुरतांतनाइकाप्रोढासषीकोंवचन
सषीसें॥कवित्त॥ वृषभानललीवृजरा
जललारतिसंगरमेंनिसिजागे॥ कवि
कमलकहेकविकामकलावहुभाइविलासहि
येंउमगे॥ उठिवैठतसजपेंनीठिनऊठिपेंन
सकेंअतिप्रेमपगे॥सुष।नीदभरेउपरसान
षरेवहुकोगिरिजातनगेंहीलगे॥२८६॥
कवित्त॥ रगीसुरतरगपियहियेलगीअ
गीसवराति॥ पैडपैडपरठ्ठु केसैंडमरी
अंगाति॥टीका॥य रनो

सषीसौंजौंसषीनाइकासौं कहैतोलाषु
लाहोइ ||कवित्त|| सवरैनजगीहरिकै
लगीरतिरंगारगीअलसातपरीहै ||डाय
कचलौं[illegible]रिकैचितवैंमुरकेंअगरातिम
रारैभरीहै || विथुरीअलकैंछलकैंश्रमवा
रिमुकीपलकैंसुषढारढरीहै || लगिपीक
कीलीककपोलनिनीकीलसैंअतिसारि
सलौटपरीहै ||२९७|| सोरठा || पौंद
लिषतुनिरदई दई कुसुमसोंगातु ||कर
रदषौंधरधरा अजौंनउरकौंजातु ||टीका
यहनाइकासुरतमैंमुदितअलिविक
ईहैसोसषीनाइकसौंकहतिहैं ||कवि
वसअलवेलीमृदुवेलीसीनवेली
लईगुपालसुल्लिकितनेउपाइकै ||रि
लकितभएनिर[illegible]ईकेलिकैरयौंक
तविसराइकै ||कैसीदलमलीमृदु
सीपांषुरीसीपरीहैअचेतसवमुदि
कै ||वनीयाकहाहौंकहौंछवियाव

अंनहूं न मिटतु निकट देषौं आइ कै ॥ ५९ ॥
॥ दोहा ॥ लहिर तिसु षुलति मिटै हियें लपी
ल जो हीं नीठि ॥ षुलति न यो अनव [illegible]
वहै अध षुली डीठि ॥ ६० ॥ अथ मुग्धा
त नाइका कौ वचन सषी सौं ॥ कवित्त ॥ कलि
कला सुष कलित अभा नन पी पर [illegible]
चारी ॥ अंक लगी न [illegible]
नारि निबाइ महा छवि धारी ॥ [illegible]
म [illegible] त बनै मुक मोर [illegible] निहारी ॥
पै उन दी कषीयो अधपान [illegible]
[illegible] ॥ दोहा ॥ [illegible]
[illegible]

रतिविपरीतकीपिवा
प्यारीकेपरसपाइ रतिविपरीतकीपिवा
रेंविनतीकरी॥प्यारीमुसिकाइ श्रनवा
लेंभीवभायो॥दियोपीतमकेजियछाति
याहीमेसहीकरी॥ २०० ॥ रतिविपरीति
कासा॥ पस्योंजोरु विपरीतरतिदुपीगु
रतरनधीर॥करतिकुलाहलकिंकिनीग
योमोनमंजीर॥ टीका॥ यहविपरीति
रतिवर्नेनुहैंनारकोप्रौढासषीकोवचन
सषीसों॥ कवित्त॥ श्रीव्रषभानुसुना
नजोतिजगारतिलाजरगीजनुजागी
रविलासनिहासनिकेंहरिमाजनकों
साजनलागी॥धीरमहामतिसंगरमें
रतिरचीश्रुतिराजनलागी॥मोंनुग
छियानतहींसेनारसहीरसवाजन
२०१॥दोहा॥ मेरेवूहलवातलेकत
वतिवाल॥ जगजानीविपरीतरति
कुलीपियभाल॥ टीका॥ यहना
हारतिविपरीतकीनीसषीसोंउ

सोप्रवीनंसषीजानिलईसोनाइकासौंक
हतिहैं॥कवित्त॥हौंहितुकैंवलिवूझतुयूंते
कहुंतूवहरावतिवातहमेरी॥पूर्म्योकौंचं
दउदोतुकरेंतवकैंसेंदवैंकियेंव्र्योटहघे
री॥तेंहरिसोंविपरीतकरीकहिक्योंदुरि
हैंअवतोंहमहेरी॥नीकैंहींजानिपरीसव
कोंपियभालनलषैंविंदुलीतियतेरी॥३०२
दोहा॥ रवनिकह्योहरिवनिसोंरतिवि
परीतविलास॥चितइकूरलोचनलतर
सगरसलज्जसहास॥टीका॥यहनाइक
नेंरतिविपरीतकीवातकहीसोनाइकानें
वितमैंतिमेंचेष्टाकीनीसोसषीसषीसों
कहतिहैं॥कवित्त॥व्रषभानुसुतानंदनं
दललारसकेलिकलानिप्रवीनवरो॥तिह
मंदिरमैंअतिप्रेमपगेरतिकंतविलासकैं
रंगढरे॥रतिकीविपरीतिकरौंरमनीह
सियौंजवप्यारेनिहारे॥ तप्यारी
केयलषिनंनति

लाजभरे ॥३॥ दोहा ॥ सहिरंगीलेरति
जगजगीपगीसुषचैन ॥ अलसौंहैंसौंहकि
येकहैंहसौंहैंनैन ॥ टीका ॥ यहनाइकाके
नेत्रनुकीसोभादेषिसषीसषीसोंकहतिहै
लछिता ॥ कवित्त ॥ मोहीसोंछबीलीसर
रीतिकोंछपावतिहैं आननपैउमगिअरु
नआपजागीहै ॥ अंगअंगसिथिलअनंग
सुषसंगसनेरंगसनीछमअनुरागीउ
लागीहैं ॥ लसतहैंसौंहैंअलसौंहैंयेचप
लचषसौंहैंकियेकहतनप्रगटैप्रेमपा
हैं ॥ कहीनपरतिअतिअदभुतछबिय
गीतुंरंगीलेरतिजगेआजुजागीहैं ॥ अ
जुगलदरसनवर्नन ॥ दोहा ॥ नितप्र
कंतहिरहतवैसवरनेमनयके ॥ चाहि
जुगलकिसोरलषिलोचनजुगलअ
॥ टीका ॥ यहजुगलकिसोरकिसो
भाअरुदोऊनकेहितकोंआधिक
षीसोंकहतिहैं ॥ कवित्त ॥ नितश्री

सुतानदलाल विराजत हैं छवि पुंज छये
कवि कूसक है मन मील वहै क्रम चातुर
ताइ करंग रये ॥ सुषदे षि सिहावति सवै
सजनी विधि सों विनवै अभिलाषनये
यह रूप विलोकवको तन मे प्रति रोम न
लोचन क्यों न भये ॥१०५॥ दोहा ॥ मिलि
परछांहीं जोन्ह सों रहे दुहुन के गात ॥ हरि
राधा इक संग हीं चली गली में जात ॥ टीका
यह दोऊन को मिलि वा गली में जानयक
नहीं जान परत हैं सषी सषी सों कहति है
निमि चारु को मिलनु ॥ कवित्त ॥ दोऊ रस
भीजे रूप रीझत रुनाई भरे दुहू के सनेह ने
हउ मगन गात हैं ॥ दंपति करत चतुराई के
चरित्र चारु और को न जानै य प्रवीननु की
वातें हैं। जहां परछांहीं तहां प्यारी यें विलो
कियतु जोन्ह को प्रकासु नहीं कान्ह लषा
तहैं ॥ घनाक्षरी ॥ तजतीर थहर राधिकात
नदुति कर अनुरागु ॥ जिहिं व्रज केलि नि

कुंजमगपगमगहोतुप्रयागु॥टीका॥य
ह्जुगलछविवनैनुहे॥कवित्त॥तीरथनि
सरकेतुकाहकोतूंभरटकेतुकोंग्रटकेतु
वनसोभाकीहिलेगमै॥राधावनमाली
कीसरसगोरस्यामद्युतिसकलनिकाई
कोलसतुसारजगमें॥तासोंकरप्रीतिय
हनिगमप्रसिद्धविधिसंकरसेतिनहूंते
जोगध्यांनग्रगमे॥उगउगप्रनिहातप्र
गटप्रयागमगजिनकेपरतकेलिकुंज
कुंजमगमें॥७॥दोहा॥उनकोंहितुउ
नहींवनेकोउकरोंग्रनक॥फिरतुकाक
गोलकभयोंदुहूदेहज्योंयेक॥टीका॥प
हदोउनकैहितकीग्रधिकाईसषीसषीसों
कहतिहे॥कवित्त॥लानुलोंग्रेसनदेषे
कहूंउनहीयेवनेउनकेहितकेपन॥ग्रों
रग्रनेकउपाइकियेहूवेहोहिंनग्रेंसेस
नेहसनेमन॥कोउनजाननदोऊहैयेक
हींश्रीवृषभानसुतामनमोहन॥वाइस

लकज्योंसजनीफिरवौकरैंसेकहीजी
वडुहूतन॥ ८ ॥प्रेमगरविता॥दोहा॥वि
घसोंतिनुदेषतदईअपनेहियतेंलाल
फिरतिसवनिमेंडहडहीउहीमरगजीमा
ल॥टीका॥ यहनाइककीमालापाइ
अतिप्रसन्नभईहैसोसषीनाइकसोंक
हतिहैप्रेमगर्विताहोइ॥कवित्त॥सौंति
कलषतमनभावनमध्याकेदीनीउरतें
उतारिपरगटकीनीरहतिहै॥ लषहीतेंर
हसतिविहसतिहुलसतिविलसतिलस
तिगुमानभरीअतिहै॥मनमेंमुदितफू
लीतनमेंसमातिनाहीचललितचितौ
निअनुरागउलहतिहै॥मरगजीमाल
सौंउरधरैंवालावडहडहीआलिनुके
ऽमैंफिरतिहै॥ ९ ॥दोहा॥अपनेकरगुं
आपुहीहियपहराचहिलाल॥लौंलि
रीऔरैचहीवोलसिरीकी
यहनाइकनेअपनेहा

सिरी को माला पहिराइ ताइ पाइ याकी सो
भा अधिक भई सखी नाइ का सों कहै सखी
सों कहै ॥ कवित्त ॥ आपने हाथनि बीन कैं
फूल बनाइ गुही मन लाइ कुन्हाई ॥ माल
सुबोल सुबोल सिरी की साल सुगंध भ
री अति हीं छबि छाई ॥ आलनि कैं गन मैं
लसि कैं हसि कैं हठि प्यारे हियें पहिराई ॥
आपु अनूप लहीं तरुनी वरनी न परै अ
नुरागनि काई ॥ ३१० ॥ दोहा ॥ ६ ॥ तीज प
र व सो तिनु सजे भूषन वसन सरीर ॥ स
वें मरगजे मुह करी उहीं मरगजे बीर ॥
॥ दोहा ॥ ॥ यह नाइका प्रेम गर्विता म
गजे बीर ते सरन को गर्बु भयो ता तें अ
रुन कीनो सो सखी सखी सो कहति है ॥ क
वित्त ॥ सोतिनु कुल सिगुन गौरि कों
बु साधि भूषनु वसन बहु भांतिनु सु
हां तिलक तमा रवे दीवे सरित सों
जे अंजन नयों आजे चारु लोचन अ

॥ कृष्णप्रानप्यारके रिझाइवेकोहोंति
ऊंचपलकटाछहोइ भाइनसोंढारहे
थेकरातिरतिमरगजेचीरहीसोंस
बहीकेचीनमुरफीकेकरडारहे ॥३११॥
औरगति औरेवचनभयोवदनुरगऔ
रा॥घोसकतेपियचित्तचढीरहेंचढोर
लोरु ॥ टीका॥ यहनाइकानाइकके
मगर्वनाककाहूकोमनआनतिनां
हींसुसषीसषीसोंकहेनाइकाहूसोंकहे
वने॥कवित्त॥ औरहींचाललविलो
कनिऔरहींदषिकेआनतुहुरगुऔरहीं
लतिआनहीभांतिगुमानसन्योंनिध
धिपाइकेवोरहि॥ वूमेंहूवातहिउ
तरुदेतिनहीठिकहूठहरातिनठोरहि॥वू
हूवातहिउत्तरदेतिनहीठिकहूठहरावे
तिनठोरहि॥बेकदिनातेचढ़िपियकेचि
तप्यारीचढायेहीरापति ॥३१२
दोहा ॥ कियोजुचि क

कर भरतार ॥ दीये दि फिरति दृ
लक लिलार ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रेम
गर्विता सषी कों वचन सषी सों सनेह तें
नाइका सौं सात्विक भाउ भयौ ॥ कवित्त
ठाडी उठाइ कस्यौ चितचाइ सौं नंदलाल
अतिहीं अनुरागे ॥ भाल लगावत ही
अंगुरी कर कंपु भयौ अतिहितसों पा
गें ॥ आंनें न आंनें मनें तव तें न गनें क
प्रेम के आगे ॥ दीय दि फिरै मृग
लोचनि टेढी ई टीकौ लिलार पै लागौ
३१३॥ गुन गर्वित ॥ दोहा ॥ सुघर सों
ति पिय वस सुनति कुलहि नु दुगुन कुला
स ॥ लषी सषीन नडीठि करि सगरव मल
ज सहास ॥ टीका ॥ यह नाइका गुन ग
र्विता अपने गुन के गुमान तें सौतिके
आगम को दुष नाहीं मानति प्रसन्न
भई सषी की ओर चितवति है सषी वे
वचनु सखी सों ॥ कवित्त ॥ रूप की रा

सषीनु समाज में सोहें सिंगार सबै ब्रज नारी॥ काहू कहीसु घरापनु कें तुव सौं तिनें लीनों रिझाइ बिहारी॥ यों सुनिकें अति ही हुलसी गुन चातुरी की परमा वधि प्यारी॥ लाज गुमान भरी मुसिकाइ कें रंचक डीठि अलीतन डारी॥ ३४

पगुन गर्विता॥ दोहा॥ दुसह सौतिसा सुहियगन तिन नाह॥ बिवाह॥ धरे रूपगुनकौ गरबु फिरति अछेह उछाह॥

टीका॥ यह नाइका अपने रूप के अरु गुन के गरब तें औरकौं चित मैं आनति ना सो सषी सषी सौं कहति है॥ कबित्त॥ नाह के ब्याह में प्यारी अछेह उछाह भरी पटभूषन ठानति॥ जो न तिहें निह चै अपनें जय कौ वनिता करि हैं नहिं ठानति॥ रूपके जोबन के गुन के अभिमान तें औ न हिं नाति हू मन आनति॥ जद्यपि उरमें चहनाग

दोहा ॥ नाटिन सीस सावित भई लुटी
सुषनि की मोट ॥ चुप करी यै चारी करै
सारी परै सलौट ॥ टीका ॥ यह सुरतकी
सारी मर गजी दषि सषी नाइकासौं कहै
तिहै लछिता होइ ॥ वचन लछिता ॥ रसकीउम
तिहै लछिता होइ ॥ कविलिगा ॥ रसकीउम
गभरी रंग भरी साह तिहैं अंग की सिष
लुदुति अमज लछाई है ॥ कुमतिकुकति
अंगरा तिज महातिसुसका तिअर साति
संरसा तिन्सो निकाई है ॥ मैटै लुटी सुष की
प्रगट भई तेर सीस क्यों तु मुकरति मन
मथ की दुहाई है ॥ अब हीं तो चुप करी रा
धे यै तो करि चारी जतु आ जु सारी मैं सलै
ट पारि आई हैं ॥ १६ ॥ दोहा ॥ मोहि करत
कत बावरी कियै दुराव दुरै न ॥ कहै देत रं
ग राति के रंग निचुरत सैनै न ॥ टीका ॥ यह
इ का के नैन देषि सषी कहै तो लछिता
जो नाइक के विधमान नाइक की सषी
नाइका कहै तो षंडिता होइ ॥ टीका ॥ सु

चिरचंतुराईसोंलुकाइतनभूषनवनी
इसजेवसनतुरतहै॥ कस्मीनप्यारेके
सनेहसरसानेतातेंगातऋरसानेरसउ
गदुरतहै॥ काहकोंसयानीमोहियाव
करतऋवकियेतोदुराउकहिकेसेक
रतहै॥ प्रगरपुकाररगरानिककहत
तोलोचनजुगलमानोंरंगतिचुरतहै
॥३१७॥ दोहा ॥ लाजगरवऋालसउम
गभरनेनमुसिकात॥रातरमीरतिदेत
कहिऋौरेप्रभाप्रभात॥ टीका॥ यहनें
ऋनुकोभाउदविसषीनाइकसोंकहतोषे
डितादोइ॥कवित्त॥सारसनेसरसलस
तभरऋालसयमहारंगमगनहेरेंहियेह
रिलतहै॥लालडोररावतहैऋौरेऋा
यसाजतहैफूलमुसिकातहैनिकाईके
निकतहै॥मेंनकोउमंगभरेजोवनकें
गभरेलाजकीतरंगभरेगरवसमतहै
- तेरेवातर
नमषपागनि

तिरमीरतिकेप्रभातकहैंदेतहैं ॥३१८॥ टीका ॥
कोरिजतनकीजेतऊनागरिनेहडुरेंन ॥ कहेंदेतचितचीकनेंनईरुषाईनें ॥ यहनेचदेषिसषीनाइकासोंन ॥ दोहा ॥ तेंमनमा
कहतिहैलछिलाहोइ ॥ कवित्त ॥ सजनीलषि
हनसोंमिलसोंमनुमेंतवहीमानिकेंमासेंचपाईवृंकृतिलोहिहियोंहितु लावतितेंचातुराई ॥ कोरिउपाउकरेंकिनेंनिनागरिनेहकीडिठिडुरेंहकेंनडुराई ॥ चितकीननुमांरुषाईभईयहदोहिकहेंहिचितकी
चिकनाई ॥ ३१९ ॥ दोहा ॥ मुहमिठासम
गचिकनईभौंहेंसरलसुभाइ ॥ तऊषरें
दूरवरोषिनषिनहियोसकाइ ॥ टीका ॥
हनाइकासादराप्रौढाधीरानाइकाकेंवच
नाइकासों ॥ कवित्त ॥ वदनकमलतें
कहितसांनेवेंनमधुरेंकठतक्षमीजिन
चुचावतुहें ॥ भृकुटीसुभाइहीसरललि
लिकरोंसकोनरंचकुविलासदरसातुहें
हकीनिसांनीअरसानीचितवनिस्योंहि

मैंहूंनमापैयहमेडुलह्योंजानुहैांज्योंज्यों
अतिषरेंषरांआदरकरतप्यारीत्यांत्यांमें
रांहियांषरांषरांईसकानुहै ॥ ३२०॥दोहा॥
षरेअदेवरूठलाहटेंउरउपजावतुत्रासु
दुसहसंकविसकीकरैंजेंससूठनिठासु
टीका॥ यहनाइकाआकलिधीरागुप्ता
प्रागनाइककांवचचनसषीसों॥कवित्त
गांसुगह्याउरमेंजितनेंाकधूमैंतानंचूक
इतीकरीहै॥वानिसजीइठलाहटकीअब
काहतेसाधीनजानिपरीहै॥ त्रासुहियें
उपजावेधरांअतिआदरसांअभिमानभ
रीहै॥सांठिचवावतिमीठीलगेंसहुकोऊ
करैविसहीकीरारीहै॥३२१॥आकलिगु
प्ताधीरा॥दोहा॥नहिनचाइचितवतिदृ
गतिनहियालतिमुसिकाइ॥ज्योंज्यांरुष
रुषीकरैत्यांत्यांचितुचिकनाइ॥टीका॥
यहनाइकाप्रौढाधीराआकलिगुप्तानाइका
कीवचनुनाइकासांनाइकाहूसंहोइसषी

जो रतिन लौ
कौं वचन नाइ कासौं ॥ कवित्त ॥
चन न चाइ नेह लाज भर अध मुसिकानि कौ
न भाउ दरसातु है ॥ बोलति न कहू मन मोहन
सों मधुर वैन मोरति न भृकुटी मरोरति नुगा
तु है ॥ कहै कवि ऋष्म वाकी गरवीली वानि
सहज वसीकर कौ मंत्र जान्यौ जातु है ज्यौं हि
ज्यौं हि रहति प्यारी राधा रुष रूषौ कै स्यौं हि
त्यौं घरोई परौ चिक्कनौ चिकनातु है ॥ ३२ ॥
॥ जो तिय जिय तुम भाउती राषी हिये व
साइ ॥ मो हि सुकावति दृगनि हैं फिर वहु उ
कति जाइ ॥ दोहा ॥ यह मान भय मनाइ कान
इक कौ आपनि मैं आपनौ प्रति बिंब दे षि
और स्त्री जानि कै करति है मान वनी है
ने कमने करौ पाइ परौ हरि काह कौ
॥ कवित्त ॥
मोहि दवावति हौं राजु करौ नित याहि
बैर हौं यामैं कहा कहनावति है ॥ जो तुम
वसाइ हिये पिय प्यारी तिहारी कहा
जौं कहति रावरि आंषिनु आनि वहै तिय

हिगुकावतिहै ॥३२३॥ अथपरस्परमान
दोहा॥ रुचिजीवोजारीजुरै वधांनसनेहगभी
रु॥ कापरियेब्रषभाननीयहलधारकेवी
रु॥ टीका॥ यहपरस्परमाननसषीकोवचन
सषीसों॥ कवित्त॥ मांनलकोनहमारीक
हीजहदाउनमांफभरीगहवाईदाऊपरे
अतिलेजभरतहांक्योंनवढहिलकीसरस
ई॥ कापरहेचिरजीवाकरोयहएकसीज
री विरंचवनाई॥ हेविनवब्रषभानुसुनाइ
लयहलधारीकवीरकन्हाई ॥ ३२४॥
दोहा ॥ दाऊअधिकाईभरयेकैंगोंगहिरा
इ॥ कोनमनावोकामनेंमान्योंमनठहराइ
टीका॥ यहपरस्परमानुहे॥ दाऊअधिका
ईभरसुनाइकामानवती॥ नाइकुरूपमा
नो॥ अथवानाइककोमानुदषिवेकीगो
हे॥ सषीकोवचनसषीसों॥ अरुजोंदाऊ
अन्यासक्तिहाइतोयेंहीकहिवोसंभवै
कवित्त ॥ आजुचलीरसहीरसमेंरसवा

नेहु हिं निवैयों कहीं आवैं ॥ लैं अपनैं अपनैं
रिसमैं अरुझायो हियें अब को सुरझावै
दाऊ पर अधिकाई सरे गहैं यै कहींगों
काऊ भेद न पावै ॥ कौन मनावै मनै कहि
को मन मानौं दुहूं न कौ मानु ही भवै ॥२५
[illegible] ॥ मानु करति वरज
[illegible] करी रिसो
तिरहौं उलटि दिवावति सौंह ॥ [illegible] ॥ प
हीजाइगी सहज हमों ही भौंह ॥ [illegible] बोई भय
हमानौ उठावति है सो मान छुडाइ
जनु है सखी को वचन नाइ कासो ॥ [illegible]
रूपौं करो सब नैंन चढाइ कै बैन कहै मुष ते
न बोहैं ॥ मान कर्यौ सु भली करी हैं न मन
रों और दिवावति हैं ॥ मोहू सौं बूझैं न का
रूद तिसाद बोगी मनमोहन को मुष जो
हो हिंगी कसम रिसौंहीं सुहागिल हंसी भ
जुसुखमाइ कौ भौंहैं ॥ ३२६ ॥ [illegible] ॥
कैं सरूप ससिमुखी हसि हसि बोलत
गूढ मान कहि क्यों डरै भयें वूठ रंगनै

यहनाइकाकोधीराकोमांनुसोसषीनाइ
कोनाइकासोकहतिहै॥कबित्त॥ ऊपर
कोरसकोसोकस्योरुषुभाउकियेहैतवे
सरसातें॥सूधेचितैहसिवोलतिभामिनि
वैनकहैमुषमीठसुधातें॥अनेहकेचिन्ह
जनायेसवैकहिस्वासदवाइकेतहकेना
तें॥मांनहियेकोदुरैकहिक्योंजुमजीठ
केरंगभयेदृगरातें॥२७॥दोहा॥ चित
वनिरूषेदृगनिकीहांसीविनुमुसिकांनि
मानुजनायोमानिनींजांनितियांपिय
भांनि॥टीका॥ यहनाइकापानचनीहै पं
मांनकेलछनप्रगटकेहैं नाहीपरवीन
नाइकनेजांनीसषीकोवचनमध्योमाय
योनाइकाहैसोकहै॥कवित्त॥वसनतेचि
तेजैसेवागविनवनितैपनहैचिकु
ईंकोनीदूगनुनियांनीहै॥मधुरवचन
तेंवोलतिहितमिलमगनसुपकोनि
रवानियहियांनेडो

रिसदानीतेंसयानीसोप्रवीनतुकीरीठितेर
हतिकैंसेंछांनीहै ॥ ३२८ ॥ दोहा ॥ कपटस
तरमोहैकरीमुषअंब्रनबांहहवींत्र ॥ सहजह
सोहैजानिकेंसोहैकरतिननैंन ॥ टीका ॥
पहमानपरिहासहैसषीकोवचनसषीसं
॥ टीका ॥ पीतमकीप्रीतकीप्रीतिलषि
वेकोप्रांनप्यारीकछूकीनोपरिहासुमूठो
मांनुहानि ॥ कहैंकविक्रम उरऊपरक
ईभरिवदनविदारिवेंरीधरिकेंकपाल
नि ॥ आपनीअंब्रलौतिहूंसोजोरतिनस
मुषवैंनअंब्रनबाइयेकीज्योंहीत्योंहि
वांनि ॥ भृकुटीसतरकीनीकपटसों
अंबपैसोहैनकरतिड्रगसहजहसोहै
॥ दोहा ॥ मनतुमनावनकें
३२९ ॥ दोहा ॥ कोतिगनायोपे
नरूठाइरूठाइ ॥
बिमहरिकथातिजाइ ॥ टीका ॥
कोमानदेबिवोप्रयोजनुहैसो
जांनतुहैंनवहीफेरिरूठाइबे

षीसषीसों कहतिहैं ॥ कवित्त ॥ रासभरी
अषियांनिहूं की अवलोकनि मांझ भरयों
रसभारी ॥ यांहीतें मांनहूं कोरूपदप्रिव
कीनदनंदहियेरूचिधारी ॥ तेतिमनोहं
प्रियाजवहीं तवसें वारिदैनरूसाइविलासि
कौंतिकलाग्योहीं रसकैं पिकिड़कैंगमाव
तिराधिकाप्यारी ॥ ३३ ॥ टीका ॥ यातीनि
सितनामिसौं मांन कलहकों मनु ॥ प[illegible]
धारेपांहुनैं ह्लौ गुडहरकौ कनु ॥ [illegible] ॥ यह
इको परकिया उपपतिकौविरह[illegible]कों
[illegible] कौनामुपधी[illegible]
॥ कवित्त ॥ जो[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

गरायोहै ॥ ३३१ ॥ दोहा ॥ मोहसौंवातनु
लगलगीजीभ जिहिंनाइ ॥ साईलेंउरला
ईथेंलाललागीयतुपांइ ॥ श्रीकृष्ण ॥ यहम
धमसानुनाइकासोंवातेंकरतजानांइ
कासोंआसक्तहोइनाइकनेंताहीकोंनासु
नीनोंसुनाइकानाइकसोंकहतिहै ॥ क
वित्त ॥ केतोराबोगोइहोइप्रगटहीयकोंभा
उजासेंरंगमगिमनुरह्योंअनुरागिकें ॥ उ
घरीसिकरसप्रीतिकीषीवनवाकीभले
सुधिकीनीमासोंवातिनहूंलागिकें ॥ कम
ग्रांनप्यारपूरीप्रीतिकोंधरमुयहपायो
अवमरमुभरमुगयोभागिकें ॥ पाहु
परतिहरियाहीउरलेंयेंजाहीरमनीकोंना
मुरह्योंरसनामेंपागिकें ॥ ३३२ ॥ दोहा ॥
अहकेहनकहाकह्योंतासोंनंदकिसार ॥
वडवालीकतहोतिवलिवडेगनिकेंजोर
ढीनत ॥ यहमनाइकासषीकोंवचननाइ
कासां ॥ कवित्त ॥ सांचीकहिमोसोंअहका

तेकहतिनाहिंनासोंकहाकह्यांमनमोहन
न्हाईरी॥क्योंतूयडिवालश्रसोवालतिगु
मानभर्योयेतीरिसरासतेकहातेगहिया
री॥कूसप्रानप्यारोश्रतिहितुकेमनावतु
करिमनुहारिवहुभांतिमेंवनाईरी॥मांनि
कह्योमरोवलिउलटनुकरिजोपेलेहीप्राई
वरीवडीश्रांषिछविछाईरी॥३३॥दोहा॥
धिविधकोनकरदरनहीपरहूपांनु॥
तेकितेनेलधस्योइतेइतहनमांनु॥क
हमनाइवांसषीकोवचननाइकासो
कवित्त॥पाइपरमनमोहनहूवहुभांतिहि
रसभाइभरतो॥प्रीतिकोचोपचढाइश्र
निकहीसमुझाइविनेकरिवेकेतो॥लाच
नतेरतऊनलचेश्रनषाइनचेश्रतिरास
रचेतो॥नेकचितेमृगनेनकितेतधस्यो
भरिमानुइतेतनुयेतो॥३४॥धदोहा॥
हसिहसाइउरलाइउठिकहिनरुषोहवेन
नकितथकिंतकेथकि लो

नैनन ॥ टीका ॥ यहमांनुपरिहासुनाइककेवि
ध्वमांनसषीनाइकासांकहतिहैजोनाइका
कोंअपराधदुरावेकोंकहैतोहूसंभवे ॥
टीका ॥ मांनलियोहोइतोमनावैप्यारो
पाइगहिहैअंसपरिहासकोंजतनकरतकी
जीये ॥ हाहातोहिसोंहैअवसूधीकरभोंहै
वैनकहिनरुषाँहैलालुछातीलाइलीजीये
हसियेंहसाइयेंरीसुषसरसाइयेंरीरसुव
रसाइदुखुसोंतिनुकोंदीजीये ॥ ३३५ ॥
टीका ॥ यरीयहतेरीदईवांनीहूप्रकृतिनजाइ
नेहभरहियराषीयेतूंरुषीयेंलषाइ ॥
यहमनाइवेंसषीकोंवचननाइकासों
कवित्त ॥ कोंनपरीप्रकृतिछुरायेंनछूटै
वेपीहूज्योंज्योंकीजेउनीत्योंत्योंहूनीपषि
यतिहैं ॥ कम्पप्रांनप्यारकीदुहाईतेरीदेषे
गतिमेरीमतिमातिसोचसोंसनीविसषि
यतिहैं ॥ जदपिसनेहरोउरमेंःवसाइप्या
रप्रीतिसरसाइअरुनाइलेषीयतिहै ॥ ३३६ ॥

हंसत्यों निलगथाके भद्उपाइ॥हठुड्ग
गढुवे सुचले लीजे सुरगलगाइ॥टीका॥य
गुरु मानुहै सषी नाइकसों कहतिहै केवाके
नुतुम्हारे चले धृरोंग सषी को वचनु नाइ
सों॥कवित्त॥ आजुसजो हठु को गठुप्या
रीने हेदु तधीरज कौन कोंधीजे॥कौन
भांतिलगे सहवातन भद्उपाइथके मति
छीजे॥लोचन इतनक्यों हूं मिले हरि मांनि
मेंव बिलंबुन कीजे॥ आपुनहीं चलियं
वलिजांऊं सुरंगलगाइलगाइजो लीजे
३३७॥दोहा॥ अलरसहूं रस पाईयतुर
सिकरसील्यास॥ जैसे सांठकी गठिनगां
भरीमिठास॥कवित्त॥ यह मानवती
कीसाभासषी नाइकसों कहतिहै प्रयोज
नकहें के नाइक चले तोमानछूटे॥कवित्त॥
मांनिनीतिहारीसेनमां नहिरीकछ्मा
पेनकह्योपरतुसाभाको हो॥नासि
कासकारिमुहमो

॥ लोचननु मांझ अरुनाई कों प्रकासु है ॥ रसि
रसाल वारसीली की विलाकों छवि अनरस
हूं में अंसो रस कों निवासु है ॥ ३३८ ॥ दोहा ॥
ह मलारी के केहु पाइन पारी प्यारु ॥ लेहिव
हां अजहूं कित यें तेहु तरें रीत्यों रु ॥ टीका ॥ पृ
हे अति गुर मांनु हे सषी कों वचनु नाइका सों
कवित्त ॥ चंद्र कैचूर सी चारु छवि अरु माल
ती महली फूली सूषदाइन है ॥ हाहा के हा रि रही
सजनी यह मांतिनि हारि मने वेकी माइनि
जोवन जो सगर व्रज को हरि श्री तम साऊप
स्यों दरपाइनि ॥ लाहि केहा अजहूं वलितह
सो त्यों सतरर कियें हु राइनि ॥ ३३९ ॥ दोहा ॥
सो हहा हहि स्यों लतें केली काइ सों हाय हाक्यों वे
ठो कियों अंसी गवें ठी मों ॥ टीका ॥ यह नाइ
का मानवती सषी कों वचन नाइका सों ॥ कवि
त्त ॥ केती मनुहारि करि हा स्यों नंदला
लु ब्रजवनितांनि हा हा लहौ तिजा के नेक चाहते तो

हीतौ तू सयानी परकरा चित आनीये नेगति
कसं मांज विनु काज अवगाहै तौ॥सां है हरि
को हमकै तौ वाई सोहै न कृतम्यां मनु नल
कें रसकै उमाहै नें॥ कियो करा चाह निहम
ई कौन कहें अव अविग्ये दी भोर है कृतिग्वी
अवका है नें॥३ध०॥दोहा॥ निरदई नहि
नयो निरषु भयो जगतु पयधानु॥ यह नकहं
हुं अव जो सुनी सारि सारि यलुधानु॥ दोहा॥
पर मोन विरह सषी को वचनु नाइका गो मा
र कर कपट की सषी हाँ जो परकिया नाइका
करीये तो करीये॥इ.वि.म॥ अैसो अर्थान
भद मनमो पंरतु तो विनु नं कनु अँगयत्ता
रह. नाइहाँ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

नरितुपाइ ॥ आंनि गांठ्यो धुरति त्यों मन गांठि
छुटिजाइ ॥ यह पान मोचन प्रसंग विधंसस
षीकों वचन सषी सों ॥ कवित्त ॥ हंमै नाचपल
हुति सो उत्यों मघ नहीं सो मिलि विहरति अ
ति सोभा सरसाति है ॥ कुमति सें लहलही ल
लित लता बढि रही सब ही के उर प्रीति अधि
काति है ॥ कसीयां हठीली कों ऊरू ठ्यो न ठान स
कें मदन मरूर निसांछाती अकुलाति है ॥ दे
ख्यो रितु पावस के नह की निकाई माई आंनि
गांठि छुटै मांन गांठि छुटि जाति है ॥ उधरा क
हा ॥ सतर भौंह रूष वचन करति कठिन मनु
नीठि ॥ कहा करें हैं जाति हरि हेरि हंसोंहीं डीठि
॥ टीका ॥ यह नाइका प्रौढा उत्तमा सषी
ढि ॥ टीका ॥ यह नाइका कों
सिषावति है के तू मांन करियाके नाइक कों दे
षें मानु करतु नांही नाइका कों वचन सषी सों
॥ कवित्त ॥ तेरो कह्यों करि रूस नें कों ठानति हों
रूष रूषों कें तान लि मों है ॥ नीठि कठोर करों मन
हूं मुष हूं ते वषांनति वैन रूषो है ॥ कहा र सुबु

रौ अलीं चलौ लल चीजो अपनी [illegible]
कैसी करौं मन मोहन कौं सुष देषन [illegible]
हातहैं सोहै ॥३४३॥ दोहा॥ [illegible]
तुगो देषन हौ व्रजराज॥ रही घ[illegible]
धरि मान किये की लाज॥ टीका॥ [illegible]
चन सषी कौं वच्चन सषी सौं॥ [illegible]
रूसने की अति सोभा कहा कहा [illegible]
धरकी॥ आलि तु की विन ती सुन [illegible]
कौ केहियर की॥ छूरि गली सुना [illegible]
रतिकौ॥ न्हतु नाई भर कौ॥ मौ [illegible]
रही वहलाज धरी कलौ मान कर कौ॥ [illegible]
दोहा॥ चलौं चलैं छुटि जा[illegible]
यरचे दाये हाने अव आय [illegible]
यह्मौ न छुडावे कौं मषी कौं [illegible]
[illegible] वेकौ है मषी कौं [illegible]
मानं कौ [illegible]
[illegible]
[illegible]

मोहक अनुनई जुहुत्ती अतिताती ॥ लालचला
अवलोकितु स्त्रेंछ्छुटिजाइगोमांनुअवेंहमजानी
१४४॥ दोहा ॥ तुहीकहनेहें आपुहूंसमझति
सबैसयानु ॥ लषिमोंहनमनजोरहेतोमनुराषी
मांनु ॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रौढासषीकहति
हैकित्तेमांनुकरिसोनाइकासषीसोंकहतिहै ॥
मांनुकियेरमनीजनतकेवसपीतमहोतमतीय
हतेरो ॥ दोहा ॥ यहै अपने चित आनतिजानतिहै
करस्यांनघनेरो ॥ तोकरोमांनुरीमोंहनकोलषि
जोंसषिहोघरहैमनमेरो ॥ रूसिवोंजीमेंविचार
तिहों पैकहाकरोंसोरुनहोतुनरेरो ॥ ३४६ ॥ दोहा
मोहिलजावत्तिनिलजयहुलसिमिलैसबगात
भांनउदैकीओसलोंमांननजान्याजात ॥ टीका
यहनाइकाप्रौढामानप्रोचननाइकाकोवचनस
षीसों ॥ कवित्त ॥ तूतोंसिषवतिमनमोंहनसे
मांनुकरिमरहूहियेमयविचारठहरातरी ॥ निर
षतहूसभांनप्यारेकीछवीलीछवि आपुहीतें
हुलसिमिलातसवगातरी ॥ कहाकरोंनिलजय
मोहीकोंलजावतहैकहेजोपैहोइकहिवेकीव

थ्रूवात्तरी।।मोनकौउदो तुभयौ आसकनकीसी
भांतिमानुमनमांतहोनजानानतविलातरी।।१८४७
दातर।। उगनिगाडनेनडगिगहेनचेतुअचेतु
होकसिकरिरसिकोकरोयनिसषरसिंदन।।
टीका।।यहनाइकाकोवचनुमषीसो।।कवित्त।।सही
येजगकेउपलसनितेरहीयेगुरलोगनिमांऊग
से।।डरुआनियहेअपनेउरहोसमभाइरहीनहि
नेकेचसे।।अरुरेचकअरोकस्योनकरेत्तनहे
मनहारे तऊ हुलसे।।यहनेमुगधोसजनी
इनतेनेनुपेहरिहेरिहसेहीलसे ।। ३थ चा।।दा
हा।।सकुचिनरहीयेस्यामसुनियसतराहेवे
न।।देतरबोहेचितुकरेनहचित्तोहूनेन।।टी
का।। यहप्रथमसमागमनाइकापरकीया
सषीकोवचनुनाइकासो।।कवित्त ।। नाहीं
मेमतहेनईरीतहेइहकोयहरासिकमननिको
रतिअतिचेनहे।। यौनूबोहूचिकनावतु
अधितुपईमनमथकेविलाससुषदेनहे।।
कुचिनरहीयेसुजानमनस्यामसुनोक
भयोजोपेसतराइकहेवे सोस

चौंहं सेतीयें की वात हसीहै निचौंह यकहै ही
दतनैंनहें ॥ ३४९ ॥ दोहा ॥ कहा लडुंगे षेल
पें तजौं अवर परीवात ॥ नेह हसौंही भुभई भो
हं सौंहैं षात ॥ टीका ॥ यह नाइक कौं और सौ
आसक्ति ज्ञान नाइका नें मानु कीयो नाइकु
मनावन आयो सु वाही नाइका कौं मानु मुर
ते निकस्यौ सो सषी र नाइका सौं पा कौ मानछु
डाइवे कौं परिहास कौ प्रसंग चलायो सषी कौं
वचन नाइका सौं ॥ कवित्त ॥ हांसी तौं कीजी
ये जासौं लला जु हसै सु षुपायि नये तियज्ञै
सौ ॥ वारहीवार लै और कौ नांमु कहुं कावा है
तजौं चानि अवनें सौ ॥ या परिहास पै लैंहौं क
हा हरि पें तौं इन कहीयें मुरिवें सौ ॥ सौंहै कि
ये भई नीठि हसौंहीए भौंह कमांन मनोज की
जैसी ॥ ३५० ॥ सनत्वचे आगे कौ ॥ दोहा ॥ षल
वढई वलु करि थके कटे न कुवत कुठार ॥ आ
लवाल उरझालरी षरी प्रेम तरु डार ॥ टीका
यह नाइक की इंदलता सषी सौं नाइका कुं अथवा
देषन हीं मूरति मधु
नाइका कहै ॥ कवित्त ॥

रमनमोहनकीनैंतनुकमिलेंमिल्योंमनु
श्रवदातुहै॥श्रालवालउरतेंप्रगटभयो
प्रेमतरुदिनदिनफालरतुश्रतिसरसातु
है॥ताहिदूरकरयकोकितनेघलनिषगिकु
वतकुठारगहिकीनोऊनपातुहैं॥कहैक
विक्रस्रसवैंथकेंश्रतिवलुकरिसैंकनघ
टतुत्योंत्योंद्रढहोतजातुहै॥यश॥दोहा॥
करतुजातुजेतीकरनिचढिरसमरितासातु
श्रालवालश्ररुप्रेमतरुतित्योंतित्योंद्रढ
होतु॥टीका॥ यहमनहकश्रंगमेंद्रढतान
इकाकोंश्रथवानाइककोवचनसषीसोंस
षीनाइकानाइकहूसोंकहै॥कवित्त॥ श्रा
लवालउरमैंप्रेमनैंजवीजतातैंभयोश्राली
प्रेमश्रंकुरउदोतुहै॥सुरतसलिलसींचैयि
होतैंउमगिउरफूलफलप्रगटसोंविरहुश्रो
नपातुहैं॥कहैकविक्रस्रज्योंज्योंउमगिप्रव
लपूरकरनकटनिरससरिता नैं
कनठिगतुवाकीत्यों

रतुमैंरतुषरोंईत्ति॥ ढहोतुहैं॥२ पर॥ दोहा॥ ज
दपिसुंदरसुघरऊरमगुनोदीपकदेहु॥ तऊप्रका
सकरै तितौभरीयोजि२ तोसनहु॥ टीका॥ य
हसनेहवढाइवकोसषीनाइकासोंकहैनाइक
हसोंकहै॥ कवित्त॥ जदेपिचारुगहैंचिकना
ईसुढारढस्यौसुघरोंकिन्हिोऊ॥ यहवातप्रसि
द्धसवैजगयेकसीरीतसुरीतनिवाहतेदोऊ
३५३॥ दोहा॥ सरससुमिलिचितुरगकोकरि
करिअमितउठान॥ गोइनिबाहैजोतयेषेलिये
मचौगान॥ टीका॥ ॥यहसषीनाइकाकोसन
हकोढठतावतावतिलेंअरुप्रयाजनुनाइकसें
मिलापुकरायोंचाहतितिहसषीकोवचननाइ
कासों॥ कवित्त॥ सरसतुरंगअतिसुमलवि
मलचितुनाहिंचाहिताजनेसोचुरकिचला
इवो॥ लोकलाजवागसाधिअनुरागकरिद्रढ
अमितऊठाउनीनुकरिकारिचाइवो॥ कहैके
विकहमअभिलाषघरीहाथगाहिगोइनेरवा
हैतनवजीतपदपाइवो॥ षेलिवौकठिनयह

रतिहै ॥ नाइकके वचन नाइकसों ॥ कवित्त ॥ नै
हभरी नैननु को जवनै नजुर मिलीन वलीत
चितकोल गायो अतिसाउ है ॥ मिलन मिल
तमन हिलि मिलियकभयो पसों प्रेमफंद
को अनोखो उरझाउ है ॥ कहै न सकत लेरो
हियो निरमोही अति मेरो हियपग सौं कछु
असोई सुभाउ है ॥ तेरे अनआअवनआ
वेहू हैहै यह तेरे आ आ आइ जात प्यारे ल
न आउ है ॥ ३५६ ॥ सो ना ॥ ॥ ललन सलो
ने अरुरहै अति सनेह सों पागि ॥ तनक
कचाई देत दुख सुरन लों मुहलागि ॥ टीका ॥
यह नाइका पाठ है नाइकके प्रति हकरन में
कछूकपटु जानि उराहने मैं प्रगटकरतिहै
नाइकाको वचन नाइकासों ॥ कवित्त ॥ नै
कचितै चितचोरतही ॥ उरजोरत ही अ
नुरागसचाई ॥ रावरे प्रेम प्रबंधनु कोजि
तहीं तिन्हहीं सुनि यै चतुराई ॥ रुपसलों
नेसनेह पगे हरिप्रीति करंगमें बुधि रचा

स्बनलोंमुहिलागितऊदुखदेनलगी
यहनेंककचाई ॥ ३५७ ॥ नाइकाकोउदा
हनो ॥ दोहा ॥ मोहिदियोमेरोभयोरहि
जुजियमिलिसाथ ॥ सोमनुवांधिनसोंपि
येपियसोंतिनकेहाथ ॥ टीका ॥ यहनाइका
प्रौढापरकीयाउदाहनोंनाइकाकोवचन
नाइकसों ॥ कवित्त ॥ जोमनुमाहिमया
केदियोतुममोजियसेमिलिकेरसभीजें
भदरस्योनसरूपसुभाइमेंपेमपयूषम
दंमिलिपीजे ॥ मेंअपनेकरिजान्योयहीअ
वअंतरहोतछिनेछिनछीजे ॥ सोमनजोर
वरीकरिमोहनसोंतिनकेकरवांधिनदी
जे ॥ ३५८ ॥ दोहा ॥ भयेवटाऊनेहुतजि
जादिवकतवेकीउ ॥ अवअलिदेलउरोह
नोंउरउपजतिअतिलाज ॥ टीका ॥ यहना
इकाप्रौढापरकीयाउदाहनोंनाइककवि
घमाननाइकासषीसोंकहतिहे ॥ कवित्त
नेंननुसोंमनसोंतनसोंर. . . मिलल

तेसुषसाजनि ॥ मूलिगई सबबेबतियां हित
पुंजनिकी बहुभांति बिराजनि ॥ येतजिनेह
बटाऊभये अबबादिबकैसजनी बिनुका
जनि ॥ दृति उराहनों असमनुकों अपनेउ
हीचपिये अतिलाजनि ॥ ३५९ ॥ दोहा ॥
आपुदयोंमनुफेरिलैंउलटैदीनीपीठि
कोंनचालयहरावरीलालनुकावतिडी
ठि ॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रौढाउराहनोंदे
तिहैनाइकाकोंबचननाइकसों ॥ कवित्त
नेहतनलाउरमाइहियों अबदेषिबेकोंत
रसावतहौ ॥ तुमसोंहिदयोंअपनोंमनु
आपुहीफेरिलैंक्यों सिरनावतहौ ॥ तुम
तापलटों अबपीठिदईहरिकाहेकोंईठि
लुकावतहौ ॥ ३६० ॥ दोहा ॥ बिरहबिथा
जलपरसबिनुबसियतुमोंहियताल ॥
कछुजानतजलथंभबिधिदुरजोधनलौं
लाल ॥ ॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रौढाउरा
हनोंनाइकाकौंबचननाइकसों ॥ कवित्त ॥

हरिमो हियप्रेमसरोवरमें वसिबो निसिवा
सरहांन तहे॥ नहनीरवियोगविथासु
निर्देनकृपाउकरीउरश्रांन तहें॥ कवि
कृष्ण कहें अपने गुरको हमसो पियभेदु
न भांन तहें॥ कछु जांनपरीदुरजोधनलों
जलथंभनकी विधि जांनत हें॥३६१॥
॥दोहा॥ दछिन पियकें वामवेस विस
राइ तियआन॥ यके वाघरि को विषह
नाग वेरस विहान॥ टीका॥ यहनाइका
प्रोढ़ा हे सो नाइककों उराहनो दे तिहें दछि
न पिय यातें चतुराई पियसेवाधनु
जांनियें दछिणनाइकुवनेन॥ कवित्त॥
रसरीतिन रहनु चातुरीकसागरहो का
रिकाम कलानिधि रुपमानपरसो सव
सुघरनहोंनिकाई निकेतनु लष्यनहीं
प्रीतिसवहीकसरसहो दछिनसनेहरि
श्रेमभयवामवसविसराई आरतियदे
षिवेकों तरसे॥ कहे कविकृष्णयकभों न

वसिरहैहमध्यांनन्ताणीविरहविठानलाग
वरमैं ॥ ३६२ ॥ दोहा ॥ ॥ फिरतेजुअटकन
इनविनुरसिकसरसुनहिख्याल ॥ अनत
अनतानितनितसुनैनहिनेसकुचतनहि
ल ॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रादाउरोहनोंनाइककोव
ननाइकसों ॥ कवित्त ॥ केअमप्रानप्यारजग
ननतितिहांरगुनगूढनउधारेअवसोटरनिदरति
सवहीकोभावततहांरसिककहावनहारसिक
सीलेलालख्यालसोकरतहौ ॥ अटकनि
रनलगनिविनुदौरदौरप्रेमम्मनुसांचोपक
नऊधरतुहौ ॥ अनतअनततनितकीजतनहि
चितकहं जियमेंनकहू हसकुचधरतहौ ॥ उ
सुभरभरयोतुवगुनकनतुपचयोकुचतकुच
ल ॥ कोधोदास्योज्योंहियोदरकतुनाकिनेल
ल ॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रादाउरोहनोंनाइ
काकोवचननाइकासों ॥ कवित्त ॥ मोउरमैअ
नुरागकेफूलतेयोंपरतीतिकलीप्रगटीज्यों
रायरेऔगुनकेकनकाछ्वककेवकुलासेंग

रभरत्यो॥रंचकनाईकीवातनिसोंक
विकम्पकहेपरिपक्कभयप्यो॥ऋोतुमों
परषोपरें ऋवदोउमज्यादरकैनहि
॥दोहा॥ सदनसदनकेफिरनकी
दनछुटेहरिराइ॥रुचेतितेविहरति
रोकनघिहरनउरऋाइ॥टीका॥यह
नाइकाप्रोढाउरहेतोनाइकाकोवचन
नाइकासों॥कवित्त॥डोलतलालध
घरफांकतप्रेमकोऋाककहूनउधा
॥तोनिपरेंऋवलोकवसोउरहीकर
रूपध्याननिहारो॥वोनिपरीसुनि
छुरेमनुसोनेनहोरुचिसोनिप
रो॥ भांवतीसाजविहारीकियोकि
योंकिततेइतऋाइविहारो॥३६५॥
स्वाधीनपतिकादोहा॥ छन
कतिछिनकुभुजपीतम
होऋ्रादषतिघटावि
॥टीका॥यहसंजोग

धीनपतिकासषीकोवचनसषीसोंक
विता।। मतिभुजामनमोहनकेउच
लेहदुषे।। उमगेसुषभारी।।नाछविपे
कविकृष्णकहेघनदामिनिवारिकरे
बलिहारी।।कुंदनसतनवांनिकसोवनी
सारीसुरंगलसेलहकारी।।कारोछघ
टाछविसोंश्रविलोकतिसांवनसोंऊ
ष्पराचहिप्यारी।।कोनहीं हुतिलाईसव
यलमैरहीजुमोतिकुलाइ सुनेश्रंच
कोश्रापुत्योकरीश्रकोविलश्राइ।।टीका
यहनाइकास्वाधीनपतिकासषीकोंव
चननाइकासों।।कविता।।रातिदिनाछ
कियाहीकधोमपग्योरसमेरहतोसुष
दाई।।पासपरोसमसवकहतीयहवीस
विसयहहेहुतिहाई।।नूंजवतेगुनरूपक
कीरासिसुसीलसुहागिलगोनतिश्रा
ई।।प्रांणपतीश्रपनेवसकेतेभलीकी
नीसोतिकीछातिवराई।।३६७।।टीका।।

रकटाछुटुकीअतिपैंनी॥ तूंमनमोहन
केमनगालिनहींगडकेलिकलासुषदेनी
सौतिनकेउरमांझसदांनटसालज्यों
सालतिहैमृगनैंनी॥३६९॥दोहा॥ मु
किमुकिरूपकोहैपलनिफिरिफिरिजु
रिजमुहाइ॥ वींदिपियागमनीदसिसि
दींसवअलीउठाइ॥ [illegible] मुकिमुकि
रूपकोंहेपलनिफिरिफिरिजुरिजमुहा
इ॥ यहनाइकापरकीयावासकसिज्जास
षीकोंवचनसषीसोंक्रियाटैविग्धासंम
वे॥ [illegible] ॥जानिसमोंपियआगम
कोंचतुराईकरीचितचाहकेचाइके॥ सैंक
रिआधिकमंदकेंग्रांविजुकीसीकरीपल
केंघलाइके॥ जोरिभुज्ञातनुतोरितिया
अगरांनीसुटिकाइ॥ तूंजंभाईकै वैरीडु
तीढिगआइअलैउठी॥ सवउठमहीसों
उठाइकैं॥३७०॥दोहा॥ नभलालीचा
लीनिसाचटकालीधुनिकीन॥ रतपाली

लीअलतआयवनमालीनटीका
हनाइकाउनकठिनापरकीयानाइ
काकौवचनसखीसे॥कवित्त॥ आजु
माहनकोमगुनिरषतमेरपलकै
लागेमीतिउरतेनहालीहैभईनभ
लीदषिफीकोपरीषतालीसुनि
तधुनिचिटकालीआलीतिसाचालीहै
हरवनीकोरुषिमरगजवालिलासो
नियतरीझिवनमालीरतिपालीहै॥
हाकहाआलीअतिमदनविपतिघालो
लोसजभई जैसीव्यालीविकरालो
३६१॥दोहा॥ ॥निसिअंधियारीनी
लपटुपहरचलीपियगेह॥कहौदुराई
वेपांदुरदीपसिषासीदेह॥टीका॥यहना
रकाकृष्णाअभिसारिकासषीकी
अंगदीप्तिकोअधिका॥
निसाकोअंध्यारीम
मघरारुकीआई॥

रापैन्नातिसजीतनमेचकसारीसुहाइ
घूंघटमेंग्रवचंदहुराइकेहैकेविक्रम
करोचतुराइ दहकोदीपतिदीपासिषा
सीकहींयहकेसेंदुरैगिदुराइ॥३७२॥दो
ग्रीषरीसरपटपरोविधुग्रा
धमगहेरि॥ सेगलगमधुपतैलइभा
गतुलगीग्रघेरि॥ दोहा॥ यहनाइका
कृष्णाग्रभिसारिकाग्रपनीरातिकीवा
तसषीसोकहतिहैंराहमेंचंद्रोदयभयो
सोभौरनुगलीछाइलीनीयहपदनैरूप
गर्विताभई॥ सवैया॥ सामनिसोलषि
तेउहानुभयेससिदषतिमामतिसोवर
लीरी पंकजछांडिसुगाधकेलोभलगी
सगभौरनुकीग्रवलीरी॥ताहिसमेंमम
भागनिग्राइकेछाइलईजलकुंजगली
री॥३७३॥दोहा॥ क्योंछपाकरुछिपि
छ्योंतमुससहरिनसलारि॥सोतिहरि
तेचलिससिमुषीसुषतेग्रांचरुटारि

॥टीका॥ यह नाइका मुग्धा भिसारिका रात्रि मैं चंद्रमा के भय सौं दिषिसकुचित भई तब सषी समाधान करति हैं॥ कबित॥ सरै है सजि सुभ्र सिंगार चली अलि है गहि गो तिमंद हि॥ अंधियो सो मुत्री अली बधयो चहि देषि हय छित पेंन मंद हि॥ उच्यो कोप दुधारि के प्यारी उघारि के अपने मुष चंद हि॥ सो च सने मलि जो न हथी न करी गो बलि के मिलि के नंदनंद हि॥ ३९४॥ दो॥ उठि ट कठ कु य लो कहा पावस के अभि सार॥ जानि परंगी दे षि यो दामि निघन अंधियार॥ यह सषी नाइका सों कहति है अभिसार को सहज ही समय यह नाइका परकिया॥ कबित्त॥ क्यानन मैं नी लिमा लसन संग सषि क्यों मृगमद को लगुहाय पावस के अभिसार को मनोत्रिचार ...॥ चितमां कुध रंगा॥ कुंज के भा क्यों न चल तरि कं नारि ब्रज मुग्धा भिसारिका॥

मिलिगईनैकनपरतिलषाइ॥सौंधकेरी
रेलगीअलीचलीसगजाइ॥टीका॥यह
नाइकाशुक्लाभिसारिकासषीकोवच
नसषीसों॥कवित्त॥तनकीगुराईतरु
नाईकीनिकाइछाईजाकोउजराईतउजा
रोउजरातिहैं॥सरदनिसामेंप्यारीविसद
सिंगारुसाजेजगमगनीकीनीकोसा
भासरसातिहैं॥चलीअनुरागीमनमोह
नकेमिलिवेकोचांदनीमेंमिलिगईज्यों
कूनदिषातिहैं॥लपटसुगंधकीअछे
दउपटतिअंगताहीकीतरंगलागीस
षीसंगजातिहैं॥३७६॥संध्याभिसारि
का॥दोहा॥गोपअथाइनुतेउठगोरजछाइ
गैल॥चलिवलिअलिअभिसारिकेनल
निसकोंषीगैल॥टीका॥यहनाइकासं
ध्याभिसारिकासषीकोवचनुनाइकासों
किअैसमेंअभिसारुकरि॥कवित्त॥
छाडिअथाइनिमासलइकौंउठीसवगाय

कीअवलीहै॥छीनभईसुषहीरविकी छविगोरजपूरितगैलगलीहै॥चंद्रकलाप्रगटीनअजौचलिक्योंनकरैअलिरंगरलीहै॥मानिसुहागिलमेरोकह्यौअभिसारसुसैलसमैकेभलीहै॥३७७

षंडिता॥दोहा॥ पलसोहैपगपीकरँगछलसोहैसवबेन॥बलसोहैकतकीजीयतयअलसोहैनेंन॥टीका॥यहनाइकाअधीराषंडितानाइकाकोवचननाइकसो॥कवित्त॥सोहत्रसियलगातेरसमेपागनिसिजागेतातैआरसकेदरतियतहै॥ बेननुतरातअगिरातमुरिरवरफिरिकोरिहरियतपेनरियतहौ॥।नसुनेछलसोहैपीकपागपलसोहेद्रवेहडगनिअनंदभरीयतहो॥कैम प्या

श्रमुकालेकोकरतप

तेहै॥३७८॥दो

रसोनजुहीनिसि

कियेगुललाललालरंगनैंन ॥ टीका ॥ यहना
इकाप्रोढाअधीराषंडिताफूलतुकेनाम
सब्दकोचमत्कारहै ॥ श्रीकवित्त ॥ मोगरेमूलि
नलागोयेलालनसोंनजुहीनिसिसेंनपि
यारी ॥ जोकोंलसेंतनचंपकसोंदसनावलि
कुंदकलीछविधारी ॥ लोचनलालगुला
लकोरंगकरेजिनरेनिजगाइविहारी ॥ नि
दतहैअरविंदनिकीछविप्रीतिपरागभरेम
रभारी ॥ ३७६ ॥ श्रीदोहा ॥ कनककलीयतुउ
सुहैनकोकहिकहिवचनअलीक ॥ सबैकर
उरलोनयेलालमलयवरलीक ॥ टीका ॥ यह
नाइकाप्रोढाअधीरायंडितानाइकाकोवच
नुनाइकसों ॥ कवित्त ॥ आजुमयाकैमेरे
पधारेलसीछविरेनविहारे ॥ कैयोकलीयेंदुप
हैनकोवेनवनाइवनाइसनेरहेरे ॥ घूमत
लोचननीदभरेउघरेउरमें ॥ नखचिन्हतिहा
रे ॥ औरकेतउरसोंलगिलालयलालमहा
वरलीकनितोरे ॥ टीका ॥ पटसोंपो
छपरीकरोंसरीसयानबेम ॥ नागनिकेला

गौद्रगनिनोगवेलिरस्मरोबे॰टीका॥ यह
नाइकाप्रौढाअधीरापंडितानाइकाकोव
चननाइकसो॥कवित्त॥ आनुमयाकरिम
रंपधारपुलीवडभागिनिकीसुधरीहै॥धी
नमयपरछोरसोपोछिपरीकरोमामतिह
रिहरीहै।लागतिहैममनेननुकोअहिभो
मिनसीभयभूरिभरीहै॥कलिसमेंअहिवे
लकेरंगकोरुषनिमषनिपउधरीहै॥३२१॥
पलतुमेकअंजनुअधरघरेमहाउरभाल
आनुमिलेसुभलीकरीभलेबनेहोलाल
॥टीका॥ यहनाइकाप्रौढाअधीरापंडिता
नाइकाकोवचननाइकसो॥कवित्त॥ पीक
पगीपलकेंछलकेंछविनेननुमेंअरुनाई
धरीहै।अंजनचारुपखोअधरानिलिलो
रमहाउरछापपरीहै॥ लालविनागुनमाल
हियेमुसिकानिअनकप्रभानिभरीहै।नीके
बनेइहयोनिकआनुमयाकेमिलेसोभली
यकरीहै॥३२२॥दोहा॥ जिहिभामिनिभू
षनरच्योचरनमहाउरभाल॥उहीमनोअ

षियां रंगी औ अनु के रंग लाल ॥ टीका ॥ यह
नाइका प्रौढा अधीरा षंडिता नाइका को वच
न नाइक सो ॥ कवित्त ॥ वाही के नैनन को का
जर औठ पै नीको बन्यो जिनि पोछि के आऊ ॥
वाही के पाइ को जावक रंगु लिलार मझार
विदंत है को आऊ ॥ औ सो वन नाइ सिर कर सो
जिहि है वदले लाल विचछन को आऊ ॥ जानत
लाल रंगी उनि हीं अषियां अधिरानि के रंग
में दोऊ ॥ ३२३ ॥ दोहा ॥ वाही को चित च
रपटो धरत अटपटे पाइ ॥ लपट वुझावत वि
रह को कपट भरे उर आइ ॥ टीका ॥ यह ना
इका प्रौढा धीरा अधीरा नाइका को वचन नाइ
क सो ॥ कवित्त ॥ वनक से को हो तो विलगुन
मानति हो सव रस वस कियो चाहे वहु नाइके
ता के भागि जागे जाके संग निसि जागे मेरे भा
रम थे आये हितु हिय को जनाइके ॥ जानीय
तु वाही को लगी है चित पटी अटपटे चरन प
रत डगा नाइके ॥ लपट वुझावत ही विरह कुता
सन को कपट भरे हो प्रान प्यारे आइके ॥ ३२४

गहकिगांसग्रौरगहेरहेग्रधिकहवैन॥
दखिखिसोहैपियनयनकियरिसोहैनैन
॥टीका॥यहनाइकाखंडितानाइकुत्तुर
नकेचिन्हदुराउत्याकेग्रायोहवालक
रनलागीवतरातमैनाइककेनैनलज्जी
नेभयसखीकोवचनसखीसो॥कवित्त॥
ग्रायेतिग्रालपलीहिविलोकिसुधारसम
नहकीजैहिसेजेरे॥धाइकेग्राइलियें
हियमैंउमगासुखपुंजघनेरे॥माधसखे
नकरैईरहैमुखगांसगहेउरकोयकरैरे॥
लालकेनैनखिसातविलोकिरिसाइकैरा
धतहीइगफेर॥२५५॥दोहा॥ लेहलपे
रेत्योंरुकरिकलकरीयतद्दगलाल॥ ली
कनरीयहपीककीभ्रुतिमुनिफलककपो
ल॥टीका॥यहनाइकासापराधजांनि
नाइकानेत्रचंचलकरतिहैसोनाइककी
सखीनाइकाकेचित्तकोभ्रमुनिवारनकर
निहैसखीकोवचननाइकासोंजोनाइका
सखीसोंकहैतौभलसुरलगु

ठाइ ॥ प्राजुलषीयतुकछु ओरै भांतितेरीग
तिआंननपैउमगिलत लाईलेलकतिहै ॥ अकु
टीकुटिलअतिनेहसोंतनें [illegible] भईनेननुमेरस
कीतरंगछलकतिहै ॥ क[illegible] विक्रमयहघो
षैहियहालोकरिपीकलीकजांनितुवाल
वलकतिहै ॥ ३८६ ॥ दोहा ॥ पावकुसोनेन
तुलगतुजावकलाग्योभाल ॥ मुकरहोउ
गेलेकमैंमुकरविलोकलाल ॥ टीका ॥
यहनाइकाप्रौढाअधीराखंडितानाइका
कोवचननाइकसों ॥ कविता ॥ नोकरस
नीकेवसकैकेरसकेलिकीनीवाहीकीसु
गंधअंगमहकिरहीरसाल ॥ होतुकहमु
केमैडुरेनदुरायेचिन्ह अंजनअधरदि
येविनुगुनहियेमाल ॥ पावकसोलगतुक
सालममनेनुकोक्रमप्रानप्यारलग्यो
जावकुतिलकुभाल ॥ कैसीआनुराजति
हेसारसलेंसरसपेप्रारसमगनआविप्रा आये
रसीलेदषोलाल ॥ ३८७ ॥ दोहा ॥ हरिकै
[illegible]करीमेटनमारमरोर

छिगुनीयांछोर ॥ ८
ांयहदेषीयतुछलाछिगुनीयांछोर ॥
हथंडिलानाइकाकौसषीनाइकसोंकहै
तिहै ॥कबित्त॥ आपुकपाकरिप्राय
मलीकरीआजुसुबांनिकुमामनमोहै।
सषत्तिरावरीमाहनीमूरतिमानमराय
अंगुरकाहें।काहूछबीलीकोंछोरांछलाय
हछोरछिगुनीकेछलतुजोहै॥देषिसिलाइ
गीइहिकरौकछुजानतहोंअनषाइलजोहै
कहौ॥ दोहा॥ लालनलषपायडुरैचा।
तीसोंहकरना॥ सोरुचइहपनिहंप्रगटकहै
पुकारनेंन॥ टीका॥ यहनाइकाप्रोढाअ
धीरषंडितानाइकाकौवचनुनाइकसोंकहै
कबित्त॥ ॥प्रापजनीदेजभाललउक
मडुलनामांहियेकीमंभारि॥ वाकुवकुं
मकलमैंचिन्हमिलाहियेमसकीजिहि
श॥ लालनहौंप्रवतौनवुपासडुरैनहि
हकरैकिनिकोरी॥सोसचकहनिहं
नेंनपुकारिकहेरतिरंगकी।चोरी॥२
॥तुरनसुरतकेसेंउरलमुर
दोहा॥

जुरनौठि ॥ जैसेंदैगुनरावरेकहैंकैमौरौरि
ठि ॥ ॥ यहनाइकाप्रौढाअधीरापं
डितानाइकाकौवचननाइकसौंसषीकौवच
ननाइकासौं ॥ ॥ चित्रअंगअंग
केउरायेचतुराईकेपैंआरसमगनगातु
दुरिरहेनातहै प्रेमसुधापानकेहुलासतेंसु
हैमनमैनसुषसनैंञ्जनवैनहुलरातहै
सुरतहुरलकेहौंकेसेंकेदुरतलालनीछि
रिसुरततपनजलजातहै ॥ कञ्जआनप्या
रयहलौंगीदैकेनाजीठिप्रगटकरतिरति
रनचारिवातहै ॥ ३८० ॥ ॥ नरकततभा
गनसलिलगातिइंदुकलाकेवेद ॥ मीनरूगा
मैंमलमलैस्यामगातनषरेष ॥ ॥ य
हनाइकाप्रौढाअधीरापंडितानाइकाकौव
चननाइकसौं ॥ ॥ आयेहौमेरेम
याकरिमानहनराजतिमूरतिरंगभरीहै ॥ पं
कजनैनीकेपानिकौआजुहियेनषरेषर
मलीउघरीहैं ॥ मीनरूगागविराजतियोंह
विछाजतिलोहलहरेरहीहैं ॥ नीरमैनौल
मनौधौलिनालतइंदुकलामनौनापैधरी

नैइभूत
॥३९१॥दोहा॥ नभरेषासोहै नथतुमसो
नहिसवगात॥सोहैहोतननैं ॥ यहनोइकाग्रोध
हैकंतषात॥ टीका॥ ॥ वचननाइकसो
अधीराषंडितानाइकाकोवचनमयाप
कवित्त॥ हरिजानिपरीहमपैं सवकेनु
गधारेऽतैरतिकेलिकियें॥तुमतौं जदियें॥
पदाइकहौसवहींकोंवनेसुषपुंजलगीटव
मुकरीजिगियप्रगटेलोयेजुनहींतसकाच
कीनषरमहिये॥जगसोहैतीकरिये॥३९२
निलैंयवकाहकोसाहइलीनवरभय
दोहा॥तरुनकोकनवरनवरनगहग
भ्रूनिसिजागि॥वाहीके अनुरागइ॥ यहनाइको
रहैमनोअनुरागि॥टीका॥ ॥ काकोवचनन
प्राढाअधीरासंडितानाइकसप्रांनप्यारप्रात
इकसो॥कवित्त॥कसमैंनमूरतिविर
प्रीतिकेपधारमरेहेवागोरसपगल
गयोभागिकेंमरगजेअहेअकल
परीपागअरससुम
गिकेरावरलसत

भयकोकनत्वरुनअरुननिसिजागिकें॥मेरेजं
निप्रानपतिवारीप्रानप्यारीकेपरमअनुरा
गमेंरहेहैंअनुरागके॥३६३॥दोहा॥सो
हतुसंगसमानसौं यहैंकहेंसबलोगु॥पां
नपीकअरुअंजनुबनेंकाजरुनेंननुजोगु॥तिका
परनाइकाप्रोषितपतिकानाइकाकोवचन
नाइकसों॥कवित्त॥प्रथमनिमेंयहबा
तप्रमानहैयोंचलिआवतमतौसबहीकौ
जैसेकोतैसोईजोगुजुरैंजबहोतुमहासु
षहाजकहीकौ॥जोविपरीतविलोकीयैं
मनुकुढंगुतहीरगुलागतफीकौ॥पान
कौपीकबनेंपियअंजनुश्रौषितिहूंलगे
काजरनीकौ॥३६४॥दोहा॥प्राननप्रियहि
यमेंबसौनषरेषासिभाल॥मन्योदिष
योआनियहहरिहरूपरसाल॥टीका॥
परनोढाधीराअधीराषंडिताहैनाइका
कोंवचननाइकसों॥कवित्त॥पूरनप्रेम
सोंप्राननप्रियसोहिवसाइहियेंहियरोंकुल
सायो॥भालनईनषरेषविराजतसाहिम

पंकलसैंढविहायौं॥लोचनशगुरुओगुन
रंजनुघूंमननैननभागुनपायौं॥श्रीनम
प्रातहीप्रीतिभलौहरिकौंहरकौंधरहू
पदिषायौं॥३६५॥दोहा॥ ॥मोनचलै
वलितावरचलुराईकीचाल॥सनवाहिये
षिनषिननटननूप्रनबंधठावतलाल॥टी
का॥यहनारकाप्राढञ्रधीराषंडितानां
रकाकौंवचननाइकसौं॥कवित्त॥मौन
चलैकधूराचरीलालचंलावनयचतु
राईकीचाल॥छातीनषछतपीककपोलध
रेंब्रुतिरंगामहाउरभाल॥सातरत्तपरसौंहगु
पालहियेंउपजावनक्योंस्मिज्वाल॥
भागवडेकहिभांमिनिभालहियेंउपरी
जिहिभेटतमाल॥३६६॥दोहा॥ वैंसी
पैंजानैपरनिमृगाउननैरमांहा॥मृगनैं
लपरतुजुहियवेनीउपरीवांह॥टीका॥
महनाइकाप्राढञ्रधीराषंडितानाइका
कौंवचननाइकासौंनाइककीवियमांन
सषीसौंकहै॥ ॥कोहकौंकर

रावरीकुचाल ॥ विसुसीलागतिहैंवुरीहंसीयि
सीकीलाल ॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रौढाप्र
धीराषंडितानाइकाकोवचननाइकसों ॥
॥ कवित्त ॥ जांनतिहों हियकेहितसोंउनि
हींकेवसेसुषसोंनिसिनासी ॥ भोरकिहूंभ्रम
भूलिकेलालपधारइतेंकछूकीनीकृपासी
ठीसोंदियेकहांकेसदुरैयहआरहीनसकु
चालप्रकासी ॥ लागतवीसविसविसुसी
सुषसापनकेमुहआवतिहांसी ॥ ६०१ ॥
गडवडछविछाकिछकिछिगुनीछारछ
रहसुरंगरंगरंगिउठीनहदीमहदीने
का ॥ यहमहदीकोवरननुहैजोनाइ कोव
नाइकसोंहाइतौंखंडितानाह
वचनसषीसो ॥ कवित्त ॥ वा
गुनीकेछारछयेरुचिपुजनिपू
रचारुलसेंनहदीमहदीदलवि
यहीयेवियलोचनवालीकेरंगम
मानोंसुरंगभयेहो ॥ ६०२ ॥ टीका ॥ ९
चतिनिधरकफिरौंरतियोंघोरनुलेन

करैांजोंजांहियेलगेलगाेहेनैंन॥टिका॥ यह
नाइका प्राेढाधीराबेडितानाइकाकोवचन
नाइकसें॥कवित्त॥ हमसेंानप्यारेप्राननु
प्रीतिकेंपधारेहातोंतनमनवारोंकेरेंफुलसु
धाईयें॥नैंकनिरषतलगेनाहिंजोलगाेहैं
नेंनताकाेतुमकहाकराेप्रीवनननवाईयें॥कें
सेंराष्योजातुमारिमनवंध्योप्रेमडोरितेमलैं
नषारिकुहूरंचकनपाईयें॥काहेकोंसकुच
कीजेहचेतितेसुषदीजेंअलिन्हैंनिसंकर
सुलीजेंतहांपाईये॥४०३॥दाेहा॥ अन
नसेनिसिकोरसुनुउरवरिरहीविसेषि॥त
ऊलाजआईरुकतियरलजोहैदेषि॥टी
का॥ यहनाइकाप्राेढाधीराहेसषीकोव
चनसषीसों॥कवित्त॥ रातिकहूंअनतें
वितईमनमाेहनकलासुषसोहै॥तातेहि
येंअतिहिरिसछाइरहीअनिषाइचढाइके
भाेंहें॥ भारहीआवतिदेषिजऊकाेहियेंकाे
भईहकिवेंनरुषाेहें॥आईतऊअतिला
जहियेंनिरषेंसवलालषरेईलजाैंहें॥४०४

वित्तषैलषीषरीषरीभरीअनषवैराग॥ ॥
मृगनैनीसैान निभजैलषिवैनीकेराग॥ टी
का॥ यहनायकाअन्यसंभोगदुष्षितासषीको
वचनसषीसो॥ कवित्त॥ साजिसिंगारकुल
ससोंआईविलोकरहीचकितह्वैरहीरुकहि
सौंतिकीवीकनीचोटीकोंहागुलग्योंहटकौ
पत्तिकेपरजंकहि॥ ठाजकीसीकपोलधरें
करहासभरीभृकुटीकरवंकाहि॥ सोचमनी
विलषैमृगलोचनिलेतिउसासनआवनअ
काहि॥ ४०५॥ दोहा॥ रहीपकरिपाटीसुरिस
भरेभौंहचितनेंन॥ लषिसपनेंतियआनिर
तिजगतुलगतहियेंन॥ टीका॥ यहनायकाने
स्वप्नमेंनायकनेंअन्यासक्तिदेष्यौतबजागत
हूंनहीछाडतिअन्यसंभोगदुष्षितासषीको
वचनसषीसो॥ कवित्त॥ ८ पत्तिकेलिक
लालषगेउरलागईसोभनएपलकाहीं
औसेमेंप्यारीलष्योसपनेंहरिआनिवधू
सोंकियेगलवाहीं॥ पाटीसोंलागिरही
मृगनैनभरीरिसनैननुभौंहनमाहीं॥ वो

है
...तियजागीतऊहियलो
...हींचित्तपागीमहा ... गह्यो अ्रबालैमा
...गत्तिनाहीं॥ ४०६॥ दोहा॥ ... चुराईउ
चोलिप्यौ आयौ प्रवसी ... ॥टीका॥ यहना
नकी लखि सकुचोहि ... सखीकोवचनस
(काअन्यसंभोगदुखितासखीकोपद
बीसो॥कवित्त॥आपनी प्यारी अलीको पट
पियप्यारे कौं आपुहीं बालि पठायो॥ आगे
पिय प्यारेकौं ... हियराकुलसों नियरा
केआइलियो रितसों हियराकुलनकीरति
जवआयो॥ यतें मंक्ष ... कोभारी
नोहीलखीउरनेहलचायो॥ बोलेको ... अपनाइ
अवालोभस्यो जियकासोंकहौं अपनाइ
हायौं॥ ४०७॥ दोहा॥ छलापरासि नहा
पनें छलुकरिलियोपिराति॥ पिय हिय ...
योलखिविलखिदृसस्यकमुसिकाति॥
॥टीका॥ ॥यहनाइकाअन्यसंभोगदुखि
तासखीकोवचनसखीसो॥ कवित्त॥ ...
रोसिनिकेकरप्यारीकरीचतुराईसुचाटक
लाहे॥ मांगि लियो कछुऊहमसोंवहुकैं
मनुहारिकलाउभलाहे॥ प्रीतमसों ...
... कविकेसकैं ... लाहे

॥कवित्त॥

सषीकौवचनसषीसौं॥पेषीसुरंगमहाव
रसौंमिकैपांइनुचालरहीअनुबानी॥या
हिविलोकिविकाइगौमोहनुयातियहैअ
पनैंउरआनी॥येनमैप्रीतमकीअगुरीनु
ललाईविलोकिषरीविनबानी॥थावक
ज्वालजगीउरमैमुरझातिमहारिसमैंअ
कुलानी॥ ४१०॥दोहा॥ विधुसौंजावक
सौतिपगनिरषहसीगहिगांस॥सहजह
सौंहीलषिलियोआधीहसीउसास॥टीका
॥यहनाइकाअन्यसंभोगदुष्षितासषीकौ
वचनसषीसौं॥कवित्त॥बौलहसीकछुगांसगहै
लषिपैल्यौंमहावरुसौतिकेपाइनु॥जानि
यहैअपनेजियमैंयहतौनतिनाहिसिंगा
रकेभाइनि॥यतेमैंमोदभरीमुसिकाति
लजौंहौंविलोकनिदेषीसुभाइनि॥आधी
येहांसीउसासभरीअकुलातिषरीविसरी
चितचांइनि ॥४११॥दोहा॥हठिहितुकरि
प्रीतिसुलियोकियोंजुसौतिसिंगारु॥अप

नैंकरम्योलिंगुस्वांभयोंहराहरहारु॥दोहा॥
॥ यहनाइकाअन्यसंभोगदुष्षितायाकोंहा
रुलैकेंनाइकनेंसौतिकोंपहरायोसुनाइका
सषीसोंकहेंसषीसषीसोंकहे॥कवित्त॥
मालितियोंहिंतुंकैउठिप्यारनेंहारुसुचारु
प्रभानिसोंपाग्यो॥ ताहिलैलालचीलालु
भयोकहूंसौतिकेंधामतहींअनुराग्यो॥
वाहीकोंरीझसिंगारुकियोलषियाकिहि
येंअनषाहिकुजाग्यो॥ आपनहीप्रवनाइ
गुहींमुकतानकोंहाराहरहारसोंपाग्यो॥
॥६१२॥दोहा॥ ॥पास्योंसारुसुरागकोंइन
विनुतीपियन॥ उनिदोहींअषीयांककैं
कैंप्रलसाहिंदह॥टीका॥ ॥यहनाइकासे
तिकोंआलसवलितदषिअरुरसमसीआं
षिदषिसषीसोंध्वनिकरिकहतिहेंअन्यसं
भोगदुषितोहोइहर्षकरिकहेंलोमनावनहे
३॥कवित्त॥ ॥सोकरिप्रांषिउनींदीकरी
अधरुतरसोंमुषवोलउचास्योंवारही

वारजभाइके याहीबरों ननआरसुके ढर ढास्यो॥ कृहीजनतावतिहेंसुखसेनजगीय हनोमि निजामविचास्यो॥ छबिलाप्रीतमवो विनुप्रीतिसुहागकोसारु कितोइ हियास्यो धर्र॥ दोहा॥ सषिसोहतगोपालकेकरगु जनकीमाल॥ बाहिरलसतिमनोपियेदा वानलकीज्वाल॥ टीका॥ यहनाइकाप्रो ढाअधीराधीराषंडितानाइकाकोवचनस षीसों॥ कवित्त॥ भागिवडेनिरष्योयहवानि कुष्णजुकिलोचलिजाहुघरीकी॥ औनप्रभा लषैलागतिहैकछूमाहिनोमेनकीमूरतिफी की॥ दषीरीमोहनकेउरभावतीमांगलवि राजतिगुंजकीनीकी॥ पाईकुतीप्रगटीसुनो बाहिरज्वालमनोवडवानलहीकी॥ धर्थ दोहा॥ ।षिचमानअपराधहूचलगवडे अचेन॥ जुरतिगिदिनजिरिसबिसीहसडु हुनकेनैन॥ टीका॥ यहमानमोचननाइका केनत्रतो मांनसषिचेनाइककेनत्रअपरा

धसों षिचै है पै न तत विना दषै रह्यौ न जाइ या
तें रिस अरु षिसी आपु ही तें छांडि कै दोउन
के न चहै सषी को वचन सषी सों ॥ कवित्त
॥ मानु कें भामिनि अंचि रही द्वारा तिकहूं ह
रि अंत न बसै ॥ या ही तें माहनु नारि न वाइ रहै
उर सो चसका चुगसै ॥ कहा करै विनु दषें उ
हुंन कै मैं। न अवै न हीयें सरसै ॥ ओ छिनु रस
रस षिसी विचिनैं न मिलें सुषु पाइ हसै ॥ ४१५
सुवलभपतिका ॥ दोहा ॥ अजहुं न आयस ह
जर गैं विरह डुवर गात ॥ अब ही कहा चलाइय
त ललन चलन की बात ॥ टीका ॥ यह नाइका प्र
वत्सपतिका सषी कौं वचन नाइक सों नाइका
कौं वचन नाइक सौं है ॥ कवित्त ॥ षलन में क
हूं कान्ह कह्यौ तुम कालहों जै हो चरावन गाइ
सो सुनि कैं अति दीरघ स्वास सभरी सब अंग प
री पियराई ॥ ता छिन कें या न वली कें अंग नि
आजु हलौं न मिटी दुबराई ॥ लाल रहैं अनबो
लें कहा अब हीं चरचा चलवे की चलाई ॥ ४

विलषीऽभकोंहैंचषनुपियलषिगवनुव
राइ॥ पियगहवरआयोंगरेंराषीगरेंलगाऽ
टीका॥ यहनाइकाप्रियनुपतिकामध्या
याकोंयहदसादेषिनाइकहूनेंगवनुबरा
इकेंगरसोंलगाइराषीसषीकोवचनसषी
सों॥कवित्त॥ पतिप्रानपियाबिधुरेनक
हूंसुषसोंरहेंप्रेमपीयूषपगीयें॥हितुयां
निबिदेसकोंहोंनविदाहरिआयोप्रयानको
सानुकियें॥निरषीऽभकोंहैसनेंन[illegible]येंवि
लषीमृगलोचनसासलियें॥नकहीचलि
वकीकछूवतियांछतियांभरलीनीलगाइ
हियें॥४८७॥दोहा॥ ॥ललनचलनसुनि
चुपुरहीवोलीआपुनईठि॥राष्योगहिगाढै
गरेंमनोंगलगलीदीठि॥ टीका॥यहनाइ
काप्रवत्स्यपतिकासषीकोंवचनसषीसों
मध्याप्रवत्स्यपतिका॥कवित्त॥ प्यारीके
भवनहितुकीप्रानपतिआयोंविदाहोंनप
रदेसकोंअहिकें॥ललनचलनसुनिरहीं

अनबोलीतियआलीहूंनबचनकहायोंक
छुकछिकें ॥ चकितसीभईचहचौंरुसोंछायो
चितुआवतुसलिलदोऊनैननसोंबहिकें ॥
गलगलीडीठिकरहेरिहरसनमुषमेरजांनि
राष्यौवैहीगाढौगरेगहिकें ॥ ४१८ ॥ टीका ॥
ललनचलनुसुनिपलनुमेंअसुवाफलके
आइ ॥ भईलषाइनुसषिनहूंझूठेंहूंजमुहाइ
॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रवत्स्यतपतिकास
षीकोंवचनसषीसोंक्रियाविदग्धापरकी
याहोइ ॥ षलतिहीसजनीगनमेंव्रषभांनकु
मारसरूपसौंसानी ॥ कांन्हरुकालिकरैंगे
पयानुसुनीयहकाहूकेंआननवांनी ॥ आं
षिनमेंअसुवांफलकैयहबांतअलीहूनजां
नी ॥ यौंमुहमोरिजंभाइबकोंकरिउहमौंपो
छतिनैनसयानी ॥ ४१९ ॥ टीका ॥ रहिहैंचंव
लप्रांनयकहिकौनकोंअगार ॥ ललनच
लनकौचितधरीकलनुपलनकोंआर ॥
॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रौढाप्रवत्स्यतपतिका
नाइकाकौंवचनसषीसों ॥ कवित्त ॥ मैंनसुष

संगनिमें नेहकीतरंगनिधें अंगअंगपाग
रहेरंगमें उमगिहें॥ कसमसानप्यारसेंनक्षि
नोंभरिप्यारभयोआरहीतचसभयेऐसी
वानिगहिहें॥ पलनकीओटभयेकलनन
हतवैपलजेसीगतिहोतिसोहेंआवतिकह
तिहें॥ ललनविचारीअबचित्तचलनकीवा
तअबकौनकीअगारयेचपलप्रानरहिहें॥
॥४२०॥दोहा॥ चाहभरीअतिरसभरीविर
हभरीअतिगात॥ कारिसदेसदुहुनकेचले
रिलेजात॥ टीका॥ यहप्रदेसकोगवनु
होउनकेहितकीअधिकाईसषीसषीसोक
हति हैं नाइकाप्रोषितपतिका॥ कवित्त॥
कौनहूकाजकौकान्हरकीन्होंप्रयानमहू
रतसाधिभलेई॥ अंतरहोतदुहूनकोज्यों
अकुलातवियोगकसूलसलेई॥ पोहिलो
जतदुहुनकेप्रानलेंग्वालीरीकारिसदेसे
चलेई॥ ४२१॥दोहा॥ ॥मिलिचलिचलि
मिलिमिलिचलतआंगनअथयोभानु॥
भयोमहूरतभोरकोपो थ मिलानु

॥टीका॥ यह प्रदेस प्रयान कौ समय सषी
सषी सौं कहति है ॥कवित्त॥ रमन गमन प
रदेस कौ विचार चित साधि सुभ लगन गने
स कौ मनायौ है ॥साहस कै उर प्रान प्यारी
हूं कछु न कह्यौ मंगल हेर ई गहवर गरैं गायौ
है ॥चलत मिलत मिलि चलत चलि मिलत
चलत मिलत यौं ही वासर वितायौ है ॥भोर
कौ महूरत भवन ही मैं सांझ भई पौर ही मैं प्र
थम मिलान ठहरायौ है ॥४२२॥दोहा॥ वा
मां भां मां कामिनी कहि वालौं प्रानस ॥प्या
री कहत लजात नहि पावस चलन प्रदेस॥
यह नाइका प्रोढा प्रवत्स्यतपतिका
॥टीका॥ यह नाइका प्रोढा प्रवत्स्यत पतिका
नाइका कौ वचन नाइक सौं ॥कवित्त॥ प्रा
नाइका कौ वचन नाइक सौं ॥कवित्त॥ प्रा
यहे मोपै विदा इत पावस के घुमड़ घन कार
कामिनी भामिनी वाम कै वालु प्यारी कहैं म
ति नंद दुलारे ॥रंच कहूं न लजात हिये हिलु
कैं प्रवयै दुषदी जीय लुभारे ॥ऐसे मैं छा
विदेस चले करौं मेरी कहा गति प्रान पिया
॥४२३॥प्रोषितपतिका दोहा॥ पिय प्रान

दसगयौजवतैतवतैउनिनीधनकोधतुपा
ई वेषतषोटषरीटषरीटनसूषनदेतव
हैसरसाई ॥ ध २६ ॥
मरवकोसाहसुककेवउविरहकोपी
र होरतहू स सुहिस सिहिसरसिजसुरभि
समीर ॥ यहनाइकाप्रोषितपतिका
सषीकोवचनुसषीसे ॥ श्रीमन
मोहनसोजवतेविछुरीतवतेनपलोकल
पावति नीरविनासफरीज्योंपरीतलफे
रुभईउअरेंप्रतिनावति साहसुकेमरव
केसषीसुउधारिकेप्रानतुजोनसेंप्रावति
होरतसामुहेसीरीसमीरसरोजनिहीयपै
सोलगावति ॥ ध ३० ॥ षससको
विदसयदनवससांचदिषावतेवाल सि
यज्योंसोधतितियतनसिलगनिग्रगंदि
कीज्वाल ॥ नाइकाकेसनेह
कीप्रधिकाईहैयाते भई सोय
कीद बीनाइव है

जा दिनतें लग्यौं नवनेकु मन भावन सौं ता दिनतें मौंनकी मरूर निमरत है।। तासगुर लोगनके सासन सकति भरि येक श्वास लागी निसवासर भरति है।। बसलिसको च दमवदनके वसयातें कछू न वसाति ध्यानु पतिकौ धरति है।। लगनिकी ज्वालनि में वा लनिजु दहके यो विरह सियालौ।। वहु साध न करतु है ।। ४३१।। दोहा।। ।। करी विरह ऐसी तऊ गैलु न छाड़न नीचु।। दीनें हू चस मा चषनु चाहै लहै न मीचु।। टीका।। यह ना इका प्रोषितपतिका सषी को वचन नाइक सौं विरहा निवदनु सषी हू सौं कहै।। कवित्त कांन्ह कहा कहौं कंजमुषी कौ तिहारे विया गकी तापसतावति।। हो तनषरि दुवरी विन हो षिनदषि दसान ध्रुलीकलपावत्ति।। ऐसी करी तऊ गैलन छाड़तु श्रोरकहा कहियै कलावत्ति।। दषतश्रा
दैहूं मीचु की गैहि:

री उरमैं निठुराई ॥ तागनि तौ गनवे तरहे नभ
यसभ यविनुवा सुषदाई ॥ यतिथि श्रीम
लौ घांसके सांभ लौ ग्रांनु पर तनन मे रहे माई
ध ३६ ॥ दोहा ॥ ६ ॥ श्राऽदंग्रालय्रसनजाऽ
की राति साहसु केसनेहवस सषी सवेदिग
जाति ॥ टीका ॥ यह विरह निवेदनु प्रोषित
पतेका नाइका को वचन नाइका सों सषी स
षी हू सों कहे ॥ कवित्त ॥ लल विनु माली वि
छुरे ते भुजवाल भई निपट विहाल विथा
उर मर साति है ॥ श्राऽदेवसनआलेजाऽ
हू की राति माऽ स हि सुकै नेह नाते सषी दि
गजाति है ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ सुनत पथिक मु
हमा हनि सिल्लु वैचल तिगुरिगाम ॥ विनपू
छे विनु ही सुने जियत विचारी वाम ॥ टीका
यह नाइका प्रोषितपतिका विदेस मे पथि
कके मुष की वात सुनि नाइका के नेंग्रटकर
ले याकी दसा जानि सषी को वचन सषी
सों ॥ कवित्त ॥ सीत समे हू की राति मे लूहे चे

लेउहिदेसहुलासनसानी॥आपुसमैंउत
रातवैठीहिअचानककानपरीयहवानी
छांडिदयेसवकाजविहंसीकीवुधितही
घरकोअकुलानी॥प्रानपियारीकीआउ
गईसुधिजीवनिहैंतियमेंयहजानी॥४
३५॥दोहा॥ मारूसुमारूकरीऽरीमरीम
रोहिनमारि॥सींचगुलावघरीघरीवरीव
रीहिनवारि॥टीका॥यहनाइकाप्रोषित
पतिका॥उद्वेगदसानाइकाकोवचनसषी
सोंरतरंगसषीसषीहूसोंकहैतोसभवै
कवित्त॥वालमविकलतेविकलप्रतिप
नकछूसूरतनप्रानवन्चेकुपहीकोदउरी
औरउपचारकरिमारिमारिनमरीजोपै
हितहितूहैतोकृस्नपारकोंमिलाउरी॥घ
रीघरीसींचतिगुलावकेफूलतोकियेकै
हाचातिहमोहूधेंवताधेरी॥भरितघरी
येंमारीमारीकोंडरीयेंविरहागिनिवरी
ये[illegible]अववाहुरी ॥४३६॥

दोहा ॥ पलनुडगिशिवरूनीनुवढिरहिकपोलनहराति ॥ असुवापरिछतियाछिनकुछनिछनाइछपिजाति ॥ टीका ॥ यहनाइकामध्याप्रोषितपतिकासषीकोवचनसषीसोनाइकहुसोनिवेदनुकरतीसभवे ॥ कवित्त ॥ वालनदलालाकेवियोगनविकलयानैयनपन्नविधिकेसवासरवितातहे ॥ विरहतताईकीवढनिचरनीनजातयेतमानननैवाकेकुसमसेगातहे ॥ पलनप्रगटवेहतवरुनीनहूंनेपरनकपालपेतुरतढरजातहे ॥ सलिलकीवूंदतातीछितपेपरतिअसेंछातीपरअसुवाछनकछपिजातहे ॥ ४६ ॥
दोहा ॥ फिरिसुधिदेसुधिद्याइप्योंइहिनिरदइनिवास ॥ नईनईवहुरोदईदईउसासिउसास ॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रोषितपतिकायाकीअवस्थासषीसषीसोकहतिहे ॥ कवित्त ॥ आलीवियोगभयेवनमालीकेव्याकुलवालपरीअकुलाइ ॥ पोहनकीपु

हाथ॥ चाटी हिडोरे सरहैं लगी उसासनु
साथ॥ टीका॥ यह नायका प्रोषितपति
का कसता को अधिकार सषी को बचनु
नाइकासो सषी सषी सूं से कहै तो है इदस
अवस्थान मैं आधिस्वासम संचारि सुकमा
रतान संभवे॥ कवित्त॥ मोहनलाल ति
हारे वियोग रहै॥ ब्रजनागरि चित्र कढी
सी॥ होति छिनै छिन आरही रंग अनंग
की वेदनि अंग वढी सी॥ भावति जाति ढ
सातु कहाथ उसासक सांक्ष हिंडोर चढ
ढीसी॥ घातन आइ इतो डुवराई सषी ल
षि सो वसमूह मढी सी॥ ४४२॥ दोहा॥
नेकनकुरसो विरहझर नेहलता कुम्हि
लात॥ नित नित होति हरी हरी षरी झ
लरति जाति॥ टीका॥ यह नाइका प्रो
षितपतिका नाइक को बचनु॥ कवित्त॥
नंदके दुलारे प्यारे भये जन चलीनेतन वही
तेव हतातीह्न के छ्बातीव अकुलाति हैं॥

सुधि आंखे घरी घरी सूल से सलत उर
प्रान परे परवस कछून बसाति हैं। दास तन वि
रह झर जदपि सनेह लनाऊ रसीन दिनै म
हन कुम्हिलाति हो। दिन दिन छिन छिन उम
गन अधिक हाति हो हरी हरी घरी घरी का
लरति जाति हैं॥ ५५४॥ दाहा॥ याके
उर और कछू लगी बिरह की लाइ॥ पजरै
नीर गुलाब के पी को बात बुझाइ॥ टीका॥ य
हनाइका प्राषितपतिका अवस्था सषी स
षी सो कहति हो। का बिना आसी दसा लषि
हो अकुलाति कि तो उपचार विचार ध कौ
री॥ आनन नवालेन षाले विलाच नु दुव
रो होति न छिनै छिन पीरी॥ का के हियें कछू औ
रै अनोषी वियागु लता सन ज्वाल लगी री
नीर गुलाब के डारे वरैं पिय प्यार की वा
त ही होति है सीरी॥ ५५५॥ दोहा॥ हे
मति सुष करि कामना तुम हि मिलन की
लाल॥ ज्वालमुषी सी जरत लषि लग
नि अगिन की ज्वाल॥ टीका॥ यह नाइका

हाथ॥चारी हिंडोरेसरहैललगीउसासनु
साथ॥टीका॥ यहनायकाप्रोषितपति
काकसताकोअधिकारसषीकोंबचनु
नाइकसोसषीसषीसूंसेकहैतोहोइ८स
अवस्थानमेंव्याधिस्वांससंचारीसुकमा
रतानसंभवे॥कवित्त॥मोहनलालति
हांरेवियोगरही॥ब्रजनागरिचित्रकुठी
सो॥होतिछिनेछिनआरहीरंगअनंग
कीवे८निकअंगवदीसो॥व्यावतिज्ञातिछ
सातकहाथउसासकसाक्षहिंडोरेव
ढीसो॥धातनआईहुतीदुवराईसषीलि
षिसोबसमूहमढीसो॥४४३॥टीका॥
नेकनकुरसोविरहभरनहलताकुलि
लात॥नितनितहोतिहियहरीपरीफा
लरतिज्ञाति॥टीका॥ यहनाइकाप्रो
षितपतिकानाइककोंवचनुकवित्ति
नेदकेदुलारेप्यारेभयेजवतेतेनवलें
नेवलतातीव्हैकेछातीमेंकुलातिहै

उधिअौंत्रैघरीघरीसूलसेसलतउर
प्रांनपरेपरवसकछूनवसातिहैं॥दास्तनवि
रहरजद्दपिसनेह[illegible]नाहुरसीतदछिनैक
हनकुमिलातिहै॥छिनछिनछिनछिनउम
गअधिकहातिहै॥रहरहराधपीवरी
लरतिजातिहै॥धधध॥दोहा॥॥याके
उरअौरकछूलगीविरहकीलाइ॥पजरी
नीरगुलावकैपीकीवालवुझाइ॥टीका॥य
हनाइकाप्रोषितपतिकाअवस्थासषीस
षीसोंकहतिहै॥[illegible]॥रूसीदसालषि
हौअकुलातिकितोउपचारविचारथकी
री॥अाननवालेनबोलेविलोचनदूवरि
रोहोतिनछिनैछिनपीरी॥काकेहियेकछूअौ
रअनोषीवियोगदसासनज्वालनगीरी
नीरगुलावकेडेनोवरैपियप्यारकीवा
तहिंहोतिहैसीरी॥धधय॥दोहा॥ह
मतिसुषकरिकामनातुमहिमिलनकै
लाल॥ज्वालमुषीसीजरतलषिल
अगिनिकीज्वाल॥टीका॥यहना

षनसवअंगरहिअवलौघोषैभयौवल
चलौंजियसंग॥दोहा॥ यहनाइकाप्रो
षितपतिकानाइकाकौवचनसषीसौस
षीकौवचननाइकसौंअरुसषीसषीह
सौकहैतैसंभवै॥[illegible]॥ जौलौंप्रान
नाथकेसमीपरहैतौलौंअंगअंगस
रसानेसुषरासिकेभौगिकै॥ न्यारहेतप्यार
केवियोगविथावारतहीनातौकरिहौंतौ
वेअंगगाउगयेभागिकै॥ दुषकीनिकाई
कछुवरनीनजाईमाथौयतौदुषसह्यौ
नऊरहैप्रेमपागिकै॥ पेनभयौहिनै
होइहौंलौंसाथदीनौंअवचलिवौकियौ
स्वासंगप्राननुकेलागिकै॥४८॥[illegible]॥ छतौ
नैहकौआगरहियैभयौलषाइनवाकु॥
विरहतच्यौंसुषस्यौसुअवसैहइकैसौंअं
[illegible]॥ यहनाइकाप्रोषितपतिकास
षीकौवचनसषीसौनाइकाकौवचनस
षीसौंसंभवै॥[illegible]॥ जौलौसमीपर

रितोंलगिमेंअपनोंमनभायोंक
।।काहूनलह्योयहभेदुनजीयको
दियहासबमोनुभस्योई।।नहछूतोई
तोंहियेकागरकोनहूभांतिनजांनियर
स्योंई।।सेंहडिकेसोंलियाउअलीविरहा
नतोअवहूउधस्योई।।सेंहडिकेसोंलि
अलीविरहागिनितेंअवहूउधस्यों
।।४५०।।दोहा।। जस्योंजुआगिवियो
कीवह्योंविलोचननीर।।आठोंजामहि
रहेउटनोउसासससमीर।।टीका।।य
अवस्थाविरहकीनाइकुअथनाइका
अपनीअवस्थासषीसोंकहै।।कवित्त
सबहीतेंकठिनसनेहकीलगनियहकिनि
सुषुपायोमनुप्रेमपथुडारिके।।जाकेतन
लागेसोईजानैजुहभेदुयहवेदनुविषमको
नुसकतिसम्हारिको।।कहैंकविकृष्णयह
गवू
भेंखद्भुतगतिपजस्यों
होडगवारिको।।

षनसवअंग॥राहिअवलौघोषौभयोंचल
चलोजियसंग॥दोहा॥यहनाइकाप्रो
षितपतिकानाइकाकोंवचनसषीसोंस
षीकोंवचननाइकसोंअरुसषीसषीह
सोंकहैंतेसंभवे॥सवैया॥जौलौंअंगन
नाथकसमीपरहैतौलोंअंगअंगमें
रसानसुषरासिकेंॲगिकें॥नारहीतपार
केवियोगविथावारतहींनानोंकरिहौंत
वेअगाउगयेभागिके॥दुषकीनिकाई
कछुवरनीनजाईमायीयतौदुषसह्यौ
नऊरहैप्रेमपागिकें॥पैनभयोंहिनां
रहिहौंलोंसाथहीनोंअवचलिवोकिया
स्योंसंगप्राननुकेलागिकें॥४८॥दोहा॥छते
नेहुकागरहियेभयोलषाइनदावु
विरहनचोंदुषस्योंसुअवसेंहऽकेसोंग
कु॥टीका॥यहनाइकाप्रोषितपतिकास
षीकोंवचनसषीसोंनाइकाहकोंवचन
षीकोंवचनसषीसोंनाइकाकोंवचन॥जौलौंसमी
षीसोंसंभवे॥कवित्त॥

सोंहरितोंलगिमेंअपनोंमनभायोंक
स्योंइ॥कारूनलह्योयहभेडनजीयकों
नहंपिहासबमोंनुभत्योंई॥नहछूतोंई
कृतोंहियेकागरकोंनहंभांतिनजांनिय
स्योंई॥सेंहडिकेसोलिपाउअलीविरह
गिनतेंअवहूंउध्यस्योंई॥सेंहडिकेसोलि
पाउअलीविरहागिनितेंअवहूंउध्यस्यों
ई॥४४५०॥दोहा॥ जस्योंनुआगिवियो
गकीवह्योंविलोचननीर॥आठोंजामहि
योरहेउठतोंउसासमीर॥टीका॥य
हअवस्याविरहकीनाइकुअथवानाइका
अपनीअवस्यासषीसोंकहै॥कवित्त॥
सबहीतेंकठिनसनेहकीलगनियहकिनि
सुषुपायोंमनुप्रेमपथुडारिके॥जाकेतन
लागेंसोईजानतुहैभेदुयहवेदनुविषमकों
नुसकतिसह्यारिके॥कहेंकविक्रमयह
अंगअरुभुनगतिपजस्योंवि
सोडगवारिके॥नउरषों

षनसवग्रंग॥राहि॥ अबलोंघोषोभयोंचला

चलोंजियसंग॥दोहा॥ यहनाइकाप्रो

षितपतिकानाइकाकोंवचनसषीसोंस

षीकोंवचननाइकुसोंग्ररुसषीसषीह

सोकहैनेसंभवे॥सवैया॥ जौलोंग्रान

नाथकसमीपरहैतौलोंसुखगग्रंगस

रसानसुषरसिकउसीके॥ म्यारहीतप्यार

केवियोगविथावारतहीनानोंटकरिहांते

वक्रगाउगयेभागिके॥ दुषकोनिकाई

कछुवरनीनजाईमाघीयतोंदुषसद्यो

नऊरषेप्रेमपागिके॥ पेनभयोंहिनो

रीहोलोंसाथदोनोंग्रवचलिवोंक्विा

रोसंगपानतुकेलागिके॥४८॥ दोहा॥ छतो

ह्योंसंगपानतुकेलागिके॥ लषाइनद्यांकु

नेकुकागरहियेभयोंलषाइनछांकु

विरहतनच्योंदुघह्योसुअवसेंहुकेसोंअ

॥दोहा॥ यहनाइकाप्रोषितपतिकास

कुं॥दोहा॥ यहनाइकाहूकोंवचन

षीकोंवचनसषीसोंनाइकाहूकोंचचन

षीकोंवचनसषीसोंनाइका॥ जौलोंसमी

मीसोंसंभवे॥कवित्त॥

पकचंदनुचंडकुचंदनुष्कोन सुहाई॥चतुरहे चितचेतुकीचांदनीवधतुवांवानुरुषुके माई॥ ग्रानिवन्यो अवरुसेसमो इक्हत सवैजुरतेसुषदाई॥४५॥दोहा॥ ॥होहिवे री विरहवस केवीरे सवगामु॥कलानानी ये करलहे ससिहिसीतकरनामु॥टीका॥य हनाइकाप्रोषिलपतिकानाइकाकोहखनु सषीसो॥कवित्त॥ कुभज्जू अचयोसोपन्न योनपाहीतें उरगालिजन्योलमहं डसोपिवि षकेदसे॥हाथी अवलनिकोकलकीवेच रायोसोसई सकलाजानिहितुकीनोमलि नरसो॥ केधोसवलीकीमतिहीनभई सै रीश्रालीकेधोहाहीवीरीभई विरहकेदर सो॥कै दषियतुपावककेविसमविसवषे सीतकरुकाहते कहनश्रेसचंदसो॥४५७ कवित्त॥ ॥श्रीरभांतिभयूँवुयचोसरुचं दनुचंद॥पतिविनुअतिश्रौनुविपतिमारु नुमारुतमंद॥टीका॥यहनाइकाप्रोषित

तो जागत सपनव सरस रिस्चै
सुरति स्याम घन की सुरति वि
न॥ टीका॥ यह नाइका अप
ति स षी सो कहति है इस अ
स्मृति संचारी जानीये॥ क
हति निस द्योस विरहानको
न परवस परे मन को सो व
पनै हू चित चढी रहे विनव
त्ति पन को॥ रस हू मे रिस
हू मे को न हू वगर हू मे व
भूलति सुरति निजन तन हू
न कोसे हू सुरति स्याम घ
॥ ॥ ॥ भो यह अंसो
कुञ्चंद न वै न चांद को चांद
चोन॥ टीका॥ ॥ यह ना
का इस षी व स्थान मे उ
न स षी सो॥ टीका॥ न
ती मीर ने पार हिये हार

हतश्रावै॥ तौंवहसोचुलहैनवलाइल्यौंयो
श्रचकौंचलियैचुपुचापै॥ ४६४॥ दोहा॥
तजतश्रठाननहठपस्यौंसवमतिश्राठौंजा
मु॥ भयोंवामुचावामकौंरहतुकामवकाँमु
टीका॥ यहनाइकाप्रोषितपतिकाविरहनि
वेदनुसषीकौंवचनुनाइकसोंसषीसषीहू
सोंकहैतौऊसभवै॥ कवित्त॥ लालमन
भांमनतिहारविछुरैतेज्वालविरहहश्रागि
ममैवरातिनहुनाध्यहै॥ वहीकामुकामुवाम
दवकभरमभूलिदल्यौंवाहीवामसोंविषम
वैरुवंधहै॥ सठमतिहतिहल्पाहिदयाउरपर
हरिश्राठौजामुरहतसरासमरुसांधहै॥
कौजेधौंकहाहूपाउछाइतुनश्रौटयाउत
किहानिवकौदारुलाग्याइहिवाधिहै॥ ४६५
वालवेलिसूषीसुषदइहरूषीसुषधामु
फौरइहइहीकौजीयैसुरससींचिघनस्या
मु॥ टीका॥ यहश्रनुरागनिवदनुसषी
कौंवचननाइकसोंपुरषमांनकप्रसंग

कुमेंसंभवैं॥कवित्त॥हितुकरिजाकोंहरिलि
अवितुलालनयहकिनहेंउचिततहियनोंउ
षदिजोयें॥जाननहेंनीकोंप्रीतिरीतिकों
प्रवीनपनुक्योजेनं॥हसुषदेकेंसुषली
जोयें॥रावरेउसहैहेंसुबरुषधामहोसो
वालवेलिसूकीजाहिनिरषतननछिजो
यें॥प्यारेघनस्योमगजर निनिवारनहों
सौविकेंसुरसकेरिऽहउहीकोजीयें॥धद्धः
दोहा॥लालतिहारविरहकीअगिनिअनू
पअपार॥सरसेवरसेनीरहकरहूमि
टेंनझार॥टीका॥यहनाइकोमोषित
पतिकासषीकोवचननाइकसोंविरहनि
वेदनु॥कवित्त॥कैसप्रानप्यारेलालविछ
रेतिहारेबालअतिहीविकलपिलिवकोंन
रसतिहैं॥सारितोतितातेउपचारसीडन
तोछिनकुलातिछातीपरपीरनस
वाकेतनरावरविपोगकीअगि
अदभनातिसोंअपारद्दर

ननरावरेविधोगाकोअग्निअैसीअद्भुतग
तिसौंअपारदरसतिहैं॥ मनहरदूतेंआरसी
हीनपरतिपजरतिज्योंज्योंनारकीभरतिव
रसतिहै॥ ४६७॥दोहा॥ दषातिपुरकपूरले
उपजैजाइजिनिलाल॥ छिनछिनजातिषरीष
रीछीनछवीलीवाल॥ टीका॥ यहनाइका
कोंअनुरागनिवेदनुसषीकोवचननाइकपै
विरहनिवेदनुहैहोइ॥ कवित्त॥ विछुरेंतिहा
रलालविलषीविकलबालपरीविललात
कैंपहूंधीरतुधरातुहैं॥ येतेमानकष्टभई
परेंपरजैवकपरनीछिकहूनिरष्योंपरतुवा
कोंगातुहैं॥ कालिहीसुआजुनाहीआजु
हीसुअबनाहीयातेंपरिनबनुकोंजीवअ
कुलातुहैं॥ अैसीछिनछीजतिविलाइजि
नजाइबालज्योंकपूरबानीतेंकहूंरउछिजा
तुहैं॥ ४६८॥ दोहा॥ हसिउतारहियतैं
दईतुमजुतिहिदिनालाल॥ राषतिप्रान
रज्योंवहैचुहटनीमाल॥ टीका॥ यह

नेवद्नुसषीकोवचनुनाइकसौ॥कवि
ह्वरीऐसीभईविछुरैतियसनहूंमंन
ापरैसालौ॥ग्रालीविलोकिकैमीऽ
लथगयोइकसाथसवैसुषनालौ॥
ासविसउठिजातछूपूरलौराषतौ॥ग्रा
ाकमांननुकेलौ॥जावरलालनतिलौरोद
यांघुघुवीकोहराउरमांफनहीलौ॥ग्रा
~~कवित्त~~ ॥६८॥ दो॥ ॥
ाकहौहरिकोप्रसाहरमानतुकौइस
रह्योलजरिपोलषमरिवांभयौग्रसौ
रहन्यालजरिपालषमरिबाभपौग्रसौ
॥ दी कौ॥यहनाइकाप्राषितपतिकास
ीकोवचनुनाइकसौ॥कवित्त॥प्यारेमन
माहनतिहारेषिछुरैतेकपभानकोकुमारि
ईश्रीकलतकोनहे॥जलविनुमीनज्योंवि
कलतलफतिग्रतिकहैकविकमनऐसी
हातिग्रानिवांनिहौ॥ज्योंज्योंकरीअनुउप
चारुकीभीरज्योंज्योंघटतिइनीपीरहै
षिनहूंमानहौ॥विरहकोज्वालेतिसोंज

नवालकोअनेगडुषदाग्पोहै॥ कोधुरी
निपरकुभिलाइगई फूलनिमिदुष्कअ
नुकूलभोसमूलहैसुषभाग्पोहै॥ तु
मजुपदायोसामेद्योनोजाइवाहिउनि
लीनोग्रतिहितुकरिबितुअनुराग्योहै
करपरसनहोछिनकगयोनीकअरगु
नावाकेउरमेअबोरव्हैकेलाग्योहै॥४७२
॥दोहा॥ याकीजतनअनेककरिनै
कनछाडतिगंल॥ करीषरीदुवरीसुल
गितरीचाहचुरैल॥ टीका॥ यतनाइ
काकालगनिसषीकोवचनुनाउकसों
कहिनारामनिरामनिभाइगईहिय
मेधसिपांननुमांहबगीहै॥ होकरिथ
कीउपाइसबेहरिजंत्रनिमंत्रनिहूंन
ईगीहै॥ देहिसुषाइकरीदुवरीडरीवाव
रीज्योंसुधिबुद्धिभगीहै॥ यलमेवाकी
नछांडतिनागलचुरैलव्हैरावरीचाहल
गीहै॥४७३॥दोहा॥ पियकेध्यानगही

गहिरहीं ॥ वहो केनारि ॥ आपुआपुहिआर
सीलषिरीफ्तिरिफवारि ॥ टीका ॥ यह
नाइकाकोलगानितअयातासषीसोव
चनुसषीको ॥ कवित्त ॥ नफुलग्योमनभा
वनसोउनितोआगइयेंहवानिनरहे ॥
ध्यानहीध्यानमेआजुकधृ व्रषभानुसु
ताभईकोनमईहैं ॥ आरसीमेलषिआप
नीमूरतिआपुहीरीझिनिहालभईहै ॥ पूर
नप्रेमकोजातिजगीअरुआनिसवेसु
धिभूलिगईहै ॥ ४७४ ॥ पुरिषवियोग
टीका ॥ आरपरेनकरेहियोजरेषरपरअ
र ॥ लावतिघोरगुलाबसोमिसेमिलेघ
नसार ॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रोषितपतिका
नाइकाकोवचनसषीसो ॥ कवित्त ॥ का
हकोतूंघनसारगुलावमेघोरघनेघु
सिचंदनुलावे ॥ काहकोसायरनीरभि
गाइउसीरपषानिसमीरढुलावे ॥ तोहि
कहाजकएआंसीपरीपजरीउरभ्रागिबरी

नहिं पाती प्रिय लाती कौ सुरत करि छाती गव रऽआई आंषि भरि लीनी है ॥ ४८० ॥ टीका ॥ विरह विकल तिनुही लिषी पाती दई पठाइ ओं कवि ह्नै नीयो सु सुचित सूनैं वांच सु जाइ ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रोषित पतिका पत्री आई या तें दोऊन की विरह की अधि काई लै सू समजा निये ॥ टीका ॥ विरह म रु रतें नलन की सुधि चाल अति व्याकुल अ चल प्रेस्यो रहै गई ॥ लिष ये को लई पाती लिषत वनें न कछू वें सी ये लपट औन पति पै पठै दई ॥ विकों विकल नाई को कला लों अधिकाई कहौ एक सौ दुहू कौ गति ये के वे रह गई ॥ चपरी प्रवीन चहूं जकु अक ली नीत ऊ ॥ वांचि सूनैं हिये कैं न गाइ छाती सौं लई ॥ ५८१ ॥ टीका ॥ चलत चलित लौं लै चलैं सब सुष संग लगाइ ॥ ग्रीष म वासर सरस सिर रानि सिप्यामा पास बस ॥ ८ ॥ टीका ॥ यह पत्नी नाइक की नाइका १६८

कोवचनसषीसों॥कवित्त॥ रैनदिनार
रतेईमिलरसरंगउमंगनमेंसनुरा
गे॥ऐसोसनेहवढाइकैदाघिरीकैसी
करीउलिकान्हपियारो॥नैगयोसंग
लगाइसवैसुषदैगयोसोचुटरैन
हियारे॥षूसकोजाषिनिजहंकोछोस
वसौगयोअवपासहमारो॥४८२॥
उधोकोवचतु॥दोहा॥ ॥गोपिमयंक
सुवानिभरिसदाअसोसअपार॥छग
रधारनेहरहीवगरवगरकोवारम
दिको॥यह ब्रजकोविरहनिवेदनुउधो
कोवचनश्रीकृस्नकोवचनसुसषी
सो॥कवित्त॥॥श्रीजदुनाथतहारवि
योगकहीनपरेब्रजकोदुदसाहै॥गो
पिनकेदृगयोवरसेसरसैअसुवानि
तैनीरप्रवाह॥गोलगाली सवदूरिकै
भूरिनदीवदिहोतिं॰ ह॥
रेषनधीरज

कों आवगाहै ॥ ४८३ ॥ आगतपतिका ॥
॥ दोहा ॥ कीयो सयानो सषिनु सों नहि
सयान वह भूलि ॥ दुरै दुराई फूल लों
क्यों पिय आगम फूलि ॥ दोहा ॥ यह आ
गमोत्सव नाइका सो सषी को वचनु
॥ कवित्त ॥ लक्षित कपोल आजु मंद मु
लकन लागे आनन पै भई कछू औरे प्र
रुनाई री ॥ मैं तो बूझी सुष मानि तेक
छू रुषाई ठानि घूंघट मैं ढांकि मुष दीठि
बचो चुराई री ॥ नाहिनै सयानु यनु बीस
बिसे भूल है सयानो सजनी लिसों क
रिजो चलैराई री ॥ फूलको सुवासु लौं
विकासु पहिले ही होतु फूल हरि आग
म की क्यों दुरै दुराई री ॥ ४८४ ॥ दोहा ॥
आयो मीत बिदेस तें काहू कह्यो पुकारि
सुनि हुलसी बिकसी हसी दोऊ दुहुं ननि
हारि ॥ दोहा ॥ नाइक उपपति सों दोऊ न
कों नेहु है ताकें आगम दुजन के हर्ष भये

याहीतेंपरस्परजोंनिपरीसषीकोंवच
नुसषीसे॥कवित्त॥ कान्हरकेविछुरेंकु
नवालड्वामनहींमनमेंमुरझानी
क्रमकरैवहराइवेकोमनुवेंठीरहीमि
लिवोपरठानी॥मोसनुमीनुविद्सते
आयोसुकारिकेंकाहूकहीजववानी
सासुनिदाउदुहूनिविलोकिलसीवित
...कुलसीमुसकानी॥४८५॥दोहा॥
युगनेंनीडगकीफरकउरउछाहलन
फूल॥विनुहींपियआगमउमगाप
लटनलगीदुकूल॥टीका॥यहआग
मविस्यत्पतिकासषीकोवचनसषी
सों॥कवित्त॥वालषरीअकुलातिहि
तनदलालवियोगविथाउरजागी॥
सेंसमेंआनिअचानकहींकुलसीछ
यासुघरीअनुरागी॥वामविलोच
केफरकेंयुगलोच
पागी॥फूलभई                नह

चारुदुकूल चुनावन लागी ॥ ४८॥ दोहा ॥
मलिन विरह केह
मलिन देह चेई वसन मलिन विरह के रु
प ॥ पियआगम औरे उठी आनन आप अ
नृप ॥ टीका ॥ यह आगम मिस्य त्रितिका
सखी कों वचन सखी सों ॥ कवित्त ॥ लाल
मन भांवन के विछुरे मयंक सुखी अतिहि
विकल चित पस्यो चिंता कूप है ॥ अधिक
मदन पीर तीर सौ घगति हिये चांदनी ल
गति जैसे ग्रीषम की धूप है ॥ कीनों तुसि
गारु चारु वेसो ये मलिन देह पहे न
लिन उहीं विरह
पियआगम सु
नये उम गि अ
रोट में मिल
आवन
॥ टी
घरि सु
कों वचन स
देस तें आन
यासिय

मनोजऊमंगनिहियेंभरिआई।।कहमकौ
लिवेंकतकाहूसोंपोरिमेंजोलोंरघो
सुषदाई।।आवनआवनकीसुधरीवि
धिवासरहुतेअरीसरसाई।।५२५।।दोहा
कहिपठईजियभावतौपियआवनकी
वात।।फूलीआंगनमेंफिरैंआंगनआं
गसमात।। टीका।। आगमोत्सवसखी
कौवचनुसखीसोंहर्षसंचारी।।कवित्त
वालवियोगमलीनमतीविसरीसुधि
हासविलासहूभूले।।यतेमेंप्रोषिति
नीतभईउरयेकहीसाथसवेंदुषऊले
आवनुप्यौमनभौवनकौऊमहतसुषपुंज
समूलें।।आंगनमेंहुलसीफिरैंसुंद
रिआंगनआंगसमातनफूलें।।५२६
टीका।। नाचिअचांनकहीउहेंविनु
ावसवनमोर।।जांनतिहीनंदितिक
ीपर्दिसिनंदकिसोर।।टीका।। यतआ
मोत्सवनाइकाकौ नु

कौ वचन नाइका सौं ॥ कवित्त ॥ राधायो
विसाषा सौं कहति जाकौ रूप मोहि चारु
चित्र पट प्रवर बनै दिषायौ री ॥ जानियतु
वही चित चोरु नंद पूत धूतु आली इहि कान
न कहूँ तें आनु आयौ री ॥ लहलही होति व
रुकाल की सुषानि वेलि फूलतु सुमनु कै
सौं वनि छवि छायौ री ॥ विनु प्रेन हूँ घनम
यहाषित मन नाचि मोरनु कुलाहलु म
चायौ री ॥ ४८ ॥ दोहा ॥ वाम वाहु फरक
त मिलें जो हरि जीवन मूरि ॥ तौ ताहि सौं
मैं रिहौं राषि दाहिनी दूरि ॥ टीका ॥ आगमो
त्सव भुज फरकत ही नाइका कौ वचन वा
म भुज प्रीति ॥ कवित्त ॥ कान्ह विसासी वि
दसर वो वसि मैनु दहीव हु भात हियें है
वाम भुजा फरकौ तौ भलैं अवलें है
वैनै है चैपन कैहौ ॥ कैसें हूँ वामन भै
व कौ अव जौ भरि आंषिन दष न पै है
राषिहौं दूरि या दाहिनी वाह कौ ताहि

सों गाढें आलिंगन दैहौं ॥ ५६४ ॥ दोहा ॥
बिछुरे जिय सकोच इहि बोलत बनै न बैं
न ॥ दोऊ दौरि लगे हिये किये निचौंहैं
नैन ॥ टीका ॥ यह परदेस तें आगम सु दोउ
नु के हित को बचनु सखी सों ॥ कवित्त ॥
दंपति आपुस मैं कहत लेव लु ओट भये पल
मों न रहैं ना ॥ आयौ बिदेस बिलेव हुवास
रनं दलैला अति चैन कौं ऐना ॥ यतौनि
छांहुं भअ हूं नियेइ हि लाज लै बोलत बैन
बनै ना ॥ दोऊ लगे लपटाइ हिये पै निचौं
हैं कियें सकुचौंहैं सनैं ना ॥ ५६५ ॥ दोहा
जद पिते नरो हाल बल पल कौं लगी नवा
रा ॥ तेऊ बैडौं छर कौ भया पै डाकौ सहन
रा ॥ टीका ॥ यह परदेस तें आगम सु आग
ते पति कौ नाइका कौं औत्सुक्य संचारी
॥ कवित्त ॥ कौन हूं काज कौ प्रानपिया पर
देस मों बहतै हितया है ॥ गर्म
...कौं बिछसमतैं हौं ...

ठयोहैं ॥ जदपितेजनतुरीतियरौंघरुन्नद
पिकोसहजारभयोहै ॥ ग्वेंडकोपैठौनको
लौकटैंअभिलाषसमूहहियेंऊनयोहैं
धरैउ ॥ अथ स्वाधीनकनिष्टा ॥ दोहा ॥ मिसहींमि
सआतपहसहदईऔरखतराइ ॥ चलत
ललनमनभांवतिठितनकोछालछिपा
इ ॥ टीका ॥ यहजेष्टाकनिष्टाकेभेदमें
सबैसषीकेंवचनुसषीसों ॥ कवित्त ॥ को
हसुजानकेमापेकछूरसरीतिकेभेद
कहेनहींजाहीं ॥ आतपकोमिसुकैव
राइदईसगऔरजितीवनिताहीं ॥ छल
गहीवहगौंलभटूजमुनातटकेलनिकुं
जजनाहीं ॥ राधिकाप्यारीकोलैचलोमं
गकियेंअपनेतनकीपरछांहीं ॥ धरैध
॥ दोहा ॥ छिबकेनाहनवोढगाकरिपिच
कोजलजोरा ॥ रोचनरंगलालाभईवि
यसियलोचनको ॥ टीका ॥ यहजेष्टा
कनिष्टाकोभेदअन्यसंभोग

ई
छिनांहांऽसखीकोवचनसखीसोलछिता
हुतेऽशोकविलाने ऽलालालनगनमें
जलकेलिरचीरसरीतिरलाई॥चूंमचले
रउघवदुभांतिदुरैभरीअकरीतरला
ई॥लोचनभावतीकेछिरकेकरकोपिच
कीजलधारचलाई॥सोतिनकेलोचनु
कीरतुमांऊतहीभईरोचनरंगललाई॥
धर्ष्णे॥दानलीलादोहा॥लाजगहौवेका
जकतघेरिरहेंघरजाहि॥गोरसचाहतन
फिरतहौगोरसचाहतनाहि॥टीका॥
यहदानलीलानाइकाकोवचनुनाइक
सों॥कवित्त॥लाजेकौनगहेक्योंनग
हबिनुकाजमगुघिरिरहेकाहेइतराइ
बोलहतअनेसेहौगोरसुनचाहतसों
रसकोचाहतहोभलीभांतिजानति
कान्हतुमजैसेहौ॥कृष्णजीन
व्रजचिदितहेरगुनमाधनके
गरधरपेसेहो॥अवर

नचलावनतैंसौंहैलपिलसतलसतम
नलैसतौ।।४८६।।जातिकर्नेछुप्टना।।पहु
लालरहियेलसेसनकीवदीभाल।।राष
लषतषरीषरीषरउरोजनिवाल।।टीका
यहजातिवरनतुनाइककोवचनुसषीसों
ग्रथवाइकाहूसोंहाइ।।कविकृत।।पानरोला
कुकठारषरकुचगारीग्रगाढिलुनाईभ
रोहै।।मेचकपातिगरैवऽऽड्गग्राठनिमे
ग्ररूनाईथिरोहै।।हारहियेपहलाकोल
सेविंदुलोसनकोपषुरीकोकरीहै।।राषति
षतुषरीब्रजनागरिजोवनजातिषरीनि
षरीहै।।४८७।।सोरठा।। टटकीधाईधोव
तीचटकीलीमुषजोति।।लसतिरसाई
केवगारजगरमगारडुमिलाइति।।टीका
यहजातिवरनुसषीनाइकाकेरूपकौ
निकाईनाइकसौंनिवेदनुकरतिहै।।कवित्त
वेदीग्रापरसबृजनागरिसरसवेषदेषिम
नमोहतनकीसुधिऽगरी।।कुमग्रानप्यारकी

उताईरीसुकुइवेसनेसी ठई विधिनेसकेवँ
लिसाभासग हौ॥ दमकेवदनजानिविदस
वरनधातीपहिरैलसतिसो तेरूपगुनअ
गरी॥केरखेप्रकासुअतिजगारमगरतिहि
वगररसाईकअपारआपवगरी॥ धर्द ८
दोहा॥ जदपिनासिनाहीनहो वदनलगीज
कजाति॥ तदपिभोलहासीभरीहोसीयं
ठरराति॥ टीका॥ यहजातिवरानुसषीको
वचनुसषीसोनाइकहूसोसभवै॥ कविन
वेहीसिंगारसजोव्रजनारिमचानकमो
नआयोनहांही॥ पौलिगयोअवलोकि
अकेलीअलोकिककेलिकलाचितचौ
जदपिवानवनागरिकमुषलागीअहेन
ननानननाही॥ तदपिहंसीभरीभकु
मंवासविसठहरातिहेहाही॥ धर्द६॥ द
हा॥ डगथरकोहैअधषुलैदहथकोहैठ
सुरतसुषितसीदषियतिदुषितमारभके
भार॥ टीका॥ यहजातिवर्नेनुग

काकीसोभासषीनाइकसोंकहैंसषीसषीसों
कहैंनाइकसषीसोंकहै ॥कवित्त॥ बालतिवैन
हरैंहरैंरुभरीअछविश्रीआननकोपियरीहैं
आधषुलेअलसीसोंहैसलोचनदैहथकेहैं
सचारहरीहैं॥ गर्वकोभारधरसुकुमारजऊ
दुषनैनवनारीधरीहैं॥ नीकीतऊप्रतिलाग
तहैंमनोंकलिकलोलकरंगभरीहैं॥५००
॥दोहरा॥ ज्योंकरिह्यांबुहरीचलतिज्योंचुल
रीज्योंनारि॥ छविसोंगतिलैचलतिचातुर
कातनतारि॥ ॥दोहरा॥ यहजातिवर्नेनुनाइका
कोवचनसषीसोंकविहृकोउक्तिलई॥ कवित्त॥
ज्योंकरुह्योंहीचलैचुटकीउघरैभुज
मूलवरीछविभारी॥ चारुकलाईकीमारनिग्री
वकीतेरनिजीतेटरैनहियारी॥ भौंहऊचतिर
छकरिलोचनलेतिकिधोगतिरूपउजारी
पातुरमानोंमनोजमतीपकोचातुरकातन
हारी॥५०१॥दोहरा॥ मुषउघारिप्योंलषिरहै
नरस्योनगोमिससेंन॥ फुरकीआटपुलक

नभयेगयेउघरिजुरिनैंन॥टीका॥यह
जातिवर्णनुपरिताससषीकोवचनुस
षीसें॥कवित्त॥प्रांनपतिआवलनिर
षिमृगलोचनिदुकूलंआंहैंभीनोंपूठि
रतीमिसुकरिकें॥वाढ्योचापचाईरैं
टिगआइमुषनिरष्योंउघारभूरिहितुलि
येंभरिकें॥कसमप्रांनप्यारकविलोक
नमयंकमुषीसेनमेंनरद्योंसुमनुमि
सुमयोटरिकें॥गानपुलिकनभयअध
रमुलकिआयलोचनललकिमिलआ
पुहीउघरिकें॥५०२॥दोहा॥ नहिंअनहो
इनहिंजाइघरचितचढ्योंतकिनीर॥परी
सिफुरहुरीलेंफिरतिविहसितधसति
ननीर॥टीका॥ यहजातिवर्नननाइका
परकियाक्रियाविदग्धासषीकोवचनु
सषीसों॥कवित्त॥राइवकोंजमु
नातनतोंवनितानिकीहैंअति

गुरिनुअचिभरूभीति हे उलभिचितेच
लाल ॥ रुचिसे डुहुनडुहुनकेचूमेंचा
क पाल ॥ टीका ॥ यहजातिवर्नेनडुहु
नकेहितकीसरसाई सखीकोवचनस
खीसों ॥ कवित्त ॥ आजु भटू ब्रजनाग
र नागरकीनोविलासु मनोरससान्यो
पीठकोचापसोचाहिचहूंधोविया जव
को ओइलेतनजान्यो हे भरूअंतरभी
लितुवोउतमेंअंगुरीअचिकोतिगुनन्यो
चारुकपालडुहूनुके डोउनुचुंवनुके हसि
आतिहिसुखमान्यो ॥ ५०८ ॥ दोहा ॥
आठनु विचकरूउचोकियतिचोहनेन
प्रगटपियकेपियालगीविगसुम
दैन ॥ टीका ॥ यहजातिवर्नेनुनाइकाकी
सोभासखीसखीसोंकहतिहे ॥ कवित्त
कान्हकेलीलमिरितुकेनवराधिका
केजियमें उमोई मीवनवाडुराइक
पालकियरलैनके धूमसकाइ ॥ वीरी

वनाइलईकरकेंजषवैवैकोमंजुभुजा
उकसाई॥ यो हितकोसरसाईविलोकि
भईमनमोहनकेमनभाई॥ ५०९॥ दो
हा॥ नाकमारिनाहींककैनारिनिहार
लेइ॥ छुवनआरविचआंगुरिनुबिरी
वदनप्पोदेइ॥ टीका॥ यहजातिवर्नेन
सषीकोवचनसषीसों॥ कवित्त॥ आजु
दुकुंकोविलासुअलीमेंदुरदेरस्योंकहू
तेनहींआवतु॥ नंदलालअनतहीहितुको
ब्रषभानकुमारिकोपांनषवावतु॥ और
नुसोवियआंगुलीछू मुसिकाइकैनैनसो
नैनमिलावतु॥ नासिकामारिकेंओंठ
करैतीयनाहितुत्योसुखुपावतु॥ ५१०
दोहा॥ वतरसलालचलालकीमुर
लीधरीलुकाइ॥ सोंहकरैभोंहनुहसे
देनकहैनटजाइ॥ टीका॥ वहनाइका
परकियाप्रौढ़ाजातिवर्नेनुसषीकोवच
नसषीसों॥ कवित्त॥ आजुअलीब्रषभा

नललीमनमोहनसोंरतवेलिदरीहैं
वातनकुचसकेसुरलीमुरलीहरिकी
दवकाईहै ॥ ज्योंज्योंहठाकरिमांगेललना
वतत्योंत्योंकछूइठलातिवरीहै ॥ देतुक
हुमुकरैमुसिमोहनुसोंकरैरसभाइभरी
है ॥ ५११ ॥ दोहा ॥ गदरानैतननागरीठोनेंप
नआइ ॥ निलारा हूवोंदेइठलाइद्रगकर
तिगमारिसुमार ॥ दोहा ॥ यहज्योतिवने
ननाउक्याकोसोभानाइकसबीसोंकहतु
है ॥ कवित्त ॥ सोभाकेभरतभरीरूपकेस
सांचेंढरीविनुहीसिंगारछविकरीनपर
तिहै ॥ ललितलुनाईसुनैगदरानैगात
मेंसरसतरुनाईआनिभरीओरभरति
है ॥ वहुरारवदनुपरओपनकोसोहैआर
तेसीयचिवुकगाउमनकोहरतिहै ॥ सह
जसुभाइठलाइकैगमारिगारीहूवोंद
वलाइनैनघाइलकरतिहै ॥ ५१२ ॥ दो
हा ॥ नाइकचढोसीधीकोरजितछवीली
छैल ॥ फिरिफिरिभूलिवहैगहैप्योकक

रोलीगोल॥टीका॥यहजातिचनेनुसषीको
वचनसषीसों॥कवित्त॥सषिजालचलोदे
उतीरथपंथआ।हनेपाइनुरंगदेरे॥वह
प्यारकीरीफरिझावनिप्यारीकीमांपनको
ंवषानिपरे॥अलिनाजुकछैलछबीले
तियाजितनाकसकोरिकेसीवीकरे॥क
विक्रमकहेइहिचाइपग्योतितजानिकै
पीतमपांइधरे॥५४३॥दोहा॥जालरंध्र
मगअगनुकोकछुउजासुसोपाइ॥
दियेजगत्योरह्योडीठिकरोषांलाइ॥
टीका॥यहजातिचनेनसषीकोवचनसषी
सो॥कवित्त॥वालाकीदहकोदीपतिभूरि
भूरिअरछविछाइरह्योहे॥जालदरीचि
तंकटिकेवदिजोतिनुकोसमुदाइरह्यो
लालुभयोअवलोकिलहठगमूरिसी
षाइविकाइरह्योहे॥पीठिदियेसिर
गत्योवहडीठिकरोषालगाइरह्यो
॥दोहा॥ दउचो

ता॥

नललीमनमोहनसोंरहषेलिटरीहै
वातनकेचसकेसुरलीमुरलीहरिकी
२ ह्वकाईहै ॥ ज्योंज्योंहठाकरिमांगेलला
वहत्योंत्योंकहहइठलातिषरीहै ॥ देनुक
हंमुकरैंमुसिभोंहनुसोंहकेरसभाइभरी
है ॥ ५११ ॥ दोहा ॥ गदरानेंतनगोरटीऐंप
नआडलिलार ॥ हूठ्योदेइठलाइद्रगकरै
त्तिगमारिसुमार ॥ टीका ॥ यतजातिवर्ने
ननाइकाकीसोभानाइकसषीसोंकहतु
है ॥ कवित्त ॥ सोभाकेभरतनभरीरूपकेस
मांनंबेटरीविनुहीसिंगारछविकहीनपर
त्तिहै ॥ ललितललनाईसुनेंगदरानेंगात
मेंसरसतरुनाईअंगनिभरीअंगारभराति
है ॥ बहुरारवदनुपरऐंयनकीसाहेंआड
तेसीयेचिबुकगाडमनकोंहरतिहै ॥ सह
जसुभाइठलाइकेंगमारिगारिहूठ्योंदे
वलाइनेंनघाइलकरतिहै ॥ ५१२ ॥ दो
हा ॥ नाकचढेसीवीकरैजितेछवीली
छैल ॥ फिरिफिरिभूलिवहैगहैप्योंकक

गीलीगोल। [illegible] यहजातिवनतु [illegible]
वचनसषीसौ [illegible] सषीजातल [illegible]
उतीरथपंथआ। हनेपांऽ तेरगढ [illegible]
प्यारकीरीझरिझांवनेप्यारिकौ [illegible] पनकै
वषानिपरै। अतिनाजुकबेलछूवै [illegible]
तियाजितनाकसकौरिकसौवोकर। के
विक्रमकहैऽहिचाऽयग्पातितजानकै
पीतमपांऽधरै ॥ ५३॥ दोहा॥ जालरध्र
मगअगनुकौकढुउजासुसोपाइ॥ पीठि
दियेजगत्यौरह्यौडीठिझरोषालाइ॥
टीका॥ यहजातिवनेनसषीकौवचनसषी
सौकवित्त। वाला। कौदहकौदीपतिभूरिसु
मूरिअयाछविछाऽरह्योहै॥ जालदरीचिनु
मेंकाढिकैवाढिजोतिनुकौसमुदाऽरह्योहै
लालुभयोअवलोकिलटूठगमूरिसी
पाऽविकाऽरह्योहै॥ पीठिदियेसिगारज
गत्यौवहडीठिझरोषालगाऽरह्योहै॥ ५४
बारमिलचनीदोहा ॥ [illegible]

१०८ षलनुषलमंग्रथा ...दुरतोहियेलपटाइथे
धुवतहियेलपटाइ ॥दोहा॥ यहजातिवन
नसषीकोवचनसषीसा ॥कवित्त॥ एकैन
हिपवनेहिलकोगतिग्रंसोकह्यवलोने
लहीहे ॥दाऊषरग्रतिचाइभरनिसघोस
रहेउमहेचितहीहे ॥चारमिलचमीषलीहे
षलतकानहभातश्रघाइनहीहे ॥ज्योहिदु
रउरसोलपटाइकेजोछवितोलपटेउरही
हे ॥दोहा॥ डगमिलचतमुगलोचनीभर
उलटिभुजवाथ ॥ जोनगईप्रियनाथके
हाथपरसहीराथ ॥दोहा॥ यहजातिवने
नसषीकोवचनसषीसो ॥कवित्त॥ वेहीहुते
वृषभानिकुमारिग्रचानकग्रायानही
गिरधारी ॥ प्यारीकेलोचनमीचिलय
उनिहीभुजलोटिभरयोग्रकवारी ॥ पीत
मकेकरकेपरसउमग्योउरग्रानदवुध्दि
विचारी ॥ याहीतेवामनभावनकोपहिचा
निहेसोसुविचछनप्यारी ॥ ५२६ ॥दोहा॥

कहैांसुसिकाइ यतैंकहि प्यारीयेंरुसा
ई॥ ५१८॥ दोहा॥ चितनरमतुमिल
तनवनतुवसिपरोसकेपास॥ छातीफा
टीजातिकुनियाटीआटउसास॥ टीका॥
यहपरकीयाअनुरागुनाइकके।अथ
वानाइकाकोवचनसषीसों॥ कवित्त॥ नै
नमिलीजवतेंतवतेंअतिव्याकुलद
उरहेंदिनराती॥ वासुपरोस[illegible]यासुत
उगुरलोगनिकीमतिसावककाती॥
जोंतरसेंमिलतेंनवनेंअभिलाषनुके
अवलीसरसाती॥ याटीकोआटउसा
ससुनेंफटिटूकहजारकहातिहेंछाती
॥ ५१९॥ मध्यांतदोहा॥ टीलोदेवालति
सतिप्रोढविलासअप्रोढ॥ त्योंत्योंचल
तसुपियनयनछकयछकीनवोढ॥ टी
का॥ यहमध्यांनसमयसषीकोवचन
सषीसों॥ कवित्त॥ आजुवारुनीकोवारु
नीकीमेंविलोकिवहसोभामेरेनेनु

मेंभ्रूवलीवसतिहैं।।केहैकविक्रम्उर
लागिवेकोंललकतिप्राढाकैंसेसकल
विलासविलसतिहैं।।उर्गोज्योंवरडीठों
...दंदेवालनिसरसवैननागरिनवे
लीहरिहरकेंहसतिहैं।।ल्योंल्योंछकि
...नेनछकायऐसेपाकेननैनपलक
नहूंकोगतिभूलीदरसतिहैं।।५२०।।दोहा
हसिहसिहेरतिनवलतियमदकेमदउ
मदाति।।वलकिवलकिवोलतिवचनलल
लकिललकिलपटाहिंति।।टीका।।यहमध
यानकोसमयसषीकोवचनसषीसों।।
कवित।।मोहनकेसंगमध्यानकैनवे
लीवालकरतिलमासकछूसोभासरस
सातिहैं।।हसिहसिहेरतिनिवषेरति
ललकिललकिपरतिनकाहूतेंस
हैं।।जोवनकेरंगभरी
वरूनीउमंग
लकिवलकिवेनवो

ललकिल लकि लाल उरलपरातिहै ॥५२१॥
दोहा ॥ मिलि चंदन चेंदी रही गोरे मुख न
लषाइ ॥ ज्यों ज्यों मद लाली चढै त्यों त्यों उ
घरति जाइ ॥ टीका ॥ यह मद पान समय न
यकाकी सोभा नाइकु कहै अथवा सषी
सों कहै ॥ कबित्त ॥ कछू आजु लषी मद पान
समें ललनाकी प्रभा जियतें न टरै ॥ क
वि कृष्ण कहै वलकै ललकै मन मोहन सों
हसि अंकभरै ॥ दुति चंदन की विंदुली की
रही मिलि कोर लिलार न जो निपरै ॥ अरु
नाई चढै मद की मुष ज्यों हीं त्यों त्यों हीं त्यों
जाति घरी उघरै ॥५२२॥ दोहा ॥ निपट ल
जीली नवल तिय वहकि वारुनी सेइ ॥
त्यों त्यों अति मीठी लगै ज्यों ज्यों ढीठो देइ ॥
टीका यह मदपान समै सषी को वचन
नाइक सों अथवा सषी सों ॥ कवित्त ॥
लाज भरी अति ही नवनागरि जाकी
सुधाई सुधाई के गाई ॥ ताहि छकी छ
विदषि के पिय प्यारि मुराई के वारु

हसितिहसिहसिरुकेंरुकिरुकिकेंहसति
है ॥ परस्थ ॥ दोहा ॥ ॥ रूपसुधाआसवछकों
आसवपीयतवनेंन ॥ प्यालेंओठप्रियावद
नरह्योलगायेंनेंन ॥ टीका ॥ यतमदपा
नसमयनाइकाकीसाभादषिनाइकुछ
किरह्योंसासषीसषीसांकहतिहै ॥ अ
र्थ ॥ वारुनीकोवनिआयासमेंकहतेंन
वनेंकछुकातिगुभारें ॥ प्यावतिरंगुभ
रि मृगनेंनिरह्योंदुतिकोंभरिभोनुउजा
रें ॥ आसवरूपसुधाकोंछकोंमदपीव
कोंभूलिगयांसुधिप्यारें ॥ प्यालसोंओ
ठप्रियामुषनेंनलगाय्रह्योंछविकोंम
तवारें ॥ परप ॥ दोहा ॥ षलितवचनुअ
धषुलितदृगललितस्वेदकनजोति ॥
अरुनवदनछविमदनछकिषरीछवी
लीहोति ॥ टीका ॥ यतमदपानसमयना
इकाकीसाभासषीसांकहतिहै ॥ कवित
नेंनकछुउघरेसमुदअरुवेंननमेंसि

रनिमूंमिकुकें मधुमधमुकुव्रतकेगन ।५२९
म्फरघरकौनूतनपथिकचलेचकितचित
भागि॥ फूल्यौदेषिपलासवनसमुहिसमु
झिदवागि॥ दोहा ॥ यहवसंतसमयहैनो
इका कौवचननाइकसोंहोइतोंप्रवत्स्यप
तिकासषीकोवचनसषीहूसोंहोइ॥ ग
द ॥ योरितुराजकोसमाजवनिवा
गनिमेंप्रफुल्लितसुमनरहेहैंजोतिजा
गिकै॥ कुसुमपलासकेअंगारज्वानिच
कैअरचेरुचिसोंविपनचकोरअनुरा
गिकैं॥ आगतविलोकिफूलेमेंनदरचि
तऊलेनूतनपथिकभूलेभरमदवागि
कैं॥ परीउरभेलपरदेसकौविसारिगेल
लौटिचलैघरकौचकितचितभागिकैं
॥ वनचारीनपिकवरप
परचा ॥ दोहा ॥ कुहूकुहूंकहिकोकि
लसिविरहिनुमनुमेंनापी ॥ दोहा॥
कोहिउठतिकरिकरिरातेनैन॥ अर्थ
यहवसंतसमयसषीकौवचननाइ

सोहाइतौमनाइवैनाइककौवचनसखी
सोहाइतोआपनोअवस्था॥कवित्त॥मैन
महीपकोमानिमतोकुमडारिचहुंचकु
आरनिदकति॥देषतहीविरहीजनको
करिलोचनलालकुहीकुहैकूकत॥बी
मविमवनवाटनुमैवदपारवसैपिक
भूलततूकत॥प्रानपतीविनुवेयापदि
वोअवदीस्परेरिपुकोटकचूकत॥परदे
दाहा॥ दिसिदिसिकुसुमितदषीयत
उपवननविपनसमाजु॥मनोवियोगिन
केकियोपरिपंजरहातुराजु॥टीका॥यह
वसंतसमयहेसषीकोवचननाइकासो
हाइनाइकसोहाइतौप्रवत्स्यतपतिका
कवित्त॥आयोहैमदनछितिपालको
ककमपाइआमलप्रव
चलायोहै॥मानुगढिलो
प्रचंडदथ्योसवहीके
गायोवनउपवन

यतु दिसि दिसि कुसुम सम्रूह छवि छायो है
बेरु वो धि विष म वियो गिनि केरा किवकी
मानों ऋतुराज सर पै जरचनायो है ॥ ५३०
हो ग्रीषम सो व्हैग ई टरी ग्रीषम धि के ना
टीका ॥ मु ॥ ई जे करि उरी षरी बो री षो रवा मु
पट वसंत समय नाइका की उ
टीका ॥ वस्था सषी नाइ क सो क ह ति है सषी सषी
मोहन सो विछु री जब
कहै सो कहै ॥ कवित्त ॥
ते तव तन लयी कलय कथरी है ॥ नेननु
नी रूढ रै निसि वा सरु व्याकु लवा लउ चै
तप री ते ॥ और सो द सा प हि लैं ही हु ती पुनि
और भई सु धि और धिरी है ॥ ५३१ ॥ टीका
कर लो ने य क त व स त अहि मयूर म्रग
वाघ जगतु तपो ध नु सो कियो दी रघ
दाघ ॥ टीका ॥ यह ग्रीषम समय
नाइ का को वचन नाइ क सो है इतो प्रव
स्यत्पति का सषी को वचन नाइ का सो
नाइ क हूँ सो है ॥ कवित्त ॥ हो तो वर शी

ीषमकैंग्रातकौं भीषमसुप्रतपुतकि
टिकैनसकतिकहूं डोलीडोलेंडरिकैं॥
सघलवियन्नतरूधानैंकूपकैंजनिमें
छांहैंविरमतिकहूंछांहैंग्रटकरिकैं॥
५३३॥ दोहा॥ नाहिनयपावकप्रबलल
वैंबलतिचहूंपास॥ मानहुंविरहवसंत
कैंग्रीषमलेतिउसास॥ ॥ यहग्री
षमसमयनाइकाप्रोषितपातिकानाऽ
काकोचन्ननसखीसों॥ ॥ चंदुकरम
ऽलतेंमंडिकैंग्रबंऽधागी॥वरषतपावकैं
प्रचंडकिधोंयहरी॥ कैसप्रानप्यारकी
दुलाईधौंग्राइवडवानलकीलुवैंनाथचं
लतिडुपहरी॥ चंदुकरमंडलतैंपावककु
वरषतलुवैंनचलतिजिन्हैंदिषिमतिह
री॥ मेरेजांनिप्रीतमवसंतकोविया
भयोग्रीषमविरहिनीउसासलेतितन
५३४॥ ॥ लैंचुभ
चलजातितिजितनजलकेलिग्रध

सनिसाकों विवेक सुतोचकईचकवा
केबोललजांम्यो ॥ ५३६ ॥ दोहा ॥ कुट
कापतजिरंगरलीकरतिजुवतिजग
जाइ ॥ पावसगूढनवातयहवूढनहू रग
हाइ ॥ टीका ॥ यहवर्षासमयसषीकों
वचनुनाइकासोंमनाइवो ॥ कवित्त ॥ पाव
सआवतहीघगपुंजनिमांदसोंकूकमचा
इदइहै ॥ चाहिभरीवधूभाइभरीमिलिरंग
रलीवनितानिवईहै ॥ कापग्रसगुकुरग
वारिनिहारिघराउघगाईजुनईहै ॥ गूढ
टानसेयहवातगुम ॥ गूढनिदाषिस
रंगाभईहै ॥ ५३० ॥ धुरव
धुवाध कोट
गतको थम
यहव
नाइ
षि
न
ति

नर हिवो षेमसों केम कुसुमकी वास ॥ टीका
यह वरषा समय प्रोषितपतिका नाइका
को वचन सषी सों ॥ कवित्त ॥ जो नों मनुर
घो तोष्ठतो लों नउसासी ॥ गाथ आगयो
विरह दुषसूल निकोसहिवो ॥ आयो स
षी सांवनु न आयो मनुभावनु री अव तु
उपाइनु को छांडि व्रथा विहिवो ॥ कदमकु
सुमकी सुवास को प्रकासु भयो षलु हैंन
ग्रांनन को कुसलसों रहिवो ॥ पद्य० ॥ टीका
त्रियतरसों रमुहकिय करि सरसों हे नेह
धरि वरसों हे रहै नरवरसों हमेह ॥ टीका
यह वर्षा समय है कवि की उक्ति अनुसयं
ह नाइका की वचनु नाइक सों ॥ कवित्त ॥ ह
रितनु भूमि जल भरे वन उपवन चहुं आ
रसों रंभके उमगि आदर हैं ॥ महमहिल
ताल हलहीं छवि छाइ रही कुंजि कुंजि बग
कुलको लाहलु के रहे उमडि घुमडि परस
नुसे गुहमि घनसों हैं सरसों हे वरसों हे जुवि

करत गिरा मुनि तिद
स्थूलघनदेहअनु
बाल ब्वाल
दकनकालनअनमृद
थाकीतरनियरय
यववनदेरनाइव
कोआमक्रिमद
कवित मुयम कवि
राइमांकडमगि
लयत तमई
कनअगमगि
कहवविकम
लनिनफ्राइप
विपनवि मरवा
पाकिनप्रमानघा
५४७
कनामदृ वनम ८८ नहि
चोमचवत्ववाव कवी

यह चर्चा सम मंय यहि गरकों सो भास षोन
इक सो कहति हैं सषी कों वचन सषी सों
कलि विकोच सकोल गाहे इनुंघे
॥ टीका ॥ कलि विकोच स कोल ग्राह रहत राति
सनु मे छाडि सव ठौर उही ओर रहत राति
वरजौ योज्यों ज्यों त्यों त्यों मान नतिन एकन
ग्राह दुके वढति सकुचति न सको तिहै
पद्य ३ ॥ ल कृरिदु सो कृ ॥ छ ॥ घन घराधु टि
॥ किया सु व
हरषि चलो चकृ दसि राह ॥ टीका ॥ प
नो ग्राह ज गु सर दसू रन रना ह
हसर द सम य राज नीतिम संगा कवि को
उक्ति ॥ कवित्त ॥ घनघराधु टि गयो औध
यारो मिटि गयो विस दप्रता पुजग मगा
छविछाइ कें ॥ कहें कवि कहम उरह रषनि
अचले पथिक चहुं धो भूरि भयवि सर
कें ॥ फूले हियक म हल ग्रमल भयज
न लघट त्रपचल लन उछह दुमगाइ
को ॥ सरदसु भट सर ना हको निकाई
लिदैसव जगनु सुवे नोकी नो ग्राइ

भवेक विकी उक्ति होइ ॥ कवित्त ॥ सिंगीसे
मुनि सिद्ध ई मस मत क्र तस केत कीनें
विकल गनें नय कहें काहि काहि ॥ मांनी
य तुजा को नों घंड मं अघंड धाकु जीतम
हि मंडल के अजी ती साजि ती क आहि
कहें कवि कस जिन फूल हि के आयुध
सो के सके सवली भेद साह सुइ तो कुपा
इ जीत जिहि ती सांला कअ सो वलु मन
मथु सो अगहनु नगाह नद त्ति सर चाप
करता हि ॥ पधद्धा दोहा ॥ ज्यों ज्यों वढति
तभां वरी त्यों त्यों वढति अनंत ॥ आक अ
क सव लो क सुष को कसा कहें मेंन ॥ दो
हा ॥ यह हमें तम मय कविकी उक्ति भु
व्व हें संयोग गार में वनें विप्रलंभ हू में
काक को प्रसंग असम्भक्ति हू जानिये ॥ क
वित्त ॥ हिय क्रतु आई भई सान सरस
ई द्विषि भाजगाई गार मंउ राज अचलन
मां वासर की लघुता विलोकि मुरझात
को कास छम हें रह्यो तेजु तपन केतन

मैं ॥ कहै है कवि क्रस्न ज्यों ज्यों रजनी वढ
ति त्यों त्यों उमगातु मो उर अनुरागि नुसै
मन मैं ॥ अरु कोक कोक लोक लोक वाढ
तु अपार सुष सो कहै वियोगी के कि
कोक नु के गम मैं ॥ पद्य ७ ॥ दोहा ॥ मि
लि विछुरत विछुरत मरत दंपति अ
ति रसलीन ॥ नूतन विधि हेमंत सव
जग वे जुराफा कीन ॥ टीका ॥ यह हेमंत स
मय सषी को वचन नाइका सों है तो
विनें ॥ दोऊ जय के देषीयें इहुं न वीच
र कें प्रान हित की उमंग नई नई पै गउ
म हैं ॥ अति रसलीन दोऊ मिलें हीं विछु
रें कहै कवि क्रस्न चित अति उमहत
हैं ॥ विछुरें निमेष हू तो जीवे को भरोसो
नाहिं अति अकुलाइ मैंन विषान सहत
हैं ॥ औरय कदेवा हिम रितु की नव लरी
ति जगत में सव ही जुराफा के रहत हैं ॥ ४८

॥सिसिर रितु वर्नन॥ दोहा॥ आवतु जा
तन जांनियतु तेज हित जि सिय रात। घ
रहि जमाई लौं घट्यौ षरो पूस दिन मान
टीका॥ यह सिसिर रितु समय दोउन के
हित को अधिकाई है सु रात्र ही अखिल
रात्रि है सु सर्वा दिन की लघुता कहत्ति है
विरहता दिन को निंदकर॥ कवित्त॥ वांव
नड़ा ज्हे विभाव रोवृत्ति ज्यौं ही त्यौं ही त्यौं
ई त्यौं वियोगिनि के हियो अकुलातु है॥
दंपति उमगि अनुराग उझिलातु उर यहै
रहतु मिलि दुहुंनु को गातु है॥ पूस को दि
वसु लघु मानु भयो अंसे जै से ससुर
कघर मैं जमाई सकुचातु है॥ तजको न
लसु रच्यो सीतल सुभाव गह्यो जांनत
न को ऊ कव आयो कव जातु है॥ ५४९
दोहा॥ रहि न सको सव जगत मैं सिसि
र सीत के त्रास॥ गरम भाजि गढवै भ
ई तिय कुच अचल मवास॥ टीका॥

हूं मुकोरि ऊपाइ करौं कि निको ऊ॥ जौल
गि पीऊ प्रिया सवु फाइ रहे लपटाइ न एक
हूं दाउ॥ ५५१॥ दोहा॥ लगति सुभग सी
तल किरनि निसि दिन मै पसव गाहि॥ मा
नसखी भ्रम सूरज्यौ रहति चकोरी चाहि
॥टीका॥ यह सासि रसीतु कवि कौ उक्ति सु
ख्यात॥ कवित॥ ससिर मै सीतन नै करी है अ
रे रीति आहि घों मेहूं मैं चांदनी के चैन उ
महत है॥ संपुट सरोज गहै कुमुद विका
सच है मिलन इ कंत को न विरह दहत है
सीरी सीरी सुभग वा किरन लगत गात
राति के विलास सब घोस ही लहत है
ससी कै उदै को सुधा सो निस विना की
आर चौपसो चकोर चितवत ही रहत
है॥ ५५२॥ फागुवर्नन॥ दोहा॥ दियौजु
पिय लषि चषनु मैं षेलत फाग षियालु
वाढत हूं अति पीर सुन काढनु न वनत गु
लाल॥ टीका॥ यह होरी षेल के समय

हसी मारि गई है ॥ ५५४ ॥ दोहा ॥ ज्यों ज्यों
पट झटकति हसति हठति नचावति नैन
त्यों त्यों निपट उदारहू फगुवा देत बनैन
॥ टीका ॥ यह नाइका प्रौढा है होरी षेलको
समाजु नाइकु सोभा देषिवको लोभल
ग्यो है सो सषी सषी सो कहै है ॥ कवित्त ॥
फागुनि षेलको समाजु वनि आयो जे
से जेसे येके रसना सो कहत वनै न तें
सो करी गली में नंदलालको पकरि व
लमन भाये करत बढो वै चित चैन
अज्यों नवताइ भरी लोचनन चाइ प
झटकि कहनि हसि हसि मृदु वैन तें ॥
सो चितु लालनु कौ निपट उदार त
फगुवा कौ देवौ तऊ मानत मनैन
॥ ५५५ ॥ दोहा ॥ छुटत मुठिनु संग
है लोक लाज कुलचाल ॥ लगत
केवरही चल चितनु नैन गुलाल
यह होरी षेलको समय सषी स

कहतिहै॥ हरीकौसमाजुवरसानैंढव
गरआजुकराकहैं॥आलीवनिआयो
नीकोंख्यालरी॥ इतंजुबतीगनमैराधि
काकिसोरीतउसहितसषांनिवन्यो
मदनगुपालरी॥ छूटनमुठीकेसंगछ
टतहैकैयोंवरगुरजनलोकलाजली
नकुलचालरी॥ कहैंकविकृस्नत्योंहिं
लागतहैंहूकतनचेकेंसाथवोवृतलो
चनगुलालरी॥ ५५॥ दोहा॥ सौंन्योंजु
किमापतिवदनुविहसतिअतिसतराइ
त्योंत्योंगुलालमुठीझुठीमटकावतुप्यौ
जाइ॥ टीका॥ यहहोरीषेलनाइकाको
वरनदषिनाइकुरीझ्योहैसुनाइ
तिकरतुहैसोसषीसवै
कवित्त॥ आजुव्रजुदेष्यो
माजुवहसोभामरनै
रिकोराधावनमाल
आलीसषीमघवा

तगारकैं ॥ ज्यौं ज्यौं प्यारी झुकि झुकि झांपति
बदनविहसति मनराति रसकौं सरूप
करिकैं ॥ त्यौं त्यौं देषि झकि झक्यो क्रमप्रा
न प्यारलाल दिग झकावतु गुलाल मुरि
झुठी भरिकैं ॥ ५५७ ॥ दोहा ॥ रसभिजय
दाऊ दुहुनु प्रतिटिकरहे टेरैं न ॥ छविसां
छिरकत प्रेम रगा भरि प्रेम रंग भरि पिय
कारीनैंन ॥ टीका ॥ यह दोऊ अनुकौं परस्पा
वनुलोकनु हैं सु सषी सषीसौं हरीकें छ
लकी समतादिकें कहत हैं ॥ कवित्त ॥ श्री
वृषभानकी कुमारि मन मोहननें नंदनु
प्यारीरीकें सौं प्यालु करिकें ॥ भरे हैं तन
कोऊ चूंकत न छूटि किरहे टके लाऽ
ऊजातुन हीटरिकें ॥ भिजय वनाऽ
रसमें पारसपा फागु स्वनुरागाकें
रंगटोरिकें ॥ क्रमकें हैं छिरकनछ
गीलदोऊ नैंन पियकाई करि प्र
रिकें ॥ ५५८ ॥ टीका ॥ गिरिकें पय

हंकरूपसीजलपटाइ॥लियोंगुलाल
मुठीभरीधुरतछुटीजाइ॥टीका॥ यतेंा
शबलकोसमोसबी।सोकहतिहेंदाउनु
केंसात्विकभाउकेपुहें॥कवित्त॥मरोक
यांमांनिरीउतेलेंचलिदखिनेंफगाजुव्र
जधूमहारीबलकोअनूरीहें।केसरिमें
सनेंरसिकरसीलजहांवरघातहांहीस
वसुषनुकोलूटिदूरीहें।जदपिदरसप
रदोउमुषमांडिकेंकोलेतअतिचाइसों
गुलालभरमूरीहें।कछूकरपंकजप
सीजेंलपटानकछुकोधोंगिरजातलाते
बालेंहातिरूठीहें॥५५८॥वायुवर्नन॥
दोहा॥रहिरुकोक्योंहूसुचलिआधिकरा
तिपधारि॥हरतितापुसबद्योसकोल
गिलगिउरहिवियारि॥टीका॥ यहवायु
वर्ननकविकीउक्ति॥कवित्त॥ऐसीरही
रुकिकोंहूआवननपावननपाईजाव
विनुमिलैंमांननुकीगतिअकुलानीहें

नोचनचकितजाकोंआगमविलोकिवे
कोचहूंआरचितवतछातीहेतितातीहै
लाहूंकोंहूंकोचलिकेंप्रचानकहूंप्राधी
रातिआइगईआरिओवयारिआइजातीहै
हरतिलपतिसवधासकोहियेसोलागि
कहैकविक्रमसुखसरसातीहै ॥ ५६० ॥
॥ चुवतस्वेदमकरंदकनतरुतरुवि
रमाइ ॥ आवतुदछिनतेंलख्योथक्योवटो
हीवाइ ॥ टीका ॥ यपवनवनेनकेविको
त्ति ॥ कवित्त ॥ निरुरतजातजलजंत्रसीद
कषिमलगातसलिलपरसलुभ्यौसीरोछ
सोंढरहे ॥ क्रमकेरजहोतहोसीरोछ
दषिकरिविरहतुविरहीतरुतरुकत
रं ॥ सुमनुपरागजुगपागिरह्योअंगग
स्वेदकनवूंदमकरंदकेधरैधरे ॥ सुर
हूछाकोदछिनदसातेचायुथाके
वटोहीचल्योआवतुहरेहरे ॥ ५६१
विकसतनवमल्लीकुसुमनि
हा ॥

रिम्लपाइ॥ परलिसङार [illegible]
सिरहेकीवाङ॥ टीका॥ [illegible]
विरहकेप्रसंग मेंसखी [illegible]
कवित्त॥ मेंजुलला [illegible]
जनितेहरेहरे निकस [illegible]
है॥ सुमनकदंव नि [illegible]
जाहिमिलि मौर [illegible]

रकैांउमगाग्रभंगुहैं ॥ झझकतुसांकरैनि
कुंजमगनिरषतुझांझसीकरतुझुकरातु
भयोरंगुहैं ॥ बूंदसीकरतुमंदमंदमलया
चलसैंआवतुपवनकामदवकोतुरंगु
है ॥ ५६ ॥ लपटोपुहुपपरागप
टसनीस्वदमकरंद ॥ आवतिनारिनवोढ
लोंसुषदवायुगतिमंद ॥ टीका ॥ यहपव
नवर्ननुकविकीउक्तिनाइकाकरिकैंवर
नी ॥ कवित्त ॥ फूलनिकीरजअंवरमेंन
घतेंसिथलोलपरीछविछावति ॥ स्वदल
सेंमकरंदफुहीलगितेंनतुसांछसीया
हिसिरावति ॥ कृष्नकहैंवहुभांतिनकेंत
नसोरभचहूंदिसांमहकावति ॥ मंदगहैं
गतिनारिनवोढलोंव्यारनुकुंजगलीत
नआवति ॥ ५६ ॥ दोहा ॥ रनितभृंगघं
टावलीझरतुदानुमधुनीरु ॥ मंदमंदआ
वतुचल्योकुंजरकुंजसमीरु ॥ टीका ॥ य
हवायुवर्ननकविकीउक्ति ॥ कवित्त ॥ वेरनि

केसवदसअर्थ२तेंईसुनीयनहें गुंजतुअनंदमस्य
अलिनुकीवृंदहै॥सुमनसमूहनुकीधूरसो
धुरटोंगातमदजलउमगिझरतुमकरंदुहैं
रंगारंगफलनुकीफूलभंगपायेतनुजगत
विदितपायोविक्रमअमंदुहै॥मानलरतो
ज्वकोआवतुगुमानभस्योमंदगतिपवन
मनोजकोगयंदुहै॥५६५॥चंद्रोदयदोहा
हेंजसुधादीधतुकलावहलविरीछलगाई
मनोंअगासअगस्तीयायेकेंकलोलक्षा
इ॥टीका॥ यहचंद्रोदयवर्नेतुसषीको
वचनुनाइकासोंअगस्तियाकेतरुनेसके
तुश्वेस्यालमूंचतुहें जलमिलिवकीअधि
कचनुसाधारनतेंकविकोउक्ति॥कवित्त
देषिउतेंडुतीयाकमयंककीकेंसीकला
तपजोतिजगीहे॥सोछविचाहचकारि
वेकीअवलीफुलसीहियमादपगीहे॥
निरषीअरुनाईलिये
उरमेंउमगीहे॥मान

कसो मेरे हृदै में बसो॥ कवित्त॥ छवि सों
कवि सीस किरीट बन्यो रूविसाल हियें
वनमाल लसें॥ कर कंज हि मंजु रली
मुरली कछनी कटि चारु प्रभा वरसें॥
कवि के लखि सुंदर मूरति यों अभि
लाष हियें सरसें॥ यह नंद किसोर विहा
रसदा इहि आनिक मो हिय मांझ बसें
पद्म॥ दोहा॥ मोर मुकट की चंद्रकनि
यों राजत नंद नंद॥ मनु ससि सेषर की
अकस किया सेषर सत चंद्र॥ टीका॥ यह
श्री कृस्न जू के मुकट की सोभा सषी को
वचनु नाइका सों अरु भक्त हू को संभवे
कवित्त॥ आजु लख्यो व्रजराज कुमारु
सुदेस सिंगारु वने सगरे हैं॥ रूप की रा
सि कहीन परें अवलोकि विलोचन
भरे हैं॥ कृस्न कहैं सिर सोहत
देखत छवि पुंज भरे हैं॥
मंसिस सब ससों हरि से

करैहै॥दोहा॥ मकराकृतगोपालकेकुंडल
सोहतकांन॥ मन्योंधस्यौंहियधरसमर
ड्योंढीलसतनिसांन॥टीका॥ यहश्रीकृ
ष्णजूकोध्यांनुहै श्रुतरुनाईआईहृद
मेंकंदर्पप्रवसभयोयेंप्रयोजनु॥कवि
त्त॥ मैंनिरष्यौंव्रजराजलला द्युतिपुंज
हियेहितसाजरहेहैं॥ कसमकहेंडगदीर
घदोषिप्रभातकेपंकजलाजिरहेहैं॥मं
जुलकाननमेंमकराकृतकुंडलयोंछवि
छाजरहेहैं मानोंमनोजधस्यौंहियमां
दरद्वारनिसानविराजरहेहैं॥५७०॥कवि
त्त॥ सोहतओढेंपीतपटुस्यामसलोने
गात॥ मनोनीलमनिसैलपरआतपु
पस्यौप्रभात॥टीका॥ यहपीतांवरकी
सोभानाइकाकोवचनुसषीसोंसषीको
वचननाइकासोंपरकहूकोंवचनु॥दो
हा॥ वनिजाछविसोंहरिनेननुमें॥ग्रहग्रा
ननुमेंअवरोहनुहै॥ समताकलताछ

विकाकहीयेंसुवियोंतिहूंलोकमेंकोहतु
हैं।सषिसुंदरस्यांमकलेवरपेंपटुपीतुन
सेंमनमोहतुहै॥मनिनीलकेसेतकेऊ
परमानोंप्रभातकोंप्रातपसोहतुहै॥५२
भालकोंवचनउपालंभ॥दोहा॥ कच
कोंटरतदीनरटहातनस्यांपसरोजनुय
मूलांगीप्रगतगुरुजगनाइकजुगवार्‍
दिका॥ परभक्तिकोंवचनुभगवानकों
कवित्त॥ होकवकोंरटलाइअचोगर्भ
सुभाइमनोंवचकाइकानेंदकेनंदकेगु
वतहोंहरिकोहनेंहोतनस्यांपसमरक
येतोंविलवुकस्यांदरुनायकाको
प्रभुहोंसवुलाइका॥जानिपरेकनुमई
कछुअवन्यारिलगोंनगुनोंजगनाईक
५७॥दोहा॥ मोकों[illegible]
कोंपरीगुन[illegible]
वारक[illegible]
वचन[illegible]वान[illegible]

संकटनिवारनकौसावधानकहतनिहार
वेदविरदकुकारिकै ॥ कहैकविकृस्नत्यौं
होंदषीयेंपरत्तिसाखिदीननिकेदीनैहुंश्र
नकदुषटारिकै ॥ श्रानाकानीनीकीकरी
मेरीरटफीकी[illegible]रीलागनगुहारिरहनिठु
राईधारिकै ॥ जांनीयतुतारिवकौप्रभुश्र
वछोरौतुमजनसुनीत्यौयकवारवारुनिकौ
तारिकै ॥ ५७३ ॥ दोहा ॥ बंधुभयकादीन
केकौतार्यौरघुराइ ॥ तूठतूठफिरतहौझू
ठविरदकहाइ ॥ टीका ॥ यहभक्तकौव
चनभगवानसौं ॥ कवित्त ॥ कौनसदीनप
कौंनीदयाश्रपराधीकहातुमकौंनउध
र्यौ ॥ कौंनश्रनाथकेबंधुभयप्रभुकावि
नुदासुभयौतुमतार्यौ ॥ श्रैसईकैसंप्र
तीनिकरौकविकृस्नकाहेहांपुकारिकेत
र्यौ ॥ तूठईतूठनिसौंकफिरौप्रभुझूठौं
हीधाकुश्रनाहकपार्यौ ॥ ५७४ ॥ दोहा ॥
थोरईगुनरीझतेविसराईवहवांनितुमहू

कौन मनों भय आज काल के दानि।।
यह भक्त को वचन भगवान सौं।।
कें अति सारत सें विनती बहु भांति
करुनारस भीनी।। कृस्न कृपानिधि
के बंधु सुनौ असुनौ तुम कारन
...तरंग कहि गुन ...
मनों तुम दीनी।। ...
कलिकाल के ...
दोहा।। ...
...राज ...
...नलाज
गवान...
मातन...
उदस...
धम...
अव...
विरद...
विम...

वरसचारीकोंतुल चिजाइ॥ अवजीतेकोंत
दर्षाये ॥५७६॥ दोहा ॥ ज्योंकेहांत्योंमें
उगोहोंहरिअपनीचाल ॥ हाहुनकरोंअ
तिकठिनहे मोतारिवोगुपाल ॥ टीका ॥
यह भक्तकोंवचनअपनोपापकरिकें
पनुभगवानकोंउधारिवकोंउधारिवकों
पनुउपावलसोंप्रगटकरतुहे ॥ कवित्त ॥
उनहूँ गनतीमेंनहोप्रभुजनुमतारत
आपनोगोहो ॥ केसकेहोंगनतेनवनेक
छुपापीनुकोपरमावधिहोंहु ॥ होंनीहंज
कछुहोंनीवहेगतिमेरीयेचालकुचाल
निसोंही ॥ बलनुहूप्रभुकरोंउधारिवो
भूतिनकोजेंवृथांसुहयोही ॥५७७॥ दो
हा ॥ कोंनभांतिरहिहेविरदुअवदेषि
वीमुरारि ॥ वीधेमोसोंआनिकेंगीध
गीधेंतारि ॥ टीका ॥ यहभक्तिकोवच
नभगवानसोंयहदीनउधारनविरदु
हेंसुनिश्चेंजांनिकहतुहे ॥ कवित्त ॥ पति

आ
उद्धारनकहतुसुनुकोउसोउसांचरूठक्ष
ववहराइगोवनाइकै।।कहैकविक्रस्न
जेनअंगरकेभरमभूलोहोतोहोगरुव
पापीमनवचकौकै।।ताक्योहैपतितरूप
कुगीधुतातेगीध तुमसोइजसुराखौ
हैंजगतवगराइकै।।कौनभांतिराखिहै
विरदुप्रभुदेखियेजूकठिनवनीहैअववौ
धमासेंआइकै।।५७९।।दोहा।।मोहूसे
दीजे माधु।।मोअनकअधमनदीयौ।।
जोवांधेहूतौमुतौवांधौअपनगुननि
शीका।।यहभक्तकौवचनभगवानसौ
किमुक्तिकरोतोवांधिराखौतौअपनौक
रराखौ।।कवित्त।।भांतिभांतिआरति
कौआरतिनिधारतहौप्रगटपुकाररतनि
गमगनसाखिये।।तातेकविक्रस्नदीन
वंधुदयासिंधुजूसौवारवारविनती
पुकारियहैभाखिये।।अधमअनेक
निकौंम्होंहीदीनौमोपुतुमतौहौमोहू

मा बुदिवौ चित अभिलाषिये ॥ बांधिबौ
जो पै मन मानौ महराज तौ जु आपनै
गुन नु बन नाइ बांधि राषिये ॥ ५७ ॥ टीका
निज करनी सकुचहि कित सकुचावत
इहिं चाल ॥ सो हू सनित विमुषन्यों सन
ष रहि गोपाल ॥ टीका ॥ पर भक्ति कौ
चन अपनौ विमुषता भगवान कौ भ
लि सो सनमुष रहिवे कौ पनु प्रगट क
तु है ॥ कवित्त ॥ जो निपरे न तिहारी प्रभ
गति भेद हू नीके कै भेद न पावत ॥ संगा
र बुजन ग्वालनि कै मुनि पावै न ध्यान समा
धि लगावत ॥ ये कृतौ हौं अपनी करतूति
मुहि सकुच्यौ व हु स्यौं सकुचावत ॥ हौं तुम
सौं नित हीं विमुषै मुमदीन दयाल सन
मुष आवत ॥ ५८० ॥ द्रोपदी को समों दोहा
भात गर जिना हरगर जि वा तु सुनायौ
थरि ॥ फसी फौज मैं बंदि बिच हसी सवतु
तन हरि ॥ टीका ॥ यह द्रोपदी कौ समय

कविकीउक्तिसाधारनतेंग्रामीनप्रसंग
मंदिमें है पैंअपनेपतिकेविक्रमको
भरोसोंजानिहसीहै॥कवित्त॥ आयु
धअघटसाजेसुघटनुकोभीरभारीव
सोंओरविकटलीयेईजातघरिके॥
नाहरकीगरजगरूरसोंगरजितताहि
समेपाछतेसुनायोवालुटरिके॥वाके
प्रतिविक्रमकोभाउजियजान्योयह
नीतेंगोसमरयकयककोनिवरिकें
प्रवलचमूकेवीचमूंकवीचमंदिमें
फसीहैंतऊमगिउछाहहसीसवनुत
नहरिके॥५८१॥अन्योक्तिदोहा॥नहिपा
वसरितुराजयहतजितरवरमतिभूल
अपतभयोंक्योपाइहेंक्योनवदलफे
लफूल॥टीका॥ यहअन्योक्तिकाहूदा
ताकेधोंसेसूमपेंकछुकोउचाहे॥नहीं
करियेंनगरकेप्रसंगमेंगढ़केप्रसंग
मेंसंभवे॥कवित्त॥ मघवाकेजलसे

उमगि अधिकाने बहु पछितु को राख्यो त
व साइ समुदइ है ॥ छ ॥ चित भूलवाम
रा सों मति भूले अब वैसो तौ वन के नीठि
वनि आइ है ॥ पावस नजो निरितु राज
समाजु पहयो ठिके सें हरित भरित त
विछाइ है ॥ सुनितर वर ज्यो लेहे नअ
तु तुव तो लौ नवदल फूल संपत्ति न पा
इ है ॥ पर ॥ दो ॥ को छूटो इहि जाल प
रिकत कुलंग अकुलाइ ॥ ज्यों ज्यों सु रि
भज्यों चहतु त्यों त्यों उरझतु जातु ॥ टीका
परम प्रीति सिसार जाल अथवा प्रेम
जाल के वंधन में कहीये ॥ कवित ॥ तव तो
न जान्यों लगि लाग्यो चलु भ्या नें चित अ
परवस परि कोह पछितातु है ॥ कहें की
कौस या के वंधन की यहौ रीति तिनें कअ
तन अग अवधि जातु है ॥ दक्षातें प
को जू छूटो इहि जाल परि कुरह कौतू
र कुलंग अकुलातु है ज्यों ज्यों हों सु र

भज्यो चहतु सयान करित्यो हीं त्यो बरो
ई बरो उरकतु जातु है ॥५८३॥ दोहा ॥
ईहि द्वै ही मोती सुगुथित नथ गवि निसां
क ॥ जिहि पहिरें जग दृग ग्रसत लस
तित सति सी नाक ॥ टीका ॥ यह अन्यो
क्ति थार कृसधन सों अथवा गुन सों
अधिक सो हतु हो इतहां कहियें ॥ कवित्त
सुरनि समननि नाक याहि सौं कहतु सब
मुक्ति जुति मुकति पुरी सो दरसति है।
कहें कवि कृस्न मन मोहन कौ मोहिबे
कौं माहि नी की सिद्ध मानों सो भार सति
है। ता हि पहरे तें जग नयन ग्रसति अ
ति छवि वर ... ... हसति
है। अहन थ उर में नि
कै ही मुकता के
५८४॥ दोहा।

आहर सु

रुग्रमोक्तिकोऊग्रोछ्रुकुलतेमयोल
घुमानसुग्रसवडोग्रोरजा १ पहूंच्यै
लाइतहांकहीये ॥ कवित्त ॥ कोनविन
नुकरैकुलजातिकोजीवनग्रापनोऽ
जगमेंगनिहेसवतेवड भागीतुहीग्रौ
ग्राईतेरीहूयेंवातभलीयनि ॥ तैंहीलि
योकतपूरवकोफलुहेतुहीवसरि
मुकतातूनि ॥ योसुनिसांतियकोग्र
राप्रतुनीकोनिसांकहेंपीवाकरकि
धरपा ॥ दोहा ॥ पाइतसनिकुंचउच्चप
दचिरमोठिग्योसवुगांऊं ॥ छुटैतोररि
हेवतेजुहेमोतुछविनांऊं ॥ दोहा ॥ यल
न्योक्तिलघुमानसकोऊवडठिकानेपा
योनताकहीये ॥ कवित्त ॥ ॥सुद्धिमम
लुषरोलघुनामुभईऊतपालिनऊनम
यांनों ॥ कोनहूंभागिलहेघुघुचीनवन
गरिकेकुंचउच्चठिकानो ॥ याहीतेमा
सवेजगकोमनुताहिगुमानबरोग्र

थकांनो।।ठौरछुटेरहिजेहैंवहीसुषका
लिमारगचजारविकानो।।५८६।।दोहा
नहिपरागुनहिमधुरमधुनाहिविकासु
हिकाल।।अलीकलीहीसोंवध्यो आ
गैकोनहवाल।।टीका।। यहअन्योक्ति
नाइकाकतनमेंअवहीजोवनुआयो
नाहिंनाइककोआसक्तियहलखिसीसुस
षीसषीसोंकहतिहै।।कवित्त।।नाहिपरा
गुनहींमकरंदअजौप्रगट्योनसुवासवि
कासराजांनेकोआगेधौंकहैकहागति
असोपर्योअबहीइकआसरा।फूली
घनीफुलवाररसालपैकाहूकोनेकनु
माननतासरा।।रीझरलीमतिकंजकली
पैअलीमडरानोरहैनिसबासर।।५८७
दोहा।।मोरचंद्रकारुपा
इरतगुमानु।।लषिवी
नेयतुराधामांभु।
कारुलघुमान

ताकौं मांन भंग होत जो नीयें तहां कहि
ये ॥ कवित्त ॥ घनस्यांम नें आपने सीस
पें राषि चंद्रिका इके चाइ के चाइ तु सांधरी
है ॥ जिनियाको तूं जीमे गुमान करि
वतो सब जो मल षी परि है ॥ कहि का(
कों मोरिकी चंद्रिका असो डराई के डार
हो ठरि है ॥ अब मांनकुमार के मांन समे त
ष्वान तरें लुटिवो करि है ॥ ५८८ ॥ दोहा ॥
जिनि दिन देषव कुसम गई जु वीति वहा
र ॥ अब अलि रही गुलाब में अपत क
टीली डार ॥ टीका ॥ यह अन्योक्ति धन वात
निर्धन भयो तहां धन के लोभी जो जाय
कन को कहिवो भ्रमर के प्रसंग के गतये
वन है को कहिवो संभव ॥ कवित्त ॥ जब
तउ पत रितुराज को प्रताप पूंरेयें कते कवि
कहम जाको विक्रम अतिअपार तवे
निवाटिका निहारे है सुष दुष सरस कु
सम भरे अतुल सुगंध भार ॥ औ आस

लाग्पेइतग्रावतुचल्यांकौंग्रलितौंच
रवितोलभईस्रोसरउहिंवहार॥गंधम्र
तमुदुतापरंरायगकोंनलेसुरवोंग्रव
रहींग्रपतगुलाक्कीकयोलोगर॥पर्द
दाह॥वहकोवडोईग्रापनीकतचातुर
मतिभूल॥ विनुमधुमधुकरकुहियं
मक्रेगुडहस्कृते।।हिकों।पिहग्रर्थान
कौउगुनहीनहेंओंगिर्वेग्रधिककंगन
हैतासोगुडहरकफूलकोप्रसंगकोर
संभवे॥कवित्त॥करा भयोंजापंपाय।
सतजन्मरुनरंगुउमतिलेलिनछोत्र
हितनछाइहैं॥वतिकिवहक्किवितग्रा
पनीवडाईमेतंकाहकोग्चनुगन्ना
योनपाई ॥जोहिरसने केनृप
कौंलग्पो
नोपेमडरा
तंफूलि
लिहूं

कतुनश्रमस्यांदेषिविहंगविचारि॥ या
जपरायेपांनिपरतूंपंछीहिनमारि॥ टीका॥
यहअन्योक्तिकोउपराईषुसामदिकरै
अपनैकोबुरोकरैतहांकहीये॥ कवित्त॥
कहिवेकोबुरानैबुरकरतपरायकाज
ऐसोघाटिकरमुविचारतहैकाहको॥
यतोअमुनाहकसरीरकोनहैदतुअरु
दोऊलोकअपनैविगारतहैकाहेकौ
यामेंकछुसुकृतनस्वारथनसमझि
विपातककोभारुसिरधरतहैकाहको
कृतभयोजोपैआनिथाराईपराये
पांनिवाजनिजुपंछिनितूंमारतहैकाह
को॥ ५८१॥ दोहा॥ मनमुजनलधिप
र॥ निपुविमलभौजगआगमअपार॥
हंगुनीलैगरुपस्योभलौनमुकताह
र॥ टीका॥ यहअन्योक्तिकोउसुपात्र
हंभलौठौररहिवेलाइकऔरछोटौ
रआनंदसोरहैतहांकहीये॥ कवित्त॥

जन मुजलधि कुलपानि पुवि मनन्प्रति
तेरी श्रु भ सो भाजन गम गतिसु ताई ॥
सब को ऊ जगत में चौपक रनारि नंदी
करिवे सकि मन्तिज वाहर में पाई ॥ न
रोसं गुपाइ छितिपालु ओ म्वाल निको
कैसी नीकी दे पिपति रूप की निकाई ॥
औसो हे सुन्नी है गरपरि के [illegible] मुनिच
वताकै तरयामै कंधौं [illegible]
पदत ॥ गनिन को गुनन को गुनगान
मौ सैव समा [illegible]

त्रिभुवन में ॥ जाके प्रान दारुन नितधकी
घटतन औसको त्रिभुवन मे त्रिषामें
वा मतोर पांउ वचे सियराई भई तनमें
ताके आगो कहो काऊ सागर की बात
औ सो सलिल अपार कै सो आवै वाके म
नमें ॥ पर्द ॥ दोहा ॥ कोकहि सकै चउति
सोल षैवरीयो भूल ॥ दीनै दई गुलाव की
उनगरन ये फूल ॥ टीका ॥ यह अन्योक्ति
काऊ प्रवीन मनतानी अजाने प्रविव
केवो कैं नहां कहीये ॥ कवित्त ॥ कोयह
वात है सबै कहि भूलि के काम करैं कर
तार नेंजैसे ॥ यतीकरी जगकी रचना
पे विचार विना मे करैं न हि तैसे ॥ दषु
काउ उस्मा से न मासव ऽजु करैं कछु का
म अनैसे ॥ वैसी ये कंटक डार गुलाव
की फूल सुगंध दयेमडुके से ॥ पर्द ७ ॥
दोहा ॥ दिन दस आदरु पाइ कै करिलै
आपु वषान ॥ जौ लगि का गसराधप

पतोंल मिलों सन मांन॥ टीका॥ यह
अन्योक्ति कोऊ थोरे दिनन कों बढवा
रतें गर्वु करें ताकों कहीये॥ कवित्त॥ भ्रम
रकंठ कठोर महासुरयें कहीं लोचन रंगु
हें कारो॥ नील कलाश्रत पछिनु में अरुभ
छकी सा जु कुचील निहारो॥ आदरु पा
इ दिना दस कों अभिमांन न सोक घनों
किन धारो॥ चाइ सजों लों सराधकों पाउ
मु तोल गिहें जगु आपु निहारो॥ ५८८
दोहा॥ मरतु प्यास पिंजरा परयों सिसु
वाइस के फेर॥ आयसु दे दे टेरीयतु वा
इसु बलि कीं वेरा॥ टीका॥ यह अन्यो
क्ति भलें मांनस कों दुखु दीजीयें अरु
नीच कों आदर होइ ता कहीयें॥ क
वित्त॥ दिवस के प्रभाउ कों भाउ
भयों जगु औगुन हीं कों रिझैवों॥
...गई गुन ... नु कों प्रगटे
रूप भयों वा॥ प्यासों मरें

स्योंचकुहैंमृदुवैननुकोंजुकहौंवा
आदरकेंचलिदेवेकीवेरवुलावत
चाहकचाइसोंकोंवा ॥ ८९ ॥ दोहा ॥
रहिआसाअटकोंरहेंअलिगुला
वकेमूल ॥ ह्वेहेंफेरिवसंतरितुयेंडारन
वफूल ॥ ॥ टीका ॥ यहअन्योक्तिजहांव
कूजांनेपायोहोइतहांवेसीयेआसा
लगायेरहेंतहांकहीयेकाकथ्वनिते
यहहोइकिवाहीभरासेंअरहें ॥ क
वित्त ॥ वेइनडारनफूलनुतेंजिनकेरसनें
सवदुष्षुभुलानौ ॥ वीतिवहारगई
तिनकीकुसमावलिचित्तचुभेंनहि
आंनौ ॥ ह्वेहेंवसंतवहारतवेंयहवा
सुषआंरभहीकोविकानौ ॥ आसय
हेंजियमेंधरिभौंरगुलावकेमूलरहे
मडरानौ ॥ ९० ॥ दोहा ॥ पटुपाषेंभ
षुकांकरेंसपरपरईसंग ॥ सुषीपरेवा
पहुमिमेंयकेंतुहीविहंग ॥ टीका ॥ यह

च्योंच कुहै मृदु वै मनु कौं गु कहौं वा
आदरु कैं चलि दैव की वेर बुलावत
चाहक चाइ सौं कौं वा ॥ पद्य ॥ दोहा
इहि आसा अटक्यौ रहै अलि गुला
व के मूल ॥ ह्वैहै फेरि वसंत रितु यडार
व फूल ॥ ॥टीका॥ यह अन्योक्ति जहाँ
॥ जौं नै पायो होइ तहाँ वै सोये आसा
लगायें रहै तहाँ कहीयें का कथ्व निते
यह होइ कि वा ही भरासै क्यों रहै ॥ क
॥दिना॥ वह नगरन फूलनु ते जिन कें रसनै
सव दुख भुलानो ॥ वीति वहार गई
तिनि की कुसमावलि चित्तचु मैनहि
आनो ॥ ह्वैहै वसंत वहार तवे यह वा
सुष और भही को विकानो ॥ आस
है जिय में धरि भौंरु गुलाव के मूल र
मडरानो ॥ ६० ॥ दोहा ॥ पटु पांषै
षु कांकरै सपर परई संग ॥ सुखीपरे
पहुमि मैं यकें तु ही विहंग ॥टीका॥ य

असोत्तिजो कोऊ पराधीन अरु परदेसी
नाहिंतलोक ही ये॥ कवित्त॥ भोजन कोक
रवौनि करै जु नकरै जु अधीन कै काहू
की सेवा॥ पांषनु ही के बनै पहुचारु वि
साहकौं जानतु भावन सेवा॥ नी कैं रहै
घरनी कैं सदा सग पूरव पुन्यनु कौ फ
लु लेवा॥ कौनु हूं भांति निआस पराई
सुषी अपनी पै नु होहि परेवा॥ ८० १॥
दोहा॥ करलै सूंघि सराहि हू सबैं रहैं ग
हि मौनु॥ गंधी गंध गुलाव कौ गवई गाहक
कौनु॥ कवित्त॥ यह अन्योक्ति कोऊ इत्र
करै तहां कहिये॥ कवित्त॥ सुपथ हे उचा
रितै अमोलिकु अतरु आयो ना कहु
गंध सौं मह किर ह्यौ भौनु है॥ औ दिखा
इ हाथ सबही नैं लियो है उपिवे को ना
सिं सूंघि सबनु सराहि गह्यौ मौनु है॥
मोल सुनैं सबही नैं हसि कैं पचा
कैं पंथु गहि अवतंक रत [illegible]

अरु गंधी आधार हिय मैं यतौ चतुक
रि गाहक गुलाब कौ गवैल गाउ कौ
तु है॥ ६०२॥ दोहा॥ वेन इहा नागर
बडु जिनि आदर तौ आव॥ फूल्यौं अ
न फूल्यौ भयौ गाव ई गाउ गुलाव॥ टी
का॥ यह अन्योक्ति को ऊ वृंदन करें
तहां कहीये प्रवीन लोगन को समुदाय
हाइ गुनको वृंदको ऊ नरे तहां कहीये
कवित्त॥ चाइ सौ आदर न राकरै तौ हि
सो राषै हियौं अनुकूल्यौं॥ तामद सौ
र भको रसुलै जिनके अति मादुर है ये
लि ऊल्यौं॥ किंमति तेरीव ढाई घनी
रिझवार नवे जिनको तकि भूल्यौ॥ ये
सगमारन के वसवास मे फूलि गुल
व भयो अनफूल्यौ॥ ६०३॥ दोहा॥
गाधै नु तू हरखौ हिये घरिय कलहि पु
जाइ॥ समझ परैगी सीस पर परत प
सुनि के पाइ॥ टीका॥ यह अन्योक्ति को

काहूकोंमध्यातहोइसुपाहुदेनोंआवे
नहोंकहीये॥कवित्त॥सुनिकोनसबो
कलगावतगीतजेकोकिलकंठसुभाइ
नुसों॥वहुभांतिनकेपकवानवनाइम
नावेंसवेंसतभाइनुसों॥अवगोधेनचू
मनमानहियेंवहुभांतिपुजाइलेंचाइ
नुसों॥परिहेंसुधिनाहिसवेंतवहीपसु
पूजिहेगजनचपाइनुसों॥६०४॥दोहा॥
करिफुलेलकोंआचवनुमीठोकहेतस
राहि॥गधीअथगुलावकोंअतरुदिषा
वतुकाहि॥टीका॥ यहअप्रस्तुतिमूरष
जोंनिवासोंवतुराईजनावेंतासोंकहीये
कवित्त॥नगरकेवगरतेंनेरीऊंचेटरसु
निचोपसोंवुलाइलीनोंकहिआगेंआ
उरे॥वेंगरोनिकटअतिप्रीतिसोंहुक
मुकीनोंसोंधेवसंकिमत्तिकोंहमोहि
दियाऊरे॥आचवनुकरिकेंफुलेलकों
कहतमीठोतेंनअजोंजोंन्योंसुघराईकों
ममाऊरे॥काहूकोंउधारनगुलाव

अलसगंधीकहांगईतेरीचतुराईअव
याउरे॥ ६०७॥ राजाकौवचनौतुदोहा॥
प्रतिबिंबतजैसाहदुतिदीपनदरप
नधाम॥ जवजगुजीननकौकियौक
इक्षुहमनुकाम॥ टीका॥ यहसोराज
कौवर्ननकविकीउक्तिसषीकोवचनु
नाइकाकोवचनुसषीहूसोंहोइ॥ क
वित्त॥ राजतुदर्पनमंदिरमैमहिमंडु
श्रीजैसीधसवाई॥ त्यौप्रतिबिंबनि
कीअवलीचहूंओरलसैंअतिहीछ
विछाई॥ कैधौंअनेकसरूपधरैरवि
राजतुमंडलीमंडसुलाई॥ मानहुंजी
तिवेकोजगतैरचनावहुव्यूहकीकां
मचनाई॥ ६०८॥ दोहा॥ चलतपाइ
गुनीगुनीमानिकमुत्तियमाल॥ भ
यौजैसाहिसोंभागिनचहियतुमा
ल॥ टीका॥ यहराजाकोदांनकवि
उक्ति॥ कवित्त॥ दीजमगाइकैतुरंगतुरं

तुवसुजाचैंसाञ्जजाचीहोतमौजके
प्रसंगमैं॥६१०॥दोहा॥सांमासैंनसया
नसुषसवैसाहिकेसाथ॥वाहुवलीजे
साहिजूफलतिहारेहाथ॥टीका॥यह
राजाकौजयसिंघवरननकविकीउ
क्ति॥कवित्त॥जगमग्योदिल्लीछत्रप
तिकोप्रतापुनवषंडमैंअषंडदावेंअ
रिनुकेमाथहैं॥तेरेईउभुजदंडभुज
दंडकेभरोसेसोउरहतनिसंकअव
रानुयहगाथहैं॥सुभटसमाजसा
मासयनसमाजसुषसवैसबभांति
नुकौसाहिजूकेसाथहैं॥रहतिसवाइ
जयसिंहमहाराजसदासमरविजेकी
सिधिरावरेईहाथहैं॥६११॥दोहा॥अ
तीवदीउमडीलषेंअसवाहकभटस
यामंगलुकरिमांन्योहियेंभोमुहमंग
लरूप॥टीका॥यहराजाकीसूरत
भरूवीररसुकविकीउक्ति॥कवित्त॥सां

केषतुआयेउमडिअप्रमितदलसह्य
सुभटमहाविक्रमनिधानहैं॥गरजे
गरूरगहैंनिपटनिकटआइविकट
कवंइसांधिवरषतवानहैं॥साहसी
सवाईजेंसाहिभूपअसेसमेंवीरर
नराचेथिरभयोतिहिथांनहैं॥उम
गिउछाहमहामंगलुकेंमान्योहियेव
दनुकौरंगुभयोमंगलुसमांनहैं॥६२
दोहा॥योंदलकाटवलनकतैंतवजय
सिंघमुवाल॥उदरअघासुरकेपरेंमें
हरिगाइगुवाल॥टीका॥यहराजाकी
रतापराक्रमुकविकीउक्ति॥कवित्तये
करसनासोंमापेकेसेंकहपरेंजेते
क्रमअप्रमितकीनेंनृपतिसवाईते
सवअघासुरतेंराष्योवज्जुजेंसेंअ
संहसनअलीकोगिलोदिल्लीउंग
ईतौजजियानिवास्योदवानलसे
पवनइप्रवलकेंविपत्तिहिंत्यान

तुवसुजाचैसात्र्प्रजाचीहोतमौजेके
प्रसंगमें ॥ ६१०॥दोहा ॥ सामासैनसय
नसुषसवैसाहिकेसाथ॥वाहुवलीजै
साहिजूफतेतिहारेहाथ॥टीका॥यह
राजाकौजयसिंधिवरननकविकीउ
क्ति॥कवित्त॥जगमग्योदिल्लीछत्रप
तिकोप्रतापुनवषंडमेंअषंडह्वेंप्र
रितुकेमाथहैं॥तेरेईउभुजदंडभुज
दंडकेभरोसेसोउरहतनिसंकप्रव
लतुयहगाथहै॥सुभटसमाजसा
मासयनसमाजसुषसवैसवभांति
जुकोसाहिजूकेसाथहैं॥रहतिसवा
जयसिंहमहाराजसदासमररविजै
सिंधिरावरेईहाथहै॥६११॥दोहा॥
नौवरीउमगीलषेंत्र्प्रसवारहक
यामंगलुकरिमान्यौहियेंभोमुल
लरूप॥टीका॥ यहराजाकीसूर
त्र्प्रतवीररसुकविकीउक्ति॥कवित्त॥

रिकेषत्तुआयेउमडिअमितदलसईय
दसुभटमहाविक्रमनिधानहै।गरजे
गरूरगहेंलिपटनिकटआइविकट
कुंवरसाधिवरषतवानहैं॥साहसी
सवाईजेसाहिभूपऐसेसमेवीरर
सराच्योथिरभयोतिहिथानहै।उम
गिउछाहमहामंगलुकेमान्योहियेव
दनुकोरंगुभयोमंगलुसमानहै।६२
दोहा॥ योदलकोटवलकतेंलवजय
सिंघभुवाल।उदरअघासुरकेपरेज्यों
हरिगाइगुवाल॥टीका॥ यहराजाकीसू
रतापराक्रमुकविकोउक्ति॥कवित्तये
करसनासोमोपेकैसेकहपरेंजेतवि
क्रमअमितकीनेंत्वपतिसवाईतें।
कंसवअघासुरतेंराष्योव्रजुजैसेंऐ
सेंहसनअलीकोगिलोदिल्लीऊगिला
इतें।जजियानिवारयोदवानल
सवलदुषवलकेविपतिा

वहाईलैं॥कालीज्योंकुचालीकाढिइरवी
नोंमुहकमकीरतिप्रकासजगुंआपै
उजराइतें॥६१३॥कवित्त॥घरघरतुर
निहिंदुनीदतिअसीससराहिंपतिनुरापि
चाहरचूरीतेंराषीजयसाहि॥टीका॥प
राजाकौंपराक्रमसवपैंउपकारहतुकवि
कीउक्ति॥कवित्त॥आयोइतअनीतसोंघ
जइतुसंगलेंविटपसुभटनुकेसमाजकौं
कहैंकविकरमइतदिल्लीकप्रवलदलनिकस
सकलसाजेंसमरकेसाजकौं॥ऐसेसमैंवी
रविसुभसकेअजानुवाहुराषीतेंइहकील
जकरिकैंलाजकौं॥घरघरतुरकिनिहिंउ
नीमेंमिलिसवदेतिहैंअसीसजयसाहिम
हाराजकौं॥६१४॥अथपरिहासदोहा॥
रविवंदैंकरजोरियेसुनैंस्यामकेवैंन॥
हसेंहेंसवनकेअतिअनषौंहैंनैंन॥टीका
यहहासपरसपरवीरहरनसमयस
वचनसषीसोंकविहुकीउक्तिहै॥कवि

तापवधूंनकेचोरचुराइकदंमपेंआइच्चदनौ
रिझौंहीं॥हाथसौंगातछिपाइकैंवेसकु
चीसतराइकैंमागनत्यौंहीं॥दवहिवाकर
कोंकरजोरिप्रनामुकरौंकहीवातरिसौंहीं
यौंसुनिकैंसुहसौंहींभईसवकोंअषीयांजु
कुतौअनषौंहीं॥६३॥दोहा॥ परतियदो
षुपुरानसुनिमुलकिहसीमुसिकानि॥क
सुकैंरिराषीमिश्रनेंमुहआईमुसिकानि
॥टीका॥ परहासपरसयौंरानीककोंप
रिहासकविकौउक्ति॥कवित्त॥पंडितरा
जसमाजमेंबैठिकथायौंपुरानप्रसंगमें
भाषी॥जातुनिरपदवीसविसपरदार
सौंजोहितकोंअभिलाषी॥सोसुनिकैंसु
लकोमृगलोचनिजासौंहीठिमिलाइ
कैंराषी॥भईजूचाहिविलोकनहोंउमगी
मुसिकानिमरुकैराषी॥६४॥दोहा॥
चितपितमारकजोगगुनिभयौंभयेंपि
तसोग॥फिरहुलस्यौजियजोतिसीसम

य्यो जारजु जो गु ॥ टीका ॥ यह हास पर स्त्री
गी को परिहास कवि की उक्ति ॥ कवित्त ॥ पूत
यो इक जो तिगी के यह सो धन सो चित मैं
लसो नौ ॥ डीठि परयो पितु घातक जो गुविं
रहि येअ तिही अकुलौ नौ ॥ जारजु जो गर
भ्यो तव ही मुल को उर मो नि हुलास सयो
भूलि गयो इ सुकूलि उसौ मुष आनंद पुं
हि ये अधिका नौ ॥ ६५ ॥ दोहा ॥ बहु धन
कैं है सो नु के पार दै नु स राहि ॥ वेद वधू
भ ह सो र ही ना ह सुषि चाहि ॥ टीका ॥ यह
सपर हास वेद को पर हास कवि की उक्ति
॥ कवित्त ॥ विप्र चिकित्सा के भद मैं यो इ कवे
हु तो पुर पार थ ही नौ ॥ का ऊन पुंसक
का रघ नो धनु लै व हु तै थ रु दीनौ ॥ पा
च्यं व दो व नु है चित के लिक लोल
वीनौ ॥ यो व ती यो सु नि वा की तिया
मुष आर चि लै हसि दीनौ ॥ ६६ ॥ दो
द्व र फूल है नै जु सुष उ है र षि अग

हसीकरति ओ बदअलितुदे हदेहारि तु भू
लि॥टीका॥यहनाइकापरकियामुदिता
देवरसौंआसक्ति है सासषीसषीसौंकह
तिहै हर्षअरुहासससंचारीहै॥कवित्त॥बेले
मेदेवरके करकेवजहींफूलेलगेनवला
तन॥आनदपुंजउमंगितहीयोंफूलिउ
ठपतिकामलगातन॥देहदेहारनिभूलि
लीउपचारुकरेलहै भेदकीबातनजान
तजेजियकीवतियांरसाविग्पतियाहसि
हरतिबातन॥६१७॥दोहा॥ओरसवै
हरषीहसतिगावतिभरीउछाह॥तुहींब
हुविलषीफिरैक्योंदेवरकेब्याह॥टीका॥य
हनाइकापरकियागुरजनकोवचनदेवर
सोंप्रीतियहव्यंगि॥कवित्त॥तुहीसवसाजैं
अनेकसिंगारवनीठनीठाढ़ेहुलाससोंभो
है॥गावैहसैहरषैवरषैसुषकाहूकीलेस
धरैचितनाहे॥भौनमेंमंगलसाजसुख
बड़ोसाइलहैसवजोचितचाहै॥देवरके

हि श्राहवह विलषी सौ तुरील षीयें कहि
हैं ॥ ६१८ ॥ श्रथ करुनारस प्लोटा ॥ समैं पल
टि पलटें प्रकृति कौ न तजै निजु चाल ॥ भौं
श्रकरुन करुनाकरौ इहि कपूतकलिका
ल ॥ टीका ॥ यह परस्ताव मैं सभ थें कलि
जुग कौ वरननु ॥ कवित्त ॥ कासौं पुकारिये
रोंचिन तौ इक सार भयों सिंगरोंजगु जोऊ ॥
जाति सभों पलटैं प्रकृत्यों फिर कौंन सुभा
उ तजै सबु कोऊ ॥ श्रारत सिंधु हया कौ समु
ड्र श्रनाथ कौं नाथ कहावत कोऊ ॥ वेंगयें
दे षें महा निरदें कलिकाल कपूत हि श्रावत
सोऊ ॥ ६१९ ॥ दोहा ॥ दीरघ सासन लेहु
षसुष सांई हि न भूलि ॥ दई दई क्यों करतु है
दई दई सु कवूलि ॥ टीका ॥ यह करुनारस भ
क्ति कौ वचनु श्रापने मन मौं ॥ कवित्त ॥ तौ त
उ षुलहे तौ तूं जिनि श्रकुलाउ लैलै दीरघ उ
सासन चित्त चिंता मैं न डुलिये सुष तौ न देते
सव भांति सावधान रहिसें पति मगन ह्नैके

नहुषदंह लातें कहु प्रवत नरोदर वार छोडिवे
नसों पुकारीये ॥ जेसें तुम नार पतितनके
अनेक पुंजन कहें कविक्रम जेसेमा हि कोउ
धारिये ॥ कोजेंचि नसोई जातनेहोइ निरधा
रप्रभु मेरगुनओगुनक हु ...नउरधारीये
६२२ ॥ दोहा ॥ भजनकयोतातें भज्योभ
ज्योनयकोंवार ॥ इरभजनजातें कह्योस
तेंभज्योगमार ॥ टीका ॥ यहभक्तकोवचन
आपनमनसों ॥ कवित्त ॥ मेरीतोसाष
सुनीअसुनीकरतेंमनओरमतोंअगया
र ॥ मेंकहावाहि भलीविधिसोभजितृंहरि
तेंभजिहरिभयोर ॥ जाकोकहोअतिहरिभ
ज्योरहिसोतभज्योंहितुसाजिनयोर ॥ कैश
कहेंयहस्यानपुतेसवयकहीवारकहेतवि
योर ॥ ६२३ ॥ दोहा ॥ हरिकोफिस्यानपेउ
लाभफिस्योसवुदस ॥ मनेनुभयोकहुऊज
रोभयेऊजरकेस ॥ टीका ॥ यहभक्तकी
वचनमनसों ॥ कवित्त ॥ जलथलव्यापक

नप्रतिपालकरे विघननिनासकस्यो तिं
सीदेनसर॥तीनलोककीनोमूडलोलता
चीन्होरसविषयनिसोभीनोतेनेठनेअं
भेसर॥कहैंकविकसमनतसाअतिरा
हरिकोविसरिगयोकिस्योदेसदेस
॥पैडहेनभवनकीनोकहाजगआइलीनो
नसतभयोसिरभयसतकेसर॥६२ ॥
कोनिरधारयहजगुकाचो
कोचसी॥एकेरूपअपारप्रतिबिंबितलखि
यजहा॥टीका॥यहसोनरससबेमईहोद
॥कवित्त॥निपटअसारदुखदहको
रूपरुभोतिभसोभयभ्रमनिकेभारहे
सोचकोसोटास्योनाथसोचोसोनिहारीय
तुजोलोलखीयतुसोकछुथिरुनारहे।योतो
मनमोहमेंतोसमझ्योविचारकरीयहजुग
काचोअसोकाचोनिरधारहे।जिततितधु
रिरह्योप्रनपुरिखुवहये निबि
वितअपारहे।

नसौंराख्यौंहियेंहमांम॥मतिकवहूंअ
पेऊहौंपलकुपसीजेस्यांम॥टीका॥यहअ
क्तिकोवचन॥कवित्त॥गावोगुनसेसजा
कोध्यावतमहेसमुनिसाधितसमाधिबं
हुभांतिमनचितुलाइकें॥ऐसीकोउविधि
मापैंआवतिनवनैंजातैंचसकद्योविभुव
नपत्तिकोरिझाइकें॥यककवातउरधारिअ
पनोंहियोमेंकरिराख्योहेंहमामत्तिहूंतोप
सोंलचाइकें॥वहकरुनामयकलावतेहेंदी
नवंधुमत्तिकहूंपलकिपसीजेइतआइकें
२२६॥दोहा॥व्रजवासिनुकोउचितधनुजो
धनुरुचितनकोइ॥सुचितनआईसुचितइ
कहोंकहांतेहोइ॥टीका॥यहभक्तकोवच
नुप्रयोजनुयहहेंविनाश्रीकृस्नकेध्यानसु
चितईनांहीं॥कवित्त॥जाकीतनसोभानव
नीरदसीदेखियतिपीतपटदांमिनिदमकि
छविछाइहें॥लोचनललितलसैंरसभरे
तामरसकुंचितअलकिअलिअवलिसुहा

है। ऐसें ब्रजवासिनिकौं उचित धनु हैता
तें नदीनें मनुमातिविषपरचाई हैं। कौन
ांतिसुचिताई जियजोलोंनोंलोंनाहिरूप
कीनिकाईवह जियमेंनआई है ॥ ६२७ ॥ दो
हा ॥ लोपकोपइंद्रलोरापप्रलैंअकाल
गिरधारीराषसवैं गागापीगापाल ॥ टीका
यहवीररसश्रीकृष्णजूनेंगोवरधनधरिकें
ब्रजवासीसवराषे ॥ कवित्त ॥ लष्पांवलिभा
सुनिकोप्योंअतिसुरपतिप्रभुताकेउमगि
मानमनआयेहैं। आहकरिकेंहिवारवाहैं
नवेपकतकैंब्रजकोंवहावेंऐसेंचलनच
लायेहैं। उमडिगोराधारवरषतविकरारघ
मानोंमहाप्रलयपकसाथचलिआयेहैं
ऐसेंसमैंनंदकेसुवनकरगिरिधरिगोपीग्वा
लगाइवछसवहिवचायेहैं। ६२८ ॥ दोहा ॥
चलेकरनसहसनलगजुकिजलधरइक
साथ। सुरपतिगर्वहस्योंहरषिगिरधरगि
रिधरहाथ ॥ टीका ॥ यहवीररसगोवरधन

कोंसमयहेहरखिपदतेंउत्साहमुष्यहे ॥ व
चिन्ह ॥ मलेकंघुमडिघनआयवृजमंड
पेमंडिकेंअषंडधारिलायोंहस्यप्रतिकों
निरषिविकलभयगोपीग्वालगाइसव
हूकेहियमेंरह्योधीरजनरतिकों ॥ नातेस
मेंजसुधाकोंलालुअवेंसोंहालुदेषिहरषि
रयाभयोंवृजकीविपत्तिकों ॥ पातलोंउ
राख्योंगिरवरपानिपरहूरकीनोंसरवग
वसुपतिकों ॥ ६२९ ॥ भयरसदोहा ॥ क
त्तिनदेवरकोंकुवलकुलतियकललदरा
पंजरगतमंजारदिष्टिगसुकलोंसकति
इ ॥ टीका ॥ यहभयरसुदेवरकोभयत्तामं
कोंवचनुसषीसोंनायकासुकीया ॥ टीका
देवरुचपलुचितउरमेंकुभाउधरिक
अनेसीवातयासोंदिनरातिहे ॥ कहेंकवि
हूलमयरहपरमसुसीलवालसकुचमन
मेंमनहीगुरकुलातिहे ॥ कहिनसकतिका
आनसोंहियकोंमेदकुलतियकुटम

नहरातिहैं॥निकटविलावकेयषेरू पिंजरा
कौंजेंसेंग्रेंसेंयहवालनिसिदिन सूषीजांनिहैं
॥६२०॥अद्भुतरसदोहा॥मोहनमूरति स्या
मकोअतिअद्भुतगतिजोइ॥वसत्ति सुचित
अंतरतऊप्रतिविंवितजगहोइ॥टीका॥य
हअद्भुतरसभगवानकी मायकनावनेनु
भक्तकोंवचनु॥कवित्त॥ असोनओरति
हूपुरमेंछविजसीवानंदकैसोरमेंदेषी॥
नाहिविलोकिमनोजकोमूरतिकावरनें
अतिरूपविसेषी॥औरकहाकहोंसुंदर
स्यामकोअद्भुतरीतवरीअवरेषी॥अंत
राषीवसाइहियेकोमेंऊजगमेंप्रतिविं
वतदेषी॥६२१॥दोहा॥ तियकतकमनें
नीपदीविनुजिहभोंहकमांन॥चलचित
परांचुकतिनहिंवकविलोकनिवांन॥टी
का॥यहअद्भुतरससषीकोंवचनुनाइका
सोनाइककोवचननाइकासोनाइकाकोंव
चननाइकसोसषीहूसोंसंभवै॥कवित्त

कौसमयहैहरषिपदतैंउत्साहमुख्यहैं॥व
र्णिन॥प्रलैकेधुमडिघनआयेव्रजमंड
येमंडिकैअंबरधारिलायोहस्प्रतिकौं
निरषिविकलभयेगोपीग्वालगाइस
हूकेहियेमेंरह्योधीरजनरतिकौं॥नाहीस
मैंनसुधाकौलालुऐसौहालुदेषिहरबि
रैसोभयोव्रजकीविपतिकौं॥पान
राख्यौगिरवरपांनिपरइरकौनोसरवगर
बसुपतिकौं॥६२८॥अथरसदोहा॥क
लिनईश्वरकौकुवलकुलतियकलह
पैजरगलतमंजारदिनगसुकलौंसूकतिजा
इ॥दोहा॥यहभयरसुईश्वरकौअष्टनाम
कौंबचनुसषीसौंनायकासुकीया॥टीका
ईश्वरुचपलुचितउरमैंकुभाउधरिकहत
अनैसीबातयासौंदिनरातिहै॥कहैंकवि
हरसयहपरमसुसीलवालसकुचमन
मैमनुहीमुरझातिहै॥कहिनसकति
आंननसौंहियेकौभेउकुलतियकु

लहरातिहैं॥निकटविलावकेपयेरुपिंजरा
कोंजैसैंश्रैसेंयहबालनिसिदिन सूषीजातिहैं
॥६३०॥अद्भुतरसदोहा॥ मोहनमूरतिस्या
मकोअतिअद्भुतगतिजोइ॥वसतिसुचित
अंतरतऊप्रतिविंबितजगहोइ॥टीका॥य
हअद्भुतरसभगवानकीमायकनावर्ननु
भक्तकोवचनु॥कवित्त॥ अैसीनश्रोराति
हूपुरमेंहविजसीवानंदकेसीरमेंदषी॥
नाहिविलोकिमैनाजकोमूरतिकावरनें
अतिरूपविसषी॥औरकहाकहोंसुंदर
स्यामकोअद्भुतरीतपरीअवरषी॥अंत
रराषीवसाइहियेकोमेंऊजगमेप्रतिविं
बितदषी॥६३१॥दोहा॥ तियकतकमनै
तीपढीविनुजिहभौंहकमान॥चलचित
बेंझौचुकतिनहिंवंकविलोकनिवान॥टी
का॥यहअद्भुतरससषीकोवचनुनाइका
सोनाइककोवचननाइकासोनाइकाकोव
चननाइकसोंसषीहू ॥कवित्त

सीषीतूंकहांतेंअतिअदभुतगतियहतेरीक
मनैंतौवरनलनवन तिहैं॥ कैहैंकविकसमये
तांअगटविलोकियतिभ्रकुटीकमांनजिहि
बिनाहीलननितैं॥ तिनतैंनकटाूंडीठिकुटि
लकटाछिसरचुकतिनचल चितवरैकों॥
नहतिहैं॥ तेरी याविलोकनिकीनिरषिअनं
षीरीतिमेरीमतिअतिहितकोंतिगसनति
है॥६३२॥ कवित्त॥ द्रगउरझ तटूटंतकुटम
जुरतचतुरचितप्रीति॥ परतिगांठिदुरज
नहियैंदईनईयहरीति॥ दोहा॥ यहअद्भुत
रसदृष्टानुरागनाइकअथवानाइकाको
वचनसषीसों॥ कवित्त॥ लागीरहैंमनमैं
छिबसाधदईयहरीतिनईदुहुंघांतैं॥ लोच
नप्रीतमकीछविसोंउरमैंसवटूटैंकुटुंब
कौनातौं॥ कामकेंअतिचौंपकैंचाउंजु
रैंहियकेजसहेतुनहूनौं॥ वैरिनिकेउर
मैंपरैंगांठिअनोषीनिहारैंसनेहकौना
तौं॥६३३॥ दोहा॥ तोलषिमोमननजोल

॥कवित्त॥ ३

सोगतिकहीनजाति॥डोडीगाडगओतऊ
ओरहेदिनराति॥टीका॥यहअद्भुतरस
दृष्टानुरागनाइकाकोवचननाइकासों॥
[illegible]नेरनैनराजेंवृषभानकीकुवारि
सीओसोछविपुंजतिहपुरनमेनहतुहें॥
ामेओरअरभुतरीतिअवरेषितहिसु
म[illegible]सुमिरिप्रचिराजुउमहतुहें॥यकर
ननासोमापेंकुहतुवनेनक्योंहूताहिलषि
मेरोमनुजागतिलहतुहें॥तदपिअगम
आडोठीगाडगसोमनतऊदवोओनं
जोमउआइरहतुहें॥६३४॥दोहा॥याअ
नुरागीचित्तकीगतिसमुझेनहिकोइ॥ज्यों
ज्योंवूडस्यामरगत्योंत्योंउज्जलहोइ॥टीका॥
यहअद्भुतरसभक्तकोवचतुभसनाइक
कोवचनुसषीसोहोइतऊसभवे॥कवित्त
नेननुमारहीबुभिकेवहेनदकिसोरकी
ऊहिसुहाई॥प्राननिमेतऊसालतिहेक
विकसकहेसुधिआनभुलाई॥याअनु

है। रथग चित्तकौ कछु अवगुन से तिलहीनं
ही। तुम्हारे हिरगायनन मैं जो हीनो सं
देख्य लि उगन्नलनाई ॥३५॥ नोनतकु
॥ जैसकरि सुहितन रहरि वस्यो इहिथ
चितुनाई। विबयबचापरिहरिस्त्रमोन
कगुनगाई ॥ छिनौ ॥ यह्लोनरसभ
क्लनलनलो भयसंचार्यो ॥ कवित्त ॥
मानसोकथा विरस्यौ जाकौ थाकु
के मेकौ कहे लोप्रभाउर ॥ तितुकान्ती
नि हेलोककमेकलबलौ का उपैनव
उछिपे उपाउरत। ऐसकालकरि-
जेसु हितन रहौरिहलब कहे यहै थरहरिवि
उर ॥ तौरसना तिविषयबबकोतियरहरिसत
हौ चित्त नाउर दे यकंत हुनि गुनगाउर
॥ दोहा ॥ छिनौ ॥ दोहा ॥ ईरभजनतज
हि गुनविसारनकाज । अगरननि
निकट रहि चंगरगभूपाल ॥ दोहा ॥
जैकौ वचननवयाकौ गुनभिमातुहेतव

भुदूरिहैं अरु निरगुन तत्वहैं तहींतहीं प्रगय
यह रीति कलिकाल के राजान कों कहियें तो
तभवे॥कवित्त॥ छ सम कहें कवियक सोरी
तिप्र भू अरु चंगनिवाहतसो॥ ऊ॥ पीछें
दूरि हो दूरि भजें गुन को विस्तार करें जब को
ऊ॥ नीकें ही कोन लहें गुन मुक्त हे सो चलें
वाद्दि प्योंमतिका ऊ॥ निर्गुन ताप्रगटें ज
वहीं अति हीं निकट प्रगटें सब को ऊ॥६२॥
दोहा॥ ॥तो अनेक औगुन भरी चाहें याहि
वलाइ॥ जो पति संपति हू विना जदुपति रा
खें नाहि॥ टीका॥ यह परस्ताविक संप्रति वि
ना हारहति यह अंगि॥ कवित्त॥ औगुन पुंज
भरी अति चंचल याहि कहो जिय को अभि
लाखें॥ नंद किसोर कृपा करिकें यह सं
पति हू विनु जो पति राखें॥ याविनु काज कछू
न सरें सब को ऊ यहें नहें चों मतिभाखें॥ जो
नि यहें चित चाहत याहि उपाइनु केव हुत
पतपावें॥६३॥ दोहा॥ याभवपारावा

रकौंउलंघिपारकोजाइ॥ ती
नोगहैंबीचहींआइ॥ दीका
संसारकेपारह्वैवेकोंएका
कविलालोभमोहवासनअ
हांअसुरमनोजजाकोंविक
भवसागरुअपारविकरा
लकोउलंघिनिवहतुहे॥
जतनअनेककरिसवको
चहतुहें। लरुनीकोंछविब
रगहिराघातिप्रवलना
इदीदोहा॥ जगतुजरा
रिजाम्योंनांहि॥ ज्योंआवि
विनुदेषीजांहि॥ कविन॥
कोंवचनुनिर्वेदग्याईभ
जिक्योंतूभ्रमुभूल्योंभट
कियतुसवसुषनुकोंगा
रुचिहरिभजनपियूषछां
षमविषभोतुहे॥ जिनिसव

ली भांतिवहैप्रभु पैनजांन्यौं ऐसौं मोहकों
होतुहै। दषोंजिनिआंषिनुहीं सवदरसायौ
तिआंषिनुकोंकाहू भांतिवहैप्रभु पैनजां
योंऐसौंमोहकोंउदोतुहै। दषोंजिनिआंषि
नुहींसवदरसायौंतिनआंषिनुकोंकाहूभां
तिदेषिवौंनहोतुहै॥६४०॥दोहा॥ कोउका
रिकसैग्रहैकोउलाषहजार॥ मोसंपतिजदु
पतिसदांविपतिविदारनहार॥टीका॥ यह
संसारमुभक्तकौवचनु॥कवित्त॥ संग्रहुको
उकरौरिकरौरुभयौंकोउलछिलछिभगरें
कोउहजारकजोरिधरौवहुभांतिलहैमन
मेंमृदुभारौ॥कृपानिधिदीनकवंधुसुर
डुमदानिप्रतापउज्यारौ॥संपतिमेरेवहीज
दुपत्तिविपत्तिसदांजुविदारनहारौ॥६४१॥
दोहा॥ जातुजानुविनुहोतुहैंज्यौंचितमेंस
तोषु॥होतुहोतुजौहोइतौहोइघरीमेंमोषु॥
टीका॥यहपरस्तावकविकीउक्ति॥क
वित्त॥सुरतकै नसमेंजेसौंयाकौंम
सवोरतैसम्रिटिर

सो मनु सदा जो पैं रहै यं करस तोपै का है कौ
मतु फिरै चौरासी अनेक में ॥ संपत केजा त
तजैसैं याकौं चितु हो छुटैरि आवतु है सम
संतोष के विवेक में ॥ कहै कें चिक्र सम ऐसो
तहोत है इसोंप है इ अनायास हीं मुकति घ
यक में ॥ ६७४ ॥ दोहा ॥ यह व र यान हीं औ
र कौत कैरि याच है सो धि ॥ पा है न नाक्त च घ
जि हि कौ नें नाव प योधि ॥ टीका ॥ पहसां त
र स भक्त कौं वचन आपनें मन सों ॥ कवि
सा ग है अथाह भों र भारी वि करा लता है ज
पि म हा र है लें दो र घल हरि है ॥ दष न ऽ रा ऽ
ता रा ऽ है मति वार वार वा वार त ऊ न त रौ क
वौं वि ग रि है ॥ वां धौ जिनि सिंधु जा है दो न नु कें
वंधु जिन सों न पति कुंजर कौ कौन घर हरि
गैं प म हा राजधरें बिर द कौ लाज धरें सो ई सा
जि कें जि हा ज कौं निवा हि पा र करि हैं ॥ ६७४
॥ कवित्त ॥ पत वा री मा ला प करि औ र न क
छू उपा ऊ ॥ तरि संसार पयोधि कौं हरि नावें
करि नाऊ ॥ टीका ॥ यह सां त र सु भक्त कौं वच न
मन सों ॥ कवित्त ॥ जहां काम क्रोध म द दा रु न

तिमंगलहैसूरुतुनक्योंहूंपारपरिवेकोंदाऊ
र।।सोचभस्योसलिललहरितामेंलोभको
त्रसाविकरालभारीभौंरनुकोंभाऊरे।।कम
कहेंपस्योंतूंविकटभवसागरमेंअवकछू
औरनउपाउचित्तलाऊरो।मेरोंकलोमांनि
याहिसुषहीनरंगोंपलवारीकरमालाहरि
नावकरिनाऊरे।।६४४।।दोहा।। हरिकीजन
मसोंयहेंविनतीवारहजार।।जिहितिहिभांं
तिऽस्योरहें पर्योरहेंदरवार।।टीका।।यहसां
तिरसुभक्तकोंवचनभगवांनसों।।कवित्त
दीसतुकोउनेंऔरदयानिधितेरोईयेकभ
रासोंगहेंहों।।वेदपुराननिकोंसुनिसाषिहि
येंधरिहासउलासलहेंहों।जेंसोंहूंतेसेंउस्यों
ऊपस्योंदरवारमुरारितिहाररहेंहों।।६४५।।
दोहा।।मनमोहनसोंमोहकरितूंघनस्याम
सहोरि।।कुंजविहारीसोंविहरिगिरधारी
उरधारि।।टीका।।यहभक्तिकोंवचनमनसों
अरुमांनवतीनाइकासोंसषीकोंवचनक
हींअेंतोंसंभवें।।कवित्त।।मेरों मांनि
मनमोहनसोंमोहक

मकोंसम्हारिलैं॥ ब्रजवनकुंजकेविहारीसैं
विहारकरिगिरवरधारीसुषकारीउरधारि
लें॥ भूलिहूकैंचितववृथावादमेंस्वावैंम
तिकहैंकविकासयहसुमतिविचारिलैं॥
थिरनुरहैधनुजोबनभवनतनजोंति
ब्रजजीवनिसोंचोपतुरपारिलैं॥९४९॥ दो
हा॥ जपमालाछापातिलककसरैनयेकै
कामु॥ मनकाचैंनाचैंवृथासांचैंराचैंरामु
॥ टीका॥ यहपरस्वाविकजोंलोंमननमेंकचा
ईहैतोलोंऊपरकोंकामस्वांगनाहीआव
तुहै॥ कवित्त॥ टीकेमनोहरभालवनाइकैं
मालधरीउरमेंकिनिसोंलों॥ छापनिसोंत
नमंडितकेंअरुध्यानलगाइरहोंकिनिकों
लों॥ नाचतुनाचवृथाकविकासकचाई
रहीउरमैंभरितोलों॥ आजुकछूइहभेष
सरैनहिसांचरचीमतिनाहिनैंजोंलों॥९५०॥
दोहा॥ अपनेंअपनेंमतलगेवादिमचा
वतसोर॥ ज्योंत्योंसवकोंसेइवोएकैनंद
किसोर॥ दोहा॥ यहभक्तकोवचनअ

वि कौं अधीस्वर येक श्रीकृष्न जू हैं यह सिद्धांत टीका॥ जग मैं अपनैं अपनैं मत लागि करैं व कवाद वृथा भरमैं॥ सब कौं वह सर्वे नंद कौं नंदनु ब्यापकु है जु चराचर मैं॥ वर सौं न मिलै कि निनीरकहू सब आनि समानु है सागर मैं॥ जियसांच सौं काहू कौ सबाकरांपर अ ऽ मिलै नटनागर मैं॥ ६६०॥ कवित्त॥ पाइल पांइ लगीरहे लगै अमोल कलाल॥ भोडरहू की भासिहै वेंदी भामिनि भाल॥ टीका॥ यह अन्योक्ति नीहै अरु धनु कहै पै वनौ चीठौर रहैगौ भलौ मान सुहै अरु लिधनु है लऊँ चैहौ रहैगौ॥ कवित्त॥ जो जिहिठौर के लाइक है तिहिकौं सब वासुतिहीयलु छहौ। दयौं निहारि सिगार के भेद मैं देषी यें बात प्रतछ्य है है॥ जद्यपि लाल अमोल लग्यौ तऊ दाव्व पाइ वहीं लगिरहौ। है वह भोडर को विंदुलौत ऊ भामिनि भाल ही पै छवि पै है॥ ६६१॥ दो हा॥ अन्यों तरयौ नाइ रह्यौ श्रुतिसेवत इक रंग॥ नाकवासु वसरल कातन्नि

केसंग॥टीका॥ यहपरस्त्राविकवचनुभ
त्का कोंप्रयोजनुयहइकरंगश्रुतिसवतुरहैं
सातस्योंनांहींअरुवेसरिजुकाहूकेसमा
नहीतिननाकवासुपायोकाकुधूनिकेहै
तेवेदकोंदोषहूरहीतुहैंश्रुतिकानहूकहीयै
तोसंभयो॥कवित्त॥संगलाग्योयकरंगश्रुति
हीकोंसवतभरासोंधरिधारिजियअसोंन
रनसोहें॥कहैकविक्रमतासोंसवकोंउ,कर
तुहैंअजहूलोंनसोंनांहींतस्योंनाहीरह्यो
प्रमकेअभावकोंइहांलोंअधिकाईजाकरि
तआईतिनहीपरमपदुगह्योंहें॥विमलसु
दारमुकतानिकेसंगवसिलसिनाककोंनि
वासुदव्योंवेसरिहूलह्योंहैं॥६५०॥दोहा॥अ
नियारेदीरघनयनकितीनतरुनिसमांन
वहचितवनिऔरेंकछुजिहिंवसहोतसुजांन॥
टीका॥यहपरस्त्राविकेअन्योक्तिहूंवनेंक
कविकीउक्तिसषीकोवचननाइकासों॥
कवित्त॥जगतमेंसवसोंकरतसवप्रीति
औपैंप्रीतिरीतिजांनतजेप्रीतिकेनिधांन

॥करतुसिंगाररुचिपचिसबकोऊपेंखि
ारकरिवेकेभेदभाउमेंविनानहेंा॥अनि
ारकूजिहीरहीरघडगनिवारीकेलीनतरु
नमहि मंडलमेंआनिहें॥प्रेमभरीवहचि
तवनिकछुओरहीहेंहांतवसिजाहिनिर
षतहींसुजानहें॥६५॥दोहा॥ ॥जोंचाहें
चरकनघटेंमेंलोंहोइनमित्त॥रजराजस
नधुवाइतोंनेहचीकनेंचित्त॥टीका॥यहप
रसाविकमित्रतामेंरजोगुननलावेंसुघर
हेंमित्रकोंवचनु॥कवित्त॥जगतमेंमरगी
सवहीतेंप्रीतियकसांचविनुकोऊताकों
लसहूनदरसें॥यहींहेंजतनुकविकेस्मय
केपालिवेकोंमानोंमतिदाषुजोंतूंआंषि
नुहूंदेंसें॥जोंपेंनेहचीकनेंहीयेंकीयकर
सराष्योंचाहेंतुचटकउजराईप्रतिसरसें
तोंपेंकाहूंभांतियाहिमालोंमतिकरेंमी
तअंसेंराषिजेसेंरजराजसुनपरसें॥६५
दोहा॥जोंसिरधरमहिमांमहीलहिप

तिराजाराइ ॥ प्रगटतजउताअपनीयेंमु
मुकहुपहिरीयतुपांइ ॥ दोहा ॥ यहअने
कि जोअछोमानसुहैं भलेआदरलाइक
तिहिनिंदकरसौंराषैंतहांकहीये ॥ कवि
जोबहुभांतिजतनकरलैंबहुभांतिरच्यौ
अतिहीछबिछाई ॥ जाकीजगमगहोति
प्रभा मतिनाइलषैंसबकीललचाई ॥ ज
दधरैंप्रभूपतुकीमहिमासबहींविधिसें
सरसाई ॥ तामुकटैंपगमेंपहिरैंप्रगटैं
वबाहीकौमूरषताई ॥ ६५३ ॥ दोहा ॥ तुम
तिजौनेंमुकतईदियैंकपटचितकोत्यिजै
गुनहीतौराषीयैंअौंबिनमांफअगाह ॥
दोहा ॥ यहपरस्तावकराजनीतिमेंस
मझैअरुनाइकाभेदमेंसषीकौवचननाइ
कासौं कितूयाइछांडेंमतिअौंबिनमेंरा
षिकैवित्ता ॥ मुकतहीमानीये ॥ नदइतौंक
पटचितकौ टिकैंतजछाडिवौंनअमिला
षियो ॥ कीजीयेंहमारोंकह्योदीजीयेनजान

कहूं वारवार वात समझाई यहै भाषियो॥ क
हें कविक्रम पहीकहत सयानें सव देषें
राजनीति हू के ग्रंथनि में साषियें जांनियें
जो गुन हीतो श्री निये श्रो रऊ नीके हैं ग्र
गार करि आंषिनु में राषियें॥ छ्पध॥ दोहा
दुचितें चित हलति न चलति हसति न झुक
ति विचारि॥ लषत चित्र पिऊ लषि चितेर
हीचित्र में नारि॥ टीका॥ यह नाइका नाइ
ककौ चित्र सुषत देषि चकित ह्वै रही है सुस
षी सषी सों कहति है॥ कवित्त॥ ठाढी ठगी
सी हलें न चलें जियसो चगहें वहु भांतिवि
चारति॥ मेरी ई हैं किधों आन वधू कौ यहै नि
रधार हियें निरधारति॥ यों चितमें दुचित
ई गहें न हसै न झुकें सुन ग्रंषन टारति॥ चित्र
विलोकति ज्यों अवलोकि रही त्रियचित्र लि
षीसी निहारति॥ छपय॥ दोहा॥ दहलग्यो
ढिग गेहपति तऊ नेह निरवाहि॥ नीची श्र
षियनुहीं इतें गई कनषीय तुचा     ८३

यहनोइकापरकीयाकीचेष्टानाइकुसबी
सोंकहतुहैं॥कवित्त॥मोपैंकछूकहतैंनग
लेचितचातुरीजेसोविहरिगईहै॥मैंजे
वतैंनिरषीतवतैंउरमैंनकेसाइकमारि
गईहै॥पासजरूपतिरहतनप्यातरूरीति
सनेहकीपारिगईहै॥मोचीयेंआंषिनिसैं
इहिआरकनोषीचितौंनिनिहारिगईहै॥ध
पद॥दोहा॥तौंलगिमनयासदनमेंहरी
आवैंकिहिवाट॥विकटजटेजौंलौंनि
पटषुरैंनकपटकपाट॥टीका॥यहसांत
रसभक्तकोंवचनुमनसों॥कवित्त॥सरल
सुभाउगहिसंतनुसंगरहिसंगहिधरमु
लागिभगतकेघाटरे॥छांडिओटपाइं
नगाइकरूनामरकेयहैसमुझाइतौंसों
कहतनिराटरे॥कहैंकविकमतुहिदृषि
धोंविचारिमनमंदिरमैंह्रितौलौंआवैं
किहिवाटरे॥जटहेंविकटव्रथावादकैं
जंजीरनुसोंजौंलौंयेषुरतनाहिकपटके

सर फविचारि सुषमां निहियें कनदेवी स
षांव हुथुरह थीजानिकें ॥ करैकविक्रमव
कोंसपअवलो किवकोंलोभलषिमांगन
जगतुला षों आनिकें ॥ ६५ दोहा ॥ सवे
सुहाई लगनसवै सुहायेंभम ॥ गोरमुषवदे
लसें अरुनपीतसितस्याम ॥ टीका ॥ यहअ
न्यानिकाहृदैरकोंप्रभाउजोआउन्नापतह
ऽसोआछोईलागे ॥ कवित ॥ नीककेंसंग
लीकोऊनीकोंलगेंयहकातप्रतछविनिहारी
डारसुहायेंचसंतेंसुहायेंलगेंमवहीउमं
छविभारी ॥ केसोंवढावतिमाइहियेंनवन
गरिकेमुषव्याहमेंगारी ॥ गोरेलिलाटलं
सेंविंदुलोसितरागोहरीपियरीअरुकारी
॥ ६६ ॥ दोहा ॥ सीतललरूलसुवासकोघ
नमहिमामूरु ॥ पीनसवारेंज्योंतज्योंसो
जानिकपूरु ॥ टीका ॥ यहअन्योक्तिकोउ
छगुनीहेभलेमांनसुहेंअरुकाहूकूरनें
कोंमत्कारनकीयोंनहींकहीयों ॥ कवि

ोसवभांतिरच्योगरुवोविधिताकोवढेंज
तैसोईतोरा॥कसमकहैंदिनुज्ञानेंग्रजा
नेंकपेंवहग्राधुलहैंनहिथोरा॥पीनसरो
नतेंकाहूएकपूलनेंछाओकपूरच्योजोनि
केसोरा॥सीतलताईसुगंधघटेयहकोा
ऊकरेंजियमेंजिनिभोरा॥ ६६१॥टीका
॥ ॥केसेछाटेनरनतेंसरतवडिनुकोकामु
॥सम्मोदमामोजातुक्योंकहिचूकाकेवायु
टीका॥यहपरस्ताविकछाटतेंवडकोगरज
नसरेंकविकोउक्ति॥कवित्त ॥जाकोजितो
जगदीसरच्योवलुताकेफवेंसिरतेंतोईभा
रो॥वातविचारियहेंग्रपनेजियकोऊव्र
थामतिसावविचारो॥छोटतेकोमुवडो
नसरेंवहकेतोउसाहसुकेंपचिहारो॥को
टिकरोपरचूहाकेचामसोंकोहमडोन
हिजातुनगारो॥६६२॥दोहा॥संपतिके
समुदसनरनवतिडुहुनउकवानि॥विभ
वसतुरकुचनीवनरनरमविभोकी
नि॥टीका॥यहपरस्ता

क्ति॥ कवित्त॥ केसव औ सुदेस नर र
कर सकहै कवि कैसव गहै यक सीयें वांनि
औ सौं वद चारि लहैं सौ ही सौं नवतदाउस
कलप्रवीन यह वात उर आंनिहैं॥ केसव
हैं सुगम गाध रहो लगि को सैं हू कोऊ न पावतु
थाहैं॥ मेरु तें ऊंचें रसा पनु कौ च ह प्रेम समु
द्र अगार सु हैं॥ ६६५॥ दोहा॥ संगति दोषु
लगे सबनु कहे जि सांचे बैन॥ कुटिल वंक
भुव संग भये कुटिल वंक गति नैंन॥ टीका
यह परस्ताविक संग कौ दोषु लगे यह द्रष्टां
त कवि कौ उक्ति॥ कवित्त॥ औरत जु सं
संग रहैं जु गहैं सु भली विधि आदि वहै हो
संगति दोषु लगे सब कौ विधि ये है यह प्र
सिद्ध नादि सही है॥ केसव कहैं जग मैं यह
बात प्रसिद्ध प्रवीन निसंग चली है॥ वंक
भ्रकुटि है निकौ संगु पाइ कैं नैंननि हू गति वं
कहि लिहे॥ दोहा॥ संगति सुमति न पावहीं
परे कुमति के धंध॥ राष हु मेलि कपूर मैं हीं
ग न होइ सुगंध॥ टीका॥ यह परस्ताविक

आदुरबुद्धिके घरमें परसोंताकोंसंगतिमेंसुबु
द्धिनाहीहैतिनाकोंदृष्टांतकविकीउक्ति।।क
वित्त।।जोगुन गाहै कुलहूतौगुनगहैजोवाइ
सौगुनसिषाइयेंतौ औगुन केहाकरौ।। लोक
लीकलोपैयेकपापहीकीपीकजाइहैठीक
वतायकोंनाहिंचीकनेरहाकरौ।। ल्याजन
कहैकोएकीनकीनहिटकीनकटेकीओर
सुनौयेघावदियेमहाकरौ।।संगतिमसंग
तेंबुराकूबुरोभलोहोइदेवीवेसेंवाअसं
गतकोंसंगतिकहाकरौ।।६६७।।दोहा।। ब
ढतबढतसंपतसलिलमनसरोजबढि
जाइ।।घटतघटतपुनिफिरघटैबरुस
मूलकुम्हिलाइ।।टीका।। यहपरस्ताविक
कविकीउक्ति।।कवित्त।।सदनसरोवरमें
सुषकीहिलोरनिसोंसंपतिसलिलज्योंहि
ज्योंहिंसरसातुहैं।यहतौप्रगटसबुजग
तवषाननुहैंमनुहैसरोजज्योंहिंज्योंहिं
अधिकातुहैं।।औवम्हानिपरेंकोउआ
रीनि
नउभईनतव

घटतुजातुहैं। कहैकैविकअवहैकमल
सुवदनोकौहूपैनघटतुसमूलकुभिला
६६२॥ दोहा॥ सबैसमैसुंदरसबैरूपकुरूप
नकोइ॥ मनकीरुचिजेतीजितैतितैतिती
रुचिहोइ॥ टीका॥ यहपरस्ताविककवि
कीउक्तिनाइकाभेदमैसखीकोवचनना
इकासो॥ कवित्त॥ सुंदररूपकहौकिहिकौम
हैजोअपनेचितमेंलहिआवै। जोचित्तमा
नकुरूपचुभ्योतौवहैउरकोअतिभाउब
ढावै॥ होतसमैईसमैसबसुंदररूपकुरू
पनकोउलषावे। जाकौजितौजिहिठौर
बहैसखिसोतितिहिठौरतितौरुचिपावै॥ ६६
दोहा॥ मृदुचरणयैंहूरहेपरसौपीठिकचभा
रगरैपरिराषिबोलऊहियेपरहारु॥
टीका॥ परस्ताविककविकीउक्ति॥ कवित्त
॥ काहूकेमुंडचढेरहीयेनयहैगहियेंवि
नमेंचतुराई॥ नीकौमनतौरहीयेंजोगरैं
परितोलनहियेंअधिकेगरुवाई॥ मृदुच

परे रहैं पाछैं कि वेधनि कौ मति के सनि पाई
रो रह्यौ जो गरै ऊपरें तौ विहार करैं [illegible] वियो
[illegible]ैं ॥६७०॥दोहा॥ भौंवरि अन भौंवर
िव कवाउ ॥ अपनी अपनी टव
[illegible] ॥टीका॥ यह परकीय
ककवि कौ उक्ति ॥ कवित्त ॥ कहु [illegible]
हू भलौ लगै खोटी परी जिय [illegible] आ
वनु क्यौं न करौ वकवादु अनाक [illegible]
[illegible] ओर तिन्ना को पन्यो जो सुभा
उ वहै निवहै निवहै जग जो ऊ ॥ आपनी टव
कौ सिद्ध सवादु [illegible] नाक [illegible]
ऊ ॥६७१॥ दोहा ॥ जेती में पति [illegible]
ते तौ श्रुमति जार ॥ [illegible]
ग [illegible] न करार ॥ टीका ॥ यह परकीय
क [illegible] पन के [illegible] तौ में [illegible]
न ता ता को [illegible]
कौ न [illegible]
सं पनि [illegible]

लोकियें सुमति को सरसाई ॥ ताहि निहारिव
च हियें कछु बात यहै कवि के जियआई ॥ जै
दुराज वढें तिय के उर त्यों त्यों गहै अति ही व
नाई ॥ ६७२ ॥ दोहा ॥ ॥ पिय पविछुरन कौ
दुसह रष जात ष्यों सार ॥ दुरजोधन लौं दे
तित जनमोनकौहि वार ॥ टीका ॥ यह परस्त्र
हर्ष दुष्य दोऊ यक क न्नक कवि की उक्ति नाइका भ
में सषी को वचन सषी सों ॥ कवित्त ॥ ते
लज्यो मन भांवन सोच सिवो ससुरारि
जी में सुहानो ॥ पीहर ते कोउ आयो चलाव
नाहि समें सुनि त्यों अकुलानो ॥ ष्यों विधु
दुषहातु मलासुष भाइक को चित सोच सम
नो ॥ प्रातको पंकज भांति यको मुष फूलो
कछू कुकछू कुमिलानो ॥ ६७३ ॥ दोहा ॥ घ
र घर डोलतु दीन है जनजन जाचतु जाइ ॥
दियें लोभ चसमा चषनु लघु पुनि वडौ ल
षै ॥ टीका ॥ यह लोभ की अधिकाई पर स
विक कवि की उक्ति ॥ कवित्त ॥ छोर रहीं तोरघ
घोतु फिरै लघु ताजित हौं तित आपु प्रकासै

मासु ॥ टीका ॥ यह परस्ताविक सखी कौव
चन नाइका सों ॥ कवित्त ॥ आपनी गौं सब
कोऊ विचारतु भेद कछू यह पायो हैं नैंहूं ॥ ले
इ गो पाछें परे पछिलो थोरी यातें कलें समुझ
इ कैं मैं हूं ॥ भूलि तिया वहि नापुनी कें हित
कै तन फेरि मिलें सपनें हूं ॥ कै सेहरा ये पंची
न के धोसु वा मासु अछूतो वचे नहिं कोऊ
॥ दोहा ॥ गुनी गुनी सब कोऊ कहै
निगुनी गुनी न होतु ॥ सुन्यौ कहूं तरु अरक
तें अरक समान उदोतु ॥ टीका ॥ यह पर
स्ताविक है कछू नाहिं और सब कों वासों क
हनो है इलहों कहीये कवि की उक्ति ॥ कवित्त
विनु करतूति हू टीपद की लहीतो बहू नीवी
नल गति उपहास सबै पाथियतु है ॥ गुनी गुनी स
ब कों तु कहतु पुकारि कहूं निगुनी गुनी न गु
न मांझ लेषीयतु है ॥ जगत विदित जासौं
मीठो कलीयतु सोई निपट विषमु विष अ
र षियतु है ॥ जे ऊ पेड आक कों कहावतु अ

कुतऊ अरकस मांनकौ अरकद्दपीय तु हैं
७१॥दोहा॥ मीतन नीत गलीत कै जै धं
गियें धन जोरि॥ षांयें षरचें जो जुरें तौ जोरीयें
करोरि॥टीका॥ यह परस्त्री विकै संमहुं
कै धन जोरें तो उचित नाही यातें षाइवाय
किवो उचित हैं॥कविजो पंगलीत भ
ईं जुरें धन तौ वह जोरिवो काहू न भावें॥
॥उसुनें सुस भीत कें भाजन कौ नगमें अ
तिसें मकरावो॥मीत मनों जियमें धरि कें य
ह जो मिकेरारि लो जो वनि आवो॥आयें प्यि
यस्तें गुज रंकहू जो अति मोदु हियें उमगा
वें॥६७८॥दोहा॥॥जद्यपि सुंदर सुघर कौ
सगुनौ दुकदहु॥तऊ प्रकासु करें तितौ
भरीवें जितो सनेहु॥कवित्त यह परस्त्री
विकै अरु नाइकाभेदमें सपीको वचनु
नाइका कितरो सुंदर तनु हे गुन सहित
हे पनि जात यतु है अरु तनाइका मांस घी
सां समभवे॥कवित्त जद्यपि चारुता
[illegible]

कसकहैं मंडितकैं गुनजो तिजगाउधरों
निसोऊ॥ है यह बात प्रसिद्ध सवै जगय
सोरीति निवाहत हाऊ॥ नै हुं भरविनु दी
कहुं प्रकासु करैं न कि लोकरों काऊ॥ ६
दोहा॥ और परषों कोर कै तुही विलोकि
चारि॥ किहि नर किहि सरराषि वै षर
परि[illegible]रि॥ यह परस्वाविक संसार
र पै अतिबढै तेंमद छुटें कवि की उक्ति॥
चिन॥ कै तें भय न रहै तें भयसरजाति
छुगनना हि भाषी॥ ज्यों त्यों बढै अनुमा
गहें मरजाद रहें तब ही लगि पाषी॥ कौन
कौं तुं परषों करैं परमान कहा परतछ कौ
साषी॥ पै अतिहीं बढवारि भयें अपनी प
चारि कहैं किहि राषी॥ ६८०॥ दोहा॥ पि
य मन रुचि हैं बो कठिन तन रुचि होत सि
गार॥ लाष करों आंषि नबढै बढै यै
र॥ टीका॥ यह परस्वाविक नाइका कौ
चन सषी सों सौतिकौ सिंगार देषिया कौ
हूं भयो सु ईर्षा सों कहति हैं अरु सषी या

वत्तकोभ्रमुनिवारनकरेतोसंभवें ॥कवि
॥ देखोंकुंजसदन विलोकतुहेंतुवमग
तेंरोंनामुमोहनरटतवारवारहीं॥ऊधि
लमिलिमांनिरगरलीअलीमे
वतिकहारहीं॥पि
केकठिनअरुतनतु
सरसतिसाजेहूंसिंगारहीं॥कहेंकवि
कभकीजेलाषकुंजतनतऊलोचनन
ढोहेंअवढेयारहीं॥६८१॥दोहा
नोचाहियेकुलसरहेंगहेंगेंदकोपात॥ज्यों
पांमाथेमारियतत्योंत्योंऊचेहोत॥टी
॥यहपरस्तुाविककविकीउक्ति॥क
॥जनमतेंकवहूंनभलाईसोंभेट
नमेंकोटिकधिकाराधारियत
।सहजसुभाउपरकाजलेंविगारिडारें
नोंगुनगहनगुनपुंजटरीयतहें॥नीच
रयतेयोंहियमेंकुलसेंईरहेंगेंदकेसुभा
गहेंयोनिहारियतहें॥जिनहींनिचाईदे
तेनहींदुरकिजांहिंऊचे

॥३२२॥

ज्यों माथें मारियतु हैं॥ ६८२॥ दोहा॥
ओलन को ऊकरौं परें प्रकृति हि वीचु॥
लवलन जल ऊंचो चढ़ें अंत कीनी चको॥
चु॥ टीका॥ यह अन्योक्ति जाकों सु
नीच होइ ताकी वड़वारी होइ पें सुभा
न छूटें कवि की उक्ति॥ कवित्त॥ और तें
सों सुभाउ पर्यो वह और प्रकारन के
ऊहें हैं॥ कोरिक क्यों न उपाउ पाइ क
विक्रम कहें निरधार यहें हैं॥ सो जग में
खियें परत छ करों जल जंत्र लिते निह
कतो ऊंचो चढ़ें नलन केवल नीरत
हु रिनीचो ई आहें॥ ६८३॥ दोहा॥ जाके
त येक हू जग कों साइन कोइ॥ सो निद
फूलें फलें आकु रहें होंहोइ॥ टीका॥ य
अन्योक्ति वाके धन वारि वहुत है अरु ल
हू येक हू के धनु को मुनाहि आवनुत हां क
ये॥ कवित्त॥ ज्ञान हन काहू के चेठि वे जोग न
छौरह अचे को ऊ पेंडु भरें॥ फूलनु तें फल
फलितें जग में नहि काहू कों काज सरें॥

नुऔरैं भूलि भ्रमै उहि और पंखरून को ऊवि
नुं हत्यौ यह औकनि काम निरोध
विकुफूलै फरै ॥६८४॥ दोहा ॥ जौं न्हन
मुवहै कियें जु जगतन केतु ॥ होतु उ
सिकौं भयौ मानौं सखिहरि सतु राधिका
न्यौं दनौवर्नेनु वियोगी कौं वचन कवि की
॥कवित्त॥ पूरि रह्यौ अध ऊरध मैं धर
लौं। जि हिंदु कुठ्यो है। जौ हीं विलो
वियोगी ड रैं अनुरागिनि कौं मनु मोउ म
है। होइ न जौं न्हवरैत मुहै हजानैं सबै
ग छाइ लयौ है ॥ होलउदोन लल्यो मनि
गहि संक मनौ तनु सेतु भयौ है ॥६८५
॥चटकन छाघरत हमसजन नेहु ग
र॥ फीकौं परैं न वर फटैं रंग्यौ चाल रंग
र॥टीका॥ यह परस्ताविक कवि की उक्ति
॥ सज्जन जे जगदीस रचे तिनकौं
कवौं निसदां निवटैं ॥ सीलसुभाउ गहैं
है जैं अनुराग समुद्र हियें उ

रंसुबरोंगहरोंउनह्रकेघटेंसुनकेंाह्रध
चौलकेरंगनिचौलरग्योसुनिफीकोंप
फटेईफटें॥ ६८६॥दोहा॥ कनकक
सोंगुनोंमादकताअधिकाइ॥वहषा
रातुहेंवकृपायेंबोराइ॥टीका॥ यहप
स्ताविककविकीउक्ति॥कवित्त॥कन
धतूरोंसोंनोंदोऊयकहावतहेसोंनकों
तूरतेंप्रभाउरसतुहें॥कहेंकविकमव
चाहतुनकोंईयाहिनिरषनिरषजोईग्री
नरसतुहें॥ सोंनोंमोंहसोंगुनोंधतूरे
सरसमदुयहतोंप्रतछसवकोंउदा
तुहें॥वाहिजदबाइतवबोंराहीप्रका
हाइतुवावरोंतुरतयाहिजोईपरसतुहें
६८७॥दोहा॥ इकभीजेचहलेपरवूं
हजार॥कितनऔगुनजगकरतिवें
चढतीवार॥टीका॥यहपरस्ताविक
विकीउक्तिअन्योक्तिहसंभवें॥कवि
यकपरेनेफसेचहलेइकभीजिगय

रिगयहै।। यकवहैं तिनकोनल्नहोसु
थकनधीरज्ञेछ्राऽदयेहैं वार दईपत
ने ज्ञाद विलोकिकिनभयभीतिभयेऽ
मनदीचढतीवरीयांजगऔगुनकी
तकनयेहै।।६८८ सुषसा
नीसवनिसामनसोषऽक्रमाथ मं
ामेलिगहैं सुछिनुहाथछोऽहाथ प
माविककविकीउक्तिनाऽकोभःमय
कियाकोहाथस्परसकोसुषमांम्योंना
मोराचिवसहीवीनीसषीसर्वामाक
हे कवित्त रैनवितीतभःमिगरीञ्र
नचाऽचढचितपैनञ्रहूटे दोउनकेम
गुदचढञ्रभिलाषनुकेडगवधनबूट
नीमनोमिलिकैऽकसाथ यांवहुभां
लेतहियसुषलूटे मंकामसमनलछेऽ
रासुहाथनेहाथछिनानहिछूटे
जौनजुगतिपियमिलनको
रमुक्तिमुहदीन लोलहियमगमज
नाधरकनबकहकीन ५८८

स्तात्विक अनुरागी को वचन ॥ कवित्त ॥ बो
रनी कों जहां मिलिबो है पी को मीत यहै
लोक में रजो को अवदातु है ॥ पायो जो
ति पर हर स्यों न ज्ञान प्यारो सरस्यों अ
नुभव द्यों न सुहातु है ॥ कहत न बने नको
तना अनेक भांति जाने भांति भांति नु
वासु अधिकातु है ॥ रहिवो वनै ज्यों मन
मन सों मिले तो वेन रकनि वासु हुते मह
सकात है ॥ ६८० ॥ दोहा ॥ गदरचना
नी अलक चित वनि भौह कमांन ॥ आ
काई की वद तरुनि तुरंगम तांन ॥ ठौर
यह परस्तात्विक कवि की उक्ति ॥ कवि
गद कों वनाउ वाको हाइ त्यों वजाई पावे
थनि मे वात यह वरनी मंमान की ॥ श्री
काई दवी यनि काई की व काई तें अलक
तो हि भौं ह्रूवरनी कमांन की ॥ कहैं कवि
अरी ति जानत प्रवीन त्यों हि तरुनी की
क की तुरंगम की तांन की ॥ वाक ही तें पा
की केवा सकी वदनु मोलु वा को रजप

रतिकृपांनकी॥६८१॥दोहा॥वसैवु
रैजासुतनताहीकोंसनमानु॥भलौभ
लौकरछांडीयेंवाटग्रहजपखनु॥टीका
परस्ताविककविकीउक्ति॥कवित्त॥
वुराईवसैकछुसोजगमेंस
नमांनहिपावै॥वाहीकोंजोमेंसवेंडरुमां
नदेवोंदुनीमैंप्रतछमभावो॥जोतिगी
मरभाषेभलोतोभलेंहीभलेंकहिकै
दरावै॥जोमेंवहेंग्रहपोटेपुनेंतवदानु
करेंग्रहजापुकरावै॥६८२॥दोहा॥प
तिरतुआंगुनगुनवदतुमांनुमांहकोंसि
तु॥जातुकठिनव्हेंमनुमदोरवनीमनु
नवनीतु॥यहपरस्ताविककविकीउक्ति
भेदमैंसवीकोंवचनुनाइककी
वोसोंकिनाइककेऔगुनगिननाइ
काकोंमनकठिनहोतुहीहौ॥कवित्त॥
प्रेसपतिऔगुनतेंवदतहैमानजैसे
गुनसिसिरकोसीतुसरसातुहै

मांनकेभयेतेंतियकठिनातत्योंहींसी॥
केभयेतेनवनीतकठिनातुहै॥दोऊन
जोउत्प्रतिसुहेसुभाउतऊस्त्रैरेभां
कृतिकोभावदरसातुहै॥ कहैकवित्र
तिज्ञानतप्रवीनयहैविनुयततांईते
पघिलातुहै॥६६३॥दोहा॥ कहति
श्रुतिसमृतहूसवेपुरानमलोगु॥
वैनिकसकोपानकुराजारोगु॥टीका
(पर स्ला विककविकोउक्ति॥सवैया
यहश्रुतिस्त्रोहसकलपुरानलोगसुम
पुराननिमेसुनयहीहतहै॥कहै
यहजगतविदितवातजानतसक
सुमतिनिकेतहै॥रिपुराजारोगस्त्रोरुप
ककरतेयतोयकेवांनिगहेस्त्रेसवोध
मनतहै॥जहांदवेबलुलहाकरेनप्रम
जहांदवेनवलाइलेहोईदुखदतहै॥
दोहा॥ स्त्राछवेडनहोसकेलगेसत
गेन दीरघहोहिननेनकछुफारनि

।टीका॥ प्रत्येपरस्मा विक कविकी उक्ति
॥जेजगदोसरचेजि हि भाइवे तेसोई
घटैनवढैना॥धीरुहियेधरि मंडुगहै
पैवगुहसकोमालुलहैना॥ श्रीछसो
हूहोतवडेनवकाइ ऊंचाइगहैकिनि
॥फा गिनिहारो किनोकरिहारो पैदीर
हीं नकैसेहूनेंना॥ ६२५॥ दोहा॥
सहीसायोसमक्रि मूंहचुम्योढिगज्ञा
स्यो विस्योनो गलुगयोरहैगरैलपट
टीका॥ परस्माविकनाइकाको वचनु
कविन्त॥ कुवरकन्हाईसुपदाईच
का ढिरह्यो भिसुरूहोरिसकोवना
हित अधिकाईउमगि वढिआईजिय
सायोजानिमुहचूंम्योढिगजाइके॥
सभैदारितनुरंच कडघारिनेंननाइ
वाहगरैऊहिमुसिकाइके॥करूाकहै
नीहोतोहसिहूविसाईनकओरूनव
लपटाइकै॥ छंदं॥ दोहा॥
विससियलयिनयेडुनेन

२॥ ओंटै परप्रांननु हरत कांटैलौंत
३॥ टीका॥ यह परस्ताविक नाइका
नु सषी सों धुष्टनाइक कुवरकन्हाई
चतुराई वरियो है रहौ मिसु कूं ठहिर
नाइकें हित अधिकाई उमगि चढि
यमेतो सषी जाननि मुरझूंबरौं अधीर
को राजनीति के प्रसंग मै संभवै॥ कवि
ऊपर तो देषियत अधिक भलाई भरे
रके दुसह बुराई के निकेत है॥ कहै को
भावकु वालननवना इक हैं दारु पर जैसे
तैसें दुषद तहां दूषन है नयन ऊमानत
राधीनय भूलतन क्यों हूं जे विचारमे
नहे॥ कांटे कैसी रीति दुरजनन के सुभा
की आंटपरे पाइनु हूंलागि प्रांनलेत
दोहा॥ तंत्रीनाद कवित्त रस सरस रा
रतिरंग॥ अनवूडे वूडे तरे जे वूडे सवे
टीका॥ यह परस्ताविक कवि कीउ
कवित्त॥ तंत्री की मधुर धुनि ताल के
विधभेद राग जामै सुरनु की विविधत

उ॥ ईकप्रकासचारुच

वासुदेसजहां रसकौ उमंगहौ । च्यागकौ

।नवनागरीसौ हित्ति मिलि वै रतनौ

संगहौ । जगत में वृंदावन

तुवान्ह मैं तरे लैइ लैइ तवु । गत्रै

।ईरचाहु लता ॥ सवैसत का नाम

।३॥ गयोंगन्व गुनकपकौ

संगवेरंगा ३॥ [illegible] ॥ य [illegible] नि

स्यातिक सभववकवि कौइ नि ॥

[illegible] नि वै मेइ कौ

[illegible] म्पानवे कैन [illegible]

मृदनाक [illegible] मनदाँ

।नाइ [illegible]

गुमान [illegible]

[illegible]

।नानव [illegible]

[illegible]

सुनमोगुनकौंवहुभांतिवढावत॥होतु
हुसदंहुप्रजानकौंश्रौरसवेंसुभकाज
ञावत॥ क्रमसेकहैदीनानाथनिसां
एकहीमंडलमेंजवश्रावत॥दैषांप्रत
माचसकौंञ्जधियारोकितौजगमैस
वल॥३०॥दोहा॥ हौविनऊंसव
नुकेचरनकमलसिरुनाइ॥प्र
तिहुलोकमेंकविताजिनवहुभाइ॥
सोकवितादैभांतिहैश्रापरपोरष
नि॥ श्रापरसुरऋरुमुनिनकृतनर
पोरषमांनि॥१॥पोरषकविताबि
हेकविसवकहतवषांनि॥३थमदे
नीवहुरिप्राकृतिभाषाजानि॥३॥दे
भदतैहोतिसोभाषावहुतप्रकार॥
ननहैवहुसवनमेंग्वारपरीवहुस
॥४॥ब्रजभाषाभाषतसकलसुरव
समतुलै॥ताहिवषांनतसकलक
जानिमहारसभूल॥५॥ब्रजभाष
नीकविनुवहुविधिवुद्धविसाल॥

षनसत्तसईकरी विहारीदास॥६॥जैं
स्सरीतिकों समझ्यौंचाहैं सास।पढ़ैं
ारीसत्तसैं कविताकोंश्रंगारु॥ ७॥
यअस्तलौं अवनिपैं सवकैं याकीवा
ुन।तविहारीसतसैं सवहीकरतसु
॥८॥भांतिभांतिकेअरथयहुया
ढअगूढ॥जाइसुनैरसरीतिकोंमगु
ाकृतिअतिमूढ॥९॥ विविधनाइका
अरुअलंकारनृपनीति॥पढैंविहा
तत्तसैंजानैंसवकविरीति॥१०॥रघु
ोराजाप्रगटपुहमिधर्मअवतारु॥
क्रमनिधिजयसाहिरिपुदंडविहंड
ारु॥११॥सुकविविहारीदाससोंतिन
नौंअतिप्यार॥वहुतभांतिसनमान
रदीनौंलछिअपार॥१२॥राजाश्रीजैं
घकेंप्रगटतेजसमाजु॥रामसिंघ
गुनरामसमुनृपतिगरीवनिवाजु॥
३॥कृष्मसिंघतिनकेभ

कुमार॥ विक्रमसिंह तिनके भये राज
अवतार॥१४॥ महाराज विसुनेस कैं
धुरंधर धीर॥ प्रगट भयौ जयसाहि
सुमति सवाई वीर॥१५॥ प्रगट साह
कैं मंत्री मति सुष सारु॥ सागर गु
सील कौ नागर परम उदारु॥१६॥
मंत्र अषंड लष जग सोहतु जसु ताहि
राजा कौ मैं करि कृपा महाराज जय
॥१७॥ मन वच क्रम सांचो भगतु हरि
नि कौ दासु॥ बेद वचन निज धर्म कौं
कैं दृढ विस्वासु॥१८॥ छत्री कुल छित
भयै वैसी जग विष्यात॥ परडु बवैरीष
मंडन गुन अवदात॥१९॥ लालदास
तिलतित गुन प्रगट भये तिहि वंस॥
चंद तिनकैं भये जिनकौं जस अवतं
॥२०॥ महाराजु जिनिकैं भये जिनिकौं
सुजस अवदात॥ राइ पजावस पूत मनि उ
जौ तिनके तात॥२१॥ तिनि कैं प्रगटे तीन

वेकमबुद्धिनिदानं॥रछकब्रालनमाइ
नि पुनदानकिरवांन ॥२२॥राजाआय
सुजगविदितराइसिवदास॥लसतु
राइनदासजसुपूरनपहुमिप्रकास॥ २३॥
ोलाजुगलकिसोरकोरसकोहाइनिक
॥राजाआयामल्लकोताकवितासोहै
॥२४॥माथुरविप्रककारकुललखोक
नकविनाउ॥सेवकहैसवकविनुकोवस
ुमधुपुरीगांउ॥२५॥राजामलकविक्र
मपरदसोंकृपाकेढार॥भांतिभांतिवि
वदहरीहीनीदरवअपार॥२६॥येकदि
नाकविसोंनृपतिकहीकहीकोंजान॥
दोहदोहप्रतिकरोकविनबुद्धिअवदा
न॥२७॥पहिलेंतोमेरमनकुंजेसोहतो
विचार॥करोनाइकाभेदकोग्रंथबुद्धिअ
नुसार॥२८॥जेकोनेपूरवकविनुसरस
ग्रंथसुषदाइ॥तिनहिछांडिमेरकविन
कोपढिहैमनुलाइ॥२९॥जा

नो हिये कियो न ग्रंथ प्रकासु ॥ नृपकौ
सुपाइ कै हिय मैं भयो हुलासु ॥ ३० ॥
ल से दोहरा सु कवि बिहारीदास ॥ सक
ऊ तिन कौ पढ़ै गुनै सुनै स विलास ॥ ३१
ं भरी सो जानि मैं गह्यौं आसरौ आ
जा लेउ तु दोहानु संग दीनो कवित्त ल
॥ ३२ ॥ जु त्रिजु त्रि दोहानु की अच्छर जोर
वीन ॥ करे सात सै कवित्त मैं सी पास क
प्रवीन ॥ ३३ ॥ मैं अति ढीठो सो करी कों
कुल सरल सुभाउ ॥ भूल चूक कछु हो
लीजो समझि बनाउ ॥ ३४ ॥ संवत सत
आगर असी बरस रवि वार ॥ कातिक
दि तिथि चौथि गुनि भय कवित्त रसाल
॥ ३५ ॥ इति श्री बिहारी सतसैया दोहा
या कृष्ण कवि कृत कवित्त सहित सं
पूरनम् ॥ सुभं भवतु ॥ श्री रस्तु

देननहैचननरननहीनी
कुलकीलगनमोहेकी
॥१दोनो॥

फोटनाताभप्रनसोपश्रीहवाहींग
सावात भीलवलामक्षुः भि
पाछापुट ग०भुक इ सनीलवन
[illegible]

ना।ना।ऐका कु:ग्रा।य।ठ

पालाप:पावका।ठा।७४ता

ता।याका।थेपकसा।॰:तवप

लो।य।वा।को।कि:चा।ईका

कोरा।॰:देया।कवी।३॰कठदक

जे:४।पी।जके।तये।फरा।॰:

जउपयातफवी।त्रे:सवपी

वीजे।॰:ऋ।४॰ल।२दो।ये।पव

कोना:चा।द्।जभये।पसात

साल।ये।जा।या।जा।॰:८०८ मा

ठे२क।या।या।का।८७ मकी।वका

ज।गठा।गा।हका।कवी।वा।ठव

कपु:अवी।फका।॰:जाग्रवद:

नाही काकोबचनना ईको
पंथेककोबचनापथक
गसोरसमकोर. सुमकोसनेसे
सुनेकहेमनमोदनजुञ
तसदासुदबंदावनको: व
सतवेदसमोहीवेतेहबीन
नछोलेसाछेलेहमनक्रजेव
चलनको: जायकरके पोषब
रमेहेंत्र्यावनको सबवूजवास
नेकुं आनंदकरनको: धाय
कपथकेआयनाथेकासमी
करहिपाडीबगसोसधनीजु
नेवूसनको: सषी कौबचबू

सीतागमडाग : क्रावनसुन
हि मारगवीरतो कनकोनन
न्चावजयोमुषदरसनको :
गरके स्नानन को चोगनु
यो देन्चाव: श्रीतमके मीठे मीठे
ननसुननको : करनकोन्चा
जयोरूपरसको हरस नको।
ोचन्जयोबतियाकरनको :
धरनेन्चावबरसपानको न
रहनयोन्चावजयोनन नन
ाहनमीठनको : सबीकोव
ननाईकासु अनुसनको

चलेनहीजानग्रंगन्नाजेजात

स्वपुतकन्तगान जान्तसमस्वीनबानहे

नविनाडुगैकैतैवोनपदवनात सबग्य

नकोहंगकलुमानमयोजानहे

सुन्चलजानघ्र नलोन सोदमानहे

तैसोदसोंदषमेको हीयोद नानहे

नकहीनोहोवेमनमोदनेकोंरु

लीतेहीकमकमम सनेदद्दसात

नाडुीकाकोबन्चनसमीसोंकागकान

लोसुमदुरुहीनोंडीकबहुहीयकी

ल ग्रबहुदुरीकससंन्चीकरमा

दो नकहोबिजोगतैचनकुंउ

नडीगीयोरुपकीनीकाडुीवा

कहोनुबषानी डै। देषम

सामव

रहे विकल भइ लोगी पीछे नैन
ढुंढत बन बन पावै कुं: अनन्य कु
नि ऊन रवि द्रुम लेता न पुंछ अवीकों
देखो कहुं नंद के दुलारे कुं: सखी को
अगास दुतो जां को लगे है नेहें ही करीं
ष कें रंग दे के अदेखै कुं: फुलन मगं
गुन गाइं मन मोहन के बोलि सुषदें
जे आइ दिलो चन द मोर कुं: सखी के
बचन सखी सों नागरचना सही: प्रातम
यो अलसाल ३ जा मान ३ठे अंगना
छ बिलै छकेसे: दौ ३ ३ नी देस नैन
छवे देखि ढूं रस रीत पके से: जानि
अगास विलोचे प्रिया मन मोहन जु
३ न हो लहै केसे: प्रेम पगे कहुं चावोक
कहे जानकहु ३ जान पके से

दडोलदुहा॥मकआत्तोगंघडीमी
गडोचोदेसाथ:चीलाचलदीडोल
।रागनंगजीवराथ: चोपई:बल
विवेरचेग्रमोला: ररनजडी
षराती हीडोरा: चडेहीडोरपि
चनबजाव: नारीअमगीयेमक
गवै बचनतसीकोलषीप वूठोमन
गईमन: कीनन वरके सवढोब
स नकुंजवैनोनगये नुघवानग
ध्यनमीरनके मलवे कीकुरी
नागरके सरसाईषकी: हरेग्रा
ग्राजेसवानकचेनचढीनेते
ीयारीकेनीसरसावनेनेहकोग्रा
होदस्यनावेते भामनेनेपकनरी
नीकेरानीजोगीमेसवीवदेबा:
पई: जोगगानकरवेचमाच:

चह्रीपीयमलन लियमांही: सषी
वन्चनसर्षासों: नागद्रीमन: हैनी
जाहिमुषानकोहीठहीमलबीन्च
हरनतेनबिन्चारो मोदमाहा भैदे
मगोमननमोदननेकाउनुपमथां
षलकोकामनिसानोचलेहिइस
वकोंमकोंसीचरेबिशणहो: आनद
जनहिहरकठरस्यामकोकुजज
हिनीहावो: सषीकोबचनसषी
नागनुथमलाहकिबलकरकबि
रनिजमदरनआयेनहुकेरहु
हारकरबैकुउमनहे: नाथामनमो
नअनुपानमरहराकहुमनकी
बातकाहुसुनकहनहे: देषेवी

कुनकोपलकपनतकालेबिषमबियोग
स्याहुसकुसरुन्हि: ॥श्रापसमबानिनकु
बिोसरुननेमलेबेकीमनमनो
करहूँ: सषीबचनसषीसुन्यो॥७८॥ना
ंऊडसारंगकोवन पलकहोदीगये
नोटटसोहनबागजांहांसुपकाहो
नतांहो॥२८॥केमनमोहनतनवोम
ठिटरुनहीयकी: रंगभरे
म भरेउबदेपतकीमनमोह
चाकी॥ बासरुरनबीहाककन
तेकु जेनमवंसकजनौहाको
एीपटमजरीचौपईपटमंजरी
पजीपकान्हे

गरस जीन्हो सुमिर सने के लही
कुषाठो चीतै वदनमीन सुष्रगाडी
बरस हि नैन अमठेतें कनी: जनु
मीठेन के हाणी: हीत कोवही
बन्चन सु नीपै बदु न जोन केरजी
ननावे: मीनु मान नी वचनके मी
लेमही बीन अनु रपके पायाव सु
कोवचन सबीसी रागसो २० (??)
पिलन सपा नम सु अपे आधी सातप्र
मैकेलीय अमी जाकीकही अधीप
हीम: सेवन बदु अदुसुष ७पबेसे
जोरहि लेक लोले लोहि नडेनदे
सुनाकीम: लेटपटेपेन्व मनमीन
समानेन कहेली आकेव अमावने

ेञत्रपूनीम:कौ हांलोंनीहा
रिहे मोपरबीहारी ग्राजबान
: हारी मननवानीपरंवानोम:
ाचचनेस खीसोंरा गसोर ठमल
नचीसगरेब्रजम जीम बादरेल
ा लके ह्राय : नागरेवोमनमो
ागमसामुहलोतनचत्तमुसका
ानगयीछुट मोदनाये मनदो[illegible]
ेकनापबतमये मुठनमबीव
ीरुगेदलगाव नकेमस रु
ये :
माल वागोगाग मोचोपदापरम
न्त मालचानारी पीपसनेकनत्रस्पन्
चारी पीयकेहीमलनजारी बनतादी
लपलाही पीपहटकोप्रकारन हदेरी

नायिका कौ बचन सखि सौं राग नागे
रस ल्लन रिझानन के कानन खितान नाने।
ज रे प्रेम सानु सबन कुं साजरी : कौन जान
ध रूरी बिर मन मांहि काम उपराजवीऔ
उपराजवी : ग्राय कौन ब्रजसकरी मोहीं
कुं केसौ मनमोहन के मुख लगि गाजरी :
के स्मो जब सदाव प्यास काज लाजसुनस
सुंदर की बिंस बन बाजरि : रागमालकौं
गौरी गौ बासाज कलि पु मावस्वि रहि सुब : प
गलगि गुन कलि मालकौ सून बुब : चौप
मालकौ सरूप चतुर बिहानौ : कंचन
बाना बानी : बैठ मलपत्र लठी जाही चौंकी
टुरावत ग्राही : जौन के रूपन रंजा ही रंग
प काम सा साहै : गुकन बन सन बगाब
री जौं ही वतुकरा लेजा पावे पान पात वी
कर्तीय दुहा : पद बानी क त्रपदे षकार

सर्वंग: अबबरगुछव का मरसी मेकेकप
नाइका को बचन सखी सों राग सारंग:
लगाद्ध जमाईनी ग्रा रस रीत नहीं अपनें
मनमोहन के लि कला करे क नी जुगु
गमोहन के: नवनन स्वाप कछु सजनी:
नेदेषेन दिक देले: यदुलालसालागर ही
ह्य मलगो कव ह: नाइको को बचन
रागशामकल्ले: आजे आलि बौ दूदै ल
नमोहन जु सपनम तिहोवे: बानकनी
नेरी अनेके लि कलानके पुजउ घोरें जा
नेहों सुख सों तन सुमनसु सब ही सुष
पनी अकुलानेन द्विज बदेषु न्हौट
रोपारे: सखी को बचन नाइका सुं:
रा सखी तो वनदशरे ही बातन सुरहे
नडोरे बातन सु बातहे: पीपी परी जात
दे अकुलात बाकी हदे की बथा क
जाने ह चलन नमने मोहन नी हाके बग

रागगौड़ी चौपद्दि प्रमकी चौत्रशील्ि
से डि तिन लोक चहेबियक नकोडि
त्रनबागमगडि प्रेमसुरतरुपजाव
सुनें नादअगजुय जुला ने देषे नन
नौपटलजाने उ बिनट नांहांसरत
त्रमलजलमांनुरागनीर वीजत
सगेहेदनतें दिदेतफले नोसतोई
जपजापनुसो चौलोसावरोकुप
रेखीनां पगपोरहीनपोठो नांप
सो: धनआनंदसेत्रसुदुरबा
ऊसछतकेपुसकोनापनुसो
नेदकोचाहिबकोलेलुकहु
लीलेरीजडिब्रजआपनुसो
नादीकाकोबचेननाद्दीकसोमा
कौनकौकबनदेषैनीयारेफलो

हीकासहु जानकीयो है. सुंदरकण
रमोउपरजमन मोदन सोहीरी
प्रेमपग्रीवदेनीसबासुंर
रन मालकानकोने मग
आनन पुरनचंदसो आनन
चंकोर वहीसुलहे:

कारीवचन राग भट माल
कोवचन कवित लपीआदी
मकरामीपकहीनेनीआली
हाकेहुजानतेवे प्रीत मके
उकी ग्रहकी समारदेन देद
समारदेनपीटपटकीसमा
नसंमारबनमालकीसेरष्या

सोच्छ ॥ १० ॥ दो०॥ सा० सी
कोबचन लागवागेसबकोन
परीलेनेमुषपदबोवाबीजाभिया
मकेलानेहकोकहोलसवसा
है: ऋवमो ॥ व० ॥ ५१ ॥ मे॥
॥ ९॥ ११ ॥ १० ॥ व ॥ ४१ ॥
९:०८ ॥ कोपि ॥ की ॥ १२ ॥ ७४
काहीमाईजांननकोई
ननमाहीहै: सषीकोबचन
हीकासोंवागजुरचीसा राम
नीरजननचनेकचीरजडी
नवनदीहीयोकुलसावन
सुकीयेमनमोहनप्राजुकी
सांजकी रीतकोकुंजेमन
नी

प्रेमप्रायु कहुमनमोहन

वाजतमाहानं जी ...

लागीहिमनमोहनें कै वां

तोसबकीअंद ... वै

तनुमसपननन प्रेछ ... नन

लखिलीनी वी... ही

दईमनमाद ...

नीनादीकानें बसन

कहीसागजंगालेकीं ...

चं नलीहनन ... जव

तनुमनननकै नी ...

काजजीसास्दीयधरवे

सजीराजमलोजीसमोज

सेजनीलगैवही
कहरसजाऔवहैः
होलगमकजछुटवी
होजोसवानाहैः ना
काकोमच्चनणाहीकी
सोरठसाम मोहीग
पगनमोहनमेरी
रहीपैन १२
लोजकीसोकीहुवि
पैन्नेकलाहींक पी
परछुगरछवी:

स्रोनन सुजसकोःसु
नसको पवेत्र मनमोहन
ह्लोनतेवेसकोः
ननेपीयोदि पवेत्र पीव
रेतुपरसकोः रागसोरठ
नसषी सौं कोवि: वोठपर जबलौं
ननतो लौं नी गरतकीर कीप्रीः
नीसुरते नो नीके मन छांडीन
कुंजानबोभाकीः छीन प वीनीरे
स्रानन को छबे लेत प्रजानु
चंद जारी: नारीहर प्यांनत
गहीनोहि वारगनोब प्रांनकुल

देसेवीनदोछि॰ाकु १८ ।

लेवीसमवीयोगवीपाकु

सहत ९: ७त्राधलमबातन

रबोसहत ॥७८के मा ।।

ननमकरनह: सायप

वक्षाञरुनक़ोजा नुलाई:

प्रेसोकेलकराडी: सो

कुलकारीज ॥ को ना:

वीवसल७रु५ ।॰।।नी: ३। ।

चोरडुाडी: देपकु

८ १३: ५ क ०

वहे: १॰ ८ २ रका।